भारतीय मत दर्पण.

अर्थात्

हिन्दके तमाम धर्म्मोंका संग्रह

जिसको

राजेंद्रनाथ पंडित समस्त धर्म्मानुरागियो
के लिये

संग्रहकर छपाकर प्रकाशित किया.

ख्रिष्टाब्द १९०९ विक्रमाब्द १९६६

दोहा

कवहुं दिवस मह निबिडतम, कवहुं न प्रगट पतंग
उपजे विनसे ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग.

श्री सयाजी विजय प्रेस–वडोदरा.

राजेन्द्रनाथ पंडित उर्फे रामप्रपन्नाचार्यः



योही जन्मखोयो माया वादमे· बिगोयों कवहूं न सुख सोयो
यो विषही के वाटको । दयाधर्म कीनो नाहि हरिरंगभीनो नाहिं
धनको चीन्हो नाहि करि पुन्यपाठको । लोकमेन यस परलोक के
रस शुकतनु उरधारो पै खवैया भयो काठको । भणे " कविराज "
देहीको जनम पाय धोवी कोसो कुत्ता भयो घरको न घाटको ॥

चित्रशाळा प्रेस, पुणे

उपकार.

श्रीमान् महन्तं मथुरादासजी, आत्मारामदासजी श्री वैष्णव साधुसुधारिणी सभा, एवं श्रीरामकृष्ण पाठशालाके आनरेरी सचिव. मु. वड़ोदा.

इस पुस्तकके छपते शमय हमारे अभावमे वहुतहीं उपयोगी कार्य छोड़कर इसका संसोधनकर वहुतसी उपयोगी वावत संयुक्त कर जो परिश्रम लिया है इस कृपाके लिये सर्वदा हम आपके वहुतहीं कृतज्ञ है.

भवदीय.

राजेंद्र.

समर्पण.

परम उदार, गुण आगार, जगत विख्यात, गुणी-जन मंडली मंडन, पाखड मत खंडन, सज्जन जन रंजन, महान, योगेश्वर महात्मा पूज्य श्रीमाधवदासजी महाराज, की सेवामे स्थल मालसर, श्रीसत्यनारायण मंदिर अध्यक्ष,

आप श्रीकी उदारता परोपकार धर्मनिष्टा, दया, विद्याप्रेम, आदि गुणोंसे आकर्षित होकर और आपने साधु समाज, की उन्नतीका महान कार्य, आरंभ करके प्रथम वार्षिक अधिवेशनका अभ्यर्थना मडलका अध्यक्ष स्थान ग्रहण किया है इसके स्मरणार्थ यह लघु पुस्तक " भारतीय मत दर्पण " आपके कर कमलमे मै पूज्य भावसे, आपकी आज्ञा लिये विना, अर्पण करता हूं आशा हैकि, आपभी ग्रहण कर मुझे अनुग्राहित करेंगे.

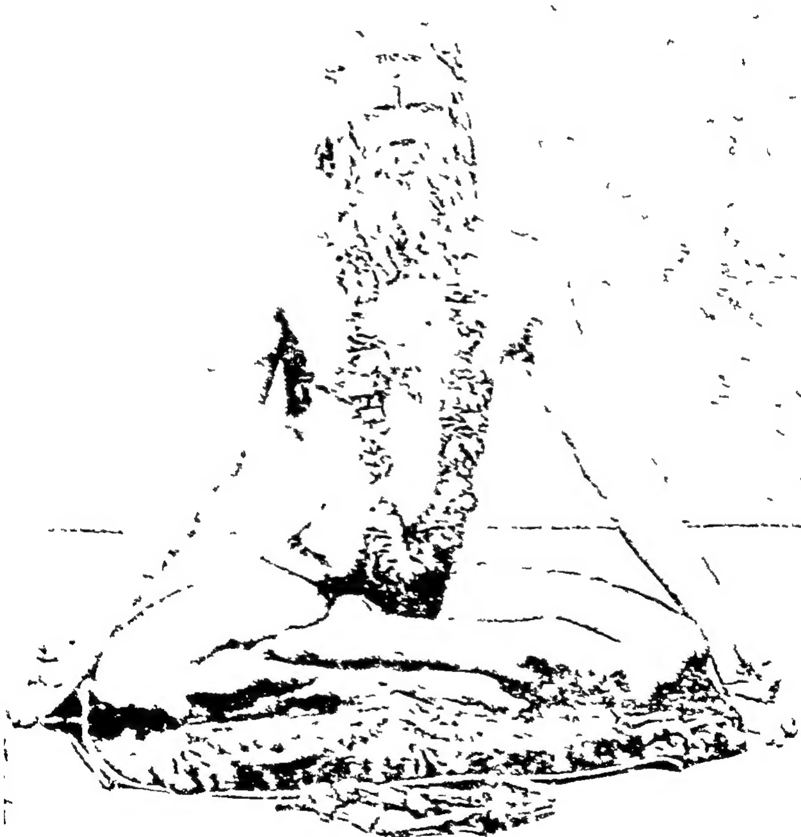
आपका कृपा कांक्षी.

राजेन्द्रनाथ पंडित उर्फ़ें रामप्रपन्नाचार्य्य.

श्री वैष्णव साधु सुधारिणी सभा प्र. अ. अभ्यर्थनामंडल के अध्यक्ष

योगेश्वर परमहंस श्री माधवदासजी.

(मालसर)



॥ भोगे रोगभयं सुखे क्षयभयं वित्तेच राज्ञो भयं ।
॥ विद्यायां कलिभीस्तपे करणभी रूपाद्भयं योषितः ॥
॥ इष्टे शोकभय रणे रिपुभय काये कृतान्ताद्भयं ।

श्रीनिगमान्त महा गुरुवेनमः

शनो मित्र शवरुणः शंनोभवत्वर्य्यमा
शन इन्द्रो वृहस्पतिः शंनो विष्णु रु रु क्रमः

यंशैवाः समुपास्यते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्ध बुद्ध मिती प्रमाण पटवः कर्तेति नैयायकः
अर्हत नित्यथ जैन शासन रत कर्मेति मी मांसकाः
सोयं वो विदधातु वांछित फलंत्रैलोक्य नाथो हरिः॥२॥

यस्माज्जातं जगत्सर्वं यस्मिन्नेव विलीयते,
येनेद धार्य ते चैव तस्मै ज्ञानात्मने नमः॥

प्रस्तावना.

भारत वर्षमे महाभारतके युद्ध पहिले, वर्णाश्रमादि "वैदिकधर्म" अच्छी तरहसे विद्यमान था, क्योंकी नरपतिगण धर्म निर्णयार्थ एक एक "परिषद् रखतेथे परन्तु कालकी बडी प्रबल महिमा है सूर्य प्रातःकाल उदय होकर मध्यानमे तपकर जिस तरह सन्ध्या समय, अस्त होते है वही दसा भारतकी हुई. जब धर्म मारतड अस्त हुये तब खद्योत गण रूपी अनेक मत चमकने लगे, जब भारत पर अन्य धर्मावलंबियोके पदार्पण हुये, तब "मारग सोइ जाकहं जो भावा" अनेक मत निकल पडे और मन माने कपोलकलपित भाषाकी पुस्तके लिखकर वेद पुराण शत शास्त्रोकी निन्दा करने लगे वे भाषाकी पुस्तकें वेदका कान काटनेको तयार हो गई तब "वेद पुराण" कंदरावोंका आश्रय लिया, (हरितभूमितृणशंकुलित समुझिपरेनाहिपथ, जिमिपाखड प्रचारसे, लुप्त भयेसद ग्रन्थ,)हमाकिसीकी निन्दा नहीं करते. परन्तु वेदादि शास्त्रोकी आज्ञाका मानना सपूर्ण आर्य्योंका परम धर्म है.

इस पुस्तकको लिखकर किसी मतवालेका. चित्त दुखानेका हमारा अभिप्राय नहीं है किन्तु एकही पुस्तकके अवलोकनसे, पृथवीके अधिकांश मतोका अनुभव

होजावे, येही हमारा उद्देश है जहांतक हो शका है हम, अच्छी तरहसे अनुभव कर मतोंके विषयमें लिखा है, परन्तु निभ्रांत एक ईश्वर है मनुष्यसें भूल होना स्वभाविक है फिर हम संस्कृत इग्रेजी, फारशीके पूर्ण विद्वान् नहीं है, कदाचित हमारे अनुभवमे या अनुभव कराने वालोके भूलसे कोई धर्म विरुद्ध या किसी मजहबके अयोग्य या उनमे रीती ना होवे और भूलसे आय गई होवे तो कोई धर्म्माधिकारी यदि कृपाकर हमे सूचित करेंगे तो हम सहर्ष यादि योग्य होगा तो दूसरे सम्करणमे ठीक करदेंगे, क्योंकी यह पुस्तक वेदकी श्रुति " नही है जो बदल नही शक्ती,

विशेष विनय यह हैकि पुस्तक अव लोकनके समय पाठक गण हंश वृत्ती धारण करेंगे.

जिन ग्रन्थोको तथा सिद्धान्तोको हम स्वयं मानते है, तथा अन्य हिन्दुवोंको मनानेका आग्रह करते है उनका नाम तथा कलियुगके भविष्य राजावोंकी सूचीभी लिखदीहै तथा वर्तमान राजावोकाभी वर्णन लिखा है यद्यपि यहूदी, क्रिश्चियन, पारशी, मुसलमान आदिकि मानिनीय पुस्तके भिन्न है जैसे यहूदियोंकि " इजील " पाराशियोकी " जिदवस्ता " मुसलमानोंकि " कुरान " और

"क्रिश्चियनोकि" बायबल. तथापि पारसी मुसलमानोके अतिरिक्त अंग्रेजी शासन होनेसे क्रिश्चियनो किभी कमी नहीं है इसीसे इनमतोकोभी दाखिल किया है. जहा तक हो सका है मतोकी बहुत तपास की गई है तथापि कोई मत भूलसे रहि गये होवे तो सूचना मिलनेसे दूसरे संस्करणमे ले लेंगे पहिले हमारा विचार मूल पुरुषोके चित्र रखनेका था परन्तु प्राप्त नही होनेसे रहि गया. पुस्तक छपते शमय द्रष्टी दोषसे कुछ अशुद्धिया होवे तो पाठक सुधारकर पढे कार्तिक शुद्ध १ अन्नकूट विक्रमाद्ब १९६९.

इस पुस्तकके संबन्धमे कुछ लिखना होवे या प्राप्त करना होवे तो इस पतेसे पत्र व्याहार करे.

मेनजर स्वदेशी सहकारी मंडली

लीमीटेडकी वखार.

वीसनगर (उत्तर गुजरात)

तथा

मालिक श्रीसयाजी स्वदेशी वखार

वीसनगर (उत्तर गुजरात)

अथवा

राजेन्द्रनाथ पंडित

श्यामसवाई मंदीर.

डभोई (दक्षण गुजरात)

अंतिम निवेदन,—यह हैकि हमको जो मत विषयक लेख जिस क्रमसे प्राप्त भये उसी क्रमसे, इस पुस्तकमे लिखा है इसमे आगे पीछे होनेका विचार छोड़ अपने मतके अवलोकनसे लाभ उठावे येही प्रार्थना है.

सज्जनोका कृपाभिलाषी,

राजेन्द्रनाथ पंडित उर्फ़ रामप्रपन्नाचार्य्य.

आनन्द मठ सूरत,

सूचीपत्र.

---

* एक मतसे निकली हुई शाखा व भेद जैसे रामानुजमे, वडहल, तिगल, जैनोमे श्वेताम्बर, दिगम्बर, कबीर, के बारह भेद, नानक,मे उदासीन, निर्मले सटियामे, सातभेद रामसनेही, भेदोभेद इत्यादि मत भिन्न न लिख मूल मतोके वर्णनमे लिखा है पाठक वर्ग उसीमे देखे, कोई कोई मतकी शाखा पत्ता मिलनेसे जुदाभी लिखा है जैसे नायाकाका, चकला इत्यादि.

बौद्धमत.



बुद्धीसे बुद्धदेवको, प्रेमसे करौं प्रणाम
जिनकी कृपा अगाधलहि, पायों मनविश्राम

गोरखपुर जिलेकि सीमापर नैपालकी तराई के पास " कपिलवस्तू " नामक शहरथा उसमे शावा-जातिका सुद्धोदन नामक राजा राज्य करताथा सन ई. से ६२३ वर्ष पाहिले उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम राजाने गौतम रक्खा जो पीछे से अत्यंत बुद्धीमान होनेके कारण " बुद्ध " नामसे प्रख्यात होगया, गौतमका विवाह एक राजपुत्रीसे हुआथा, जिससे एक पुत्र हुआ. ३० वर्षके अवस्थामे गौतम बुद्ध चुप चाप घरसे निकलकर वनमे रहना सुरूकिया उन्होने बहुतादिनोंतक पटना मे ब्राह्मणोंसे शिक्षा पाई. उन्होने निश्चै कियाकी आत्माको कभी सुख नहीं देना इसलिये वे ६ वर्ष पाच शिष्यो के साथ गया के तंग और अंधेरे जंगलोमे कठिन तप करके अपने शरीर को गलाडाला. जहापर उन्होने कठिन तप कियाथा उसी जगह गयाजीमे बुद्ध देवका मंदिर है.

फिर बुद्धका विचार हुआकि आदमियोंको अच्छी चालकी शिक्षा देवें तव उन्होने तपस्या छोडकर वनारसमे सारनाथके पास कुछ मनुष्योंको शिक्षा देना

आरंभ किया, उनकी शिक्षा सबके लियेथी इसलिये सर्व साधारन मनुष्योंने उनका मत स्वीकार किया, ३ महिनेके भीतर सर्व साधारनमेसे ६० मनुष्योने अच्छी तरह धर्म मान्याकिया आठ महिने फिरकर और ४ महिने अस्थिर रहकर शिक्षा देतेथे, छोटे बडे सब बुद्धके मतमे सामिल होगये बुद्ध विहार अवध पाश्चि-मोत्तरमे और उसके आसपास अपनी शिक्षाका प्रचार करतेथे जब बुद्ध अपने घर आये तव वृद्धराजानेभी उनकी शिक्षा आदरके साथ सुनी, उनका लडका उनके मतमे आया, ३० वर्षकी अवस्थामे बुद्धने घर छोडा और ३६ वर्षकी अवस्थामे शिक्षा देना आरंभ किया, ४४ वर्ष शिक्षा देनेके उपरात सन ई. से ५४३ वर्ष पहिले ८० वर्षकी अवस्थामे बुद्धका देहान्त हुआ.

बुद्ध इसबातकी शिक्षा देतेथे कि हरेक आदमी मोक्ष पासकता है परन्तु किसी देवताके प्रसन्न करनेसे नहीं किन्तु अपने कर्मोसे मिलती है मनुष्य जो कुछ भोगता है कर्मके फल है जो बोवेगा वही काटेगा.

जो सुख दुख होता है यह पुर्वका कर्म है और अब करोगे सो पीछे भोगोगे, यज्ञोंके बदले बुद्धने तीन बडे कर्म बतलाये अपनेमनको वसमे रखना, जीवोपर दया रखना और सब जीवोंकी प्राण रक्षा करना सन ई.से २२७ वर्ष पहिले चन्द्रगुप्तका पीता मगध या विहारका राजा अशोक जो सन ई. के २५७ वर्ष पहले राजासिहासन पर बैठा अच्छी तरह बौद्ध मतमेथा लोग कहतेहै किवह ६४००० बौद्ध पुजारियोंकी परवरिस करताथा उन्होंने बहुतसे तपस्थान कायम किये उसका मुल्क अबतक विहार प्रदेश कहा जाताहै विहार बौध्धोंकें निवासस्थानको कहते हैं.

कनिश्क पाश्चिमोत्तर प्रदेशके शिदियाका राजाथा उसके राज्यके समय, सन ४० मे बौध्दोका अन्तिम और चौथा जल्सा भया उसने दूसरी बार पवित्र पुस्तकोंको सुधारा उसके समयमे बौध्द मत तमाम फैल गया

सन २४४ वर्ष पहिले अशोकका बेटा पवित्र पुस्तकोंको जो उसके बापने इकठा करादियाथा सो लंका (शिलोन) को लेगया. वहासे ब्रह्मा आदि द्वीपोंमे पहुचा या और चीनका राजधर्म होगया. टीबेटी जापानी आदि बौद्ध मतको मानतेहै.

फिर बुद्धका विचार हुआकि आदमियोंको अच्छी चालकी शिक्षा देवें तव उन्होने तपस्या छोडकर बनारसमे सारनाथके पास कुछ मनुष्योंको शिक्षा देना

आरंभ किया, उनकी शिक्षा सबके लियेथी इसलिये सर्व साधारन मनुष्योंने उनका मत स्वीकार किया, ३ महिनेके भीतर सर्व साधारनमेसे ६० मनुष्योने अच्छी तरह धर्म मान्याकिया आठ महिने फिरकर और ४ महिने अस्थिर रहकर शिक्षा देतेथे, छोटे वडे सब बुद्धके मतमे सामिल होगये बुद्ध विहार अवध पाश्चि-मोत्तरमे और उसके आसपास अपनी शिक्षाका प्रचार करतेथे जब बुद्ध अपने घर आये तब वृद्धराजानेभी उनकी शिक्षा आदरके साथ सुनी, उनका लडका उनके मतमे आया, ३० वर्षकी अवस्थामे बुद्धने घर छोडा और ३६ वर्षकी अवस्थामे शिक्षा देना आरंभ किया, ४४ वर्ष शिक्षा देनेके उपरांत सन ई. से ५४३ वर्ष पहिले ८० वर्षकी अवस्थामे बुद्धका देहान्त हुआ.

बुद्ध इसबातकी शिक्षा देतेथे कि हरेक आदमी मोक्ष पासकता है परतु किसी देवताके प्रसन्न करनेसे नही किन्तु अपने कर्मोसे मिलती है मनुष्य जो कुछ भोगता है कर्मके फल है जो बोवेगा वही काटेगा,

जो सुख दुख होता है यह पुर्वका कर्म है और अब करोगे सो पीछे भोगोगे. यज्ञोके बदले बुद्धने तीन बडे कर्म बतलाये अपनेमनको बसमे रखना, जीवोपर दया रखना और सब जीवोंकी प्राण रक्षा करना सन ई.से २२७ वर्ष पहिले चन्द्रगुप्तका पोता मगध या विहारका राजा अशोक जो सन ई. के २५७ वर्ष पहले राजसिंहासन पर बैठा अच्छी तरह बौद्ध मतमेथा लोग कहतेहैं किवह ६४००० बौद्ध पुजारियोंकी परवरिस करताथा उन्होंने बहुतसे तपस्थान कायम किये उसका मुल्क अबतक विहार प्रदेश कहा जाताहै विहार बौध्धोंके निवासस्थानको कहते हैं.

कनिश्क पाश्चिमोत्तर प्रदेशके शिदियाका राजाथा उसके राज्यके समय. सन ४० मे बौध्धोका अन्तिम और चौथा जल्सा भया उसने दूसरी बार पवित्र पुस्तकोंको सुधारा उसके समयमे बौध्द मत तमाम फैल गया

सन २४४ वर्ष पहिले अशोकका बेटा पवित्र पुस्तकोंको जो उसके बापने इकठा करादियाथा सो लंका (सिलोन) को लेगया. वहांसे ब्रह्मा आदि द्वीपोंमे पहुचा था और चीनका राजधर्म होगया. टीबेटी जापानी आदि बौद्ध मतको मानतेहै.

सन १८९१ की मनुप्य गणनामे भारतवर्ष जिसे ब्रह्मदेशभी सामिलहै ७१३१३६१ बौध्दथे, बौध्दोमे कुछ न कुछ भेदसे चार साखाहै अर्थात् वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और माध्यमिक भारतके कई भागोमे बौध्दोकी गुफापर्वतोंपर खुदीहै उनमे कार्ली, अजंता, चंद्रगिरि आदिकी बौध्द गुफा देखने योग्यहै बौध्द साधू पगके नीचे तक लटकता लाल कपडा पहिरते है और अपने हाथमे एक इष्टिका रखतेहै मै " गयाजी " गयाथा वहां नैपालके कई बौध्द साधुओंसे परिचय भयाथा वेभी यात्राके निमित्त आयेथे वुध्दका एक " दात " शिलोनमेहै जिस्को ब्रंह्मदेशसे सिंगाली लोग कई लक्ष रुपये खर्च करके ले गयेथे.

जैनमत.

श्रीजिनेंद्र भगवानको. धरिके हियमे ध्यान,
जिनमुख किरणप्रकाशते, लख्यों यथारथ ज्ञान,

पुरानोमें कोई कोई जगह जैन धर्मका नाम है जैन लोगों के २४ तीर्थंकर अर्थात् देवता है १ ऋषभ-

नाथ जिनको आदिनाथभी कहतेहैं २ अजितनाथ ३ संभवनाथ ४ अभिनन्दननाथ ५ सुमतिनाथ ६ पद्म-प्रभनाथ, ७ सुपार्श्वनाथ, ८ चंन्द्रप्रभनाथ, ९ पुष्पदन्त-नाथ. १० शीतलनाथ, ११ श्रेयांशनाथ, १२ वासु-पूज्यनाथ, १३ विमलनाथ, १४ अनन्तनाथ, १५ धर्मनाथ १६ शान्तिनाथ, १७ कुंथुनाथ, १८ अरनाथ, १९ मल्लीनाथ, २० सुव्रतनाथ; २१ नमिनाथ, नेमी-नाथ २३ पार्श्वनाथ २४ महावीरस्वामी जैन तीर्थंकर अर्थात् २४ देवतावोंका शरीर कितना लम्बा था और कितने वर्ष जियेथे मनुष्यषके ३॥ हाथका एक धनुष होताहै उसी धनुष प्रमाणसे शरीरकी लम्बाइ क्रमशः १ आयु चौराशी लाख वर्ष शरीर प्रमाण ५०० धनुष लम्बा, २ आयु वहतर लाख वर्ष शरीर प्रमाण ४५० धनुष, ३ आयु साठ लाख वर्ष शरीर प्रमाण ४०० धनुष. ४ पचास लाख वर्षका आयु शरीर प्रमाण ३५० धनुष, ५ चालीस लाख वर्षकी आयु शरीर प्रमाण ३०० धनुष, ६ तीस लाख वर्षकी आयु, शरीर प्रमाण १४० धनुष, ७ वीस लाख वर्षकी आयु शरीर प्रमाण २०० धनुष. ८ आयु दश लाख वर्ष शरीर प्रमाण १५० धनुष, ९ दोलाख वर्षकी आयु १०० धनु-षका शरीर १० एकलाख वर्षकी आयु ९० धनुष शरीर

११ चौराशी लाख वर्षकी आयु, शरीर प्रमाण ८० धनुष १२ आयु वहत्तर लाखवर्ष शरीर प्रमाण ७० धनुष. १३ साठिलाख वर्षकी आयु शरीर प्रमाण ६० धनुष १४ आयु तीसलाख शरीर प्रमाण ५० धनुष, १५ आयु दशलाख वर्ष शरीरप्रमाण ४५ धनुष, १६ एकलाख वर्षकी आयु शरीरप्रमाण ४० धनुष, १७ पंचानवे हजार वर्षकी आयु शरीरप्रमाण ३५ धनुष, १८ आयु चौराशीहजार वर्ष शरीरप्रमाण ३० धनुष, १९ आयु पचपनहजार वर्ष शरीरप्रमाण २५ धनुष, २० आयु तीसहजार वर्ष शरीरप्रमाण २० धनुष, २१ आयु दशहजार वर्ष शरीरप्रमाण १४ धनुष, २२ आयु एकहजार वर्ष शरीरप्रमाण दसधनुष २३ सों वर्ष आयु शरीर ९ हाथ २४ वहत्तर वर्षकी आयु शरीरप्रमाण ७ हाथ, महावीर स्वामीका देहान्त विक्रम संवत्के ४७० वर्ष और सन् ई. ५२६ वर्ष पहिले हुआथा, जैन मंदिरोंमे इन्ही तीर्थंकरोंमेसे दोचार अथवा कमजास्ती प्रतिमा रहती है गौतम वुद्ध के शमय महावीर थे २३ वा तीर्थंकर पार्श्वनाथके २५० वर्ष पीछे महावीरका देहान्त हुआथा, महावीर राजासिध्दार्थ के पुत्र थे राजा पुत्रका नाम वर्धमान रखा पीछे उनके गुणोसे प्रशन्न होकर महावीरकी पदवी

दीथी महावीरकी "प्रीयदर्शना" नामक पुत्रीका विवाह कुमार जमालीसे हुआथा.

महावीरजी अपने मातापिताकी मृत्युके पीछे अपने जेष्ट भ्राता नान्दिवर्धनको राज्यभारदेकर यतिधर्म ग्रहण किया और बारा वर्ष इंद्रियोंका संयम कर जिनत्व प्राप्त किया महावीरके धर्मोपदेश सुनकर एक लाख श्रावक अर्थात गृहस्थ जैन और १४००० श्रवण अर्थात् विरक्त जैन हुये उनके ११ शिष्य प्रधान और पंडित थे, ७२ वर्षके वयमे महावीरका देहान्त हुआथा कोई कोई कहते है कि बौध धर्म भारतवर्षसे उठ जानेपर महा-वीरकृत जैनधर्म हुआ. जैनमतमे प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान् शाब्द. येही चार प्रमाण मानते है.

उनके मतमे जगतके मूल तत्व ९ है १ जीव, २ अजीव. ३ पुण्य. ४ पाप. ५ आश्रव (कर्मबंधन) ६ संवर. ७ बंध. ८ निर्जरण (कर्मकात्याग) और ९ मुक्ती (अष्टकर्मोकाक्षय) कुछ लोग सातही मानतेहै नैयायिक लोग अनुमान प्रमाणसे कहतेहै की जब पदार्थ है (सृष्टी आदि) तब इसका कोई कर्त्ता अवश्य होगा; परंतु जैनियोंका अनुमान प्रमाण ऐसा नहीं है वे कहतेंहै कि नकोई ईश्वरहै नकोई कर्त्ता यह संसार

अनादि कालसे ऐसाहीं चला जाता है वे कहतेहै कि संसारी और मुक्त दो प्रकार के जीव है वे लोग मुक्त और सिद्ध अपने तीर्थ करोंको मानते हैं.

वौधके समान जैनोमे भी आहिंसा परम धर्म है किसी प्राणींका वध नही करना येही जैनधर्मकी सार नीति है जानवरोंपर जैनो की वडी दयाहै उनके उद्योगसे कई पशु शाला और पशुवोंके लिये वहुतसे दवाखाना वनेहै वहुत वातोंमे जैन और वौध एकहै एदोनो निरीश्वर वादीहै.

जैनोके मतमे मंदिर वनाकर तिर्थकरोंकी प्रतिमा स्थापन करना उतम कर्महे प्रतिमाकी पूजा होवे चाहे न होवे जैनो के वहुत मंदिरहै जिनमे मार्वुलका वहुत कामहै इनके प्रसिध्द मदिर आवूराज, पालीटाना समत-शिखर और शत्रुंजय पहाडीपर है वहुतसे प्रतिमाओंके भौंह नेत्र छाती आदिमेहिरे जडे रहतेहै.

जैनोमे श्वेताम्वर मुर्तीपूजक, श्वेताम्बर स्थानकवासी, और दिगम्बर तीन भेदहैं इसमे श्वेताम्वर और दीगम्बर मूर्तीपूजक है दिगम्बरोंकी देवमूर्तियोंमे वस्त्रका चिन्ह नही रहता श्वेताम्बर लोग अपने तिर्थकरोंकी पूजा करते है और अपने धर्मवालोंका वडा सत्कार करते है

जैन लोग उदारता, सुशीलता, पुन्य और तपचारोको मुख्य धर्म मानतेहै जैन साधुओके पांच कर्म मुख्य है. १ चैत्य अर्थात् मंदिरोमे पाठ करना, २ अन्य साधुओंकी वंन्दना करना ३ वार्षिक भ्रमण करना, ४ परस्पर स्वधर्मकी चरचा करना, ५ इंद्रियोका दमन करना, श्रवण लोग छमाशील संग्रहराहित केश संस्कारसे वार्जित और भिक्षान्नभोजी होंते है वे लोग मुखपर इसवास्ते कपडा बांधे रहतें है कि कोई सूक्ष्म जीव उडकर मुखमे न पडजाय अथवा भावसे मरनजाय भोजन के अतिरिक्त सर्वदा पट्टी बांधे रहते है सूतका याऊनका एक झाडू हमेसा पासमे रखते है उसीसे वहारकर बैठते व दिशा फिरते है फिर मलको एक लकडीसे फैला देते है उनमे बहुतसे अैसेभी है जो नातो रसोई बनाते न किसीको कहतें और कोई बनावे तो उससे थोडा मांग लेतें है और माड तथा चावलके धोवनसे पानीका काम निकार लेते है जैनोके ग्रथमे वगीचा लगाना. कूवा वापी तडागादि बनाना पाप लिखा है रात्रीमे भोजन कभी नहीं करते.

संवत् १६३३ मे जैनीयोका एक लेखक नवीन मत निकाला उसको " ढूंढिया " कहते है और तेरह पंथी आदि कई मत हुये " ढुंढिया " श्वेतांबरोके अंतर

गत हैं ए लोग मस्तकके वाल नोचडालते कमंडलु रखते स्नान नहीं करते दंतधावन नहीं करते रात्रीमे दीपक नहीं जोडते, वस्त्र नही धोते कुछ पीला वस्त्र पहिरते है और मूर्तिपूजा नहीं मानते जहां रहते है उस मकानको "उपाशरा" कहते है. जैन लोग प्रातःकाल उठकर देरासरमे दर्शन करते है. सन १८९१ की मनुष्य गणनामे भारत वर्षमे १४१६६३८ जैनथे विशेषकरके राजपूताना और गुजरातमे वहुत है जैनी लोग केशरका विन्दु कपालपर लगाते हैं पूज्यपाद वावू कृष्णनाथ वनरजी अपने "जिनजन्म" मे लिखा है कि भारतमे पहिले ४०००००००० जैनथे उसी मतसे निकलकर वहुत लोग दुसरे धर्ममे जानेसे इनकी संख्या घट गइ. यह धर्म वहुत प्राचीन है इस मतके नियम वहुत उतम है इसमतसे देशको भारी लाभ पहुचाहै इनके मंदिरोमे जानेसे चित्त प्रसन्न होता है और वैराग्य उत्पन्न होता है.



श्रीमच्छंकराचार्यका मत और जीवनचरित.

श्रीशंकर पदनमनकरूं, जिन पाखंडिन खंड,
जगत्गुरू पदवीलही, थाप्यो धर्म उदंड,

मद्रास हातेमे वानावारके रेलवे स्टेशनसे १८ मील बेंगलूर सहरसे १२८ मील पश्चिम और हुवली जक्सनसे १६० मील दक्षिण पूर्व विरुरका स्टेशनहै जहांसे एक रेलवे शाखा सिमोगा कस्वेको गई है विरूरके रेलवे स्टेशनसे लगभग ६० मील पश्चिम मैसूर राज्यके कंदूर जिलेमे तुंग नदीके किनारे " शृंगेरी " एक पवित्र गाव है शृंगेरीसे ८ मील पश्चिम जिसे लोग शृंगागिरि पहाडी अथवा ऋषी शृंग कहतेहै जिसके नामसे शृंगेरी नाम पडाहे ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाही शृंगी ऋषीका जन्म हुवाथा शृंगागिरीका अपभृंश शृगेरीनामहै शृंगेरी मे लगभग १७०० मनुप्य वसतेहै और मल्लिकार्जुन शिवका मंदिरहै गावके पास प्रसिध्द शारदा देवीका मंदिरहै वहा शृंगेरीमठ तथा मठके स्वामी विद्याशंकर और शृंगेरीमहंतकामंदिर वनाहै शृंगेरीके पास चदनके वहुत वृक्षहै और छोटी इलायची कालीमिर्च सुपारी वहुत उत्पन्न होतीहै नृसिंहजीका एक मदिरहै शृंगेरी-

मठमे शंकराचार्य्यकी नियत की हुई गद्दीपर लगातार उत्तराधिकारी होते आतेहै एक अंग्रेजी किताबमे लिखाहै कि शंकराचार्यकी गद्दीपर आजतकके २९ आचार्योके नामहै मेरे जानेके समय अर्थात १९०५ ई. मे वर्तमान गादी पर स्वामीश्री जगत्गुरु शिवाभिनव नृसिंहभारती थे वे न्याय वेदान्त के भारी पंडित हैं वह भारत वर्ष के विविध देशोमे पर्यटनकर बहुत द्रव्य लाते हैं और पुन्य कार्यमे व्यय करते है तुंग नदीकी घाटीपर "मागनीं" नामक उपजाऊ गांव उनकी जागीर है और मैसूर राज्यसे वार्षिक १००० रुपया मठको मिलता हैं वर्षमे कई वार नवरात्री आदि पर्वोंमे विशेष उत्सव होता है जिससमय ५–१० हजार मनुष्योंकी भीड होती है उस समय मठके तरफसे सवजातिके मनुष्योको भोजन कराया जाता है और पुरुषोको मुद्रा और स्त्रियोंको वस्त्र वांटा जाता हैं शृंगेरी मठकी चार शाखा मठ है (१) मैसूर राज्यके तुंगभद्रा नदीके तट पर कुडली गाममे (२) मैसूर राज्यके विगलूर जिलेमे शिवगंगा गाममे (३) किष्किधामे विरूपाक्ष मदिरके पास (४) पूणाशहरके पास शंकेश्वरमे.

कूर्मपूराण (ब्राह्मीसंहिता २९, अध्याय) नीललोहित शंकर भक्तोंके मगलके लिये प्रगट होंगे श्रौत स्मार्त

मतकी प्रतिष्ठाकेलिये सकलवेदान्तका सार ब्रह्मज्ञान और निरादिष्ट धर्म अपने शिष्योको उपदेश करेगें.

दुसराशिवपुराण (उर्दुअनुवाद ७ वा खड १ अध्याय) अधर्मियोके मत प्रबल होनेके समय शिवजी एक ब्राह्मण गृह जन्म ले कर शंकर नामसे प्रसिध्द हुये उन्होने अधर्मका विनासकरके सन्यास धर्म तथा अद्वैत मतको प्रगट किया.

भक्तमाल—लगभग २०० वर्ष हुये 'नाभा' जीने एक भक्तमालकी पुस्तक बनाईहै उसमे लिखाहैकि शंकराचार्यजी धर्म पालनकरनेके लिये कलियुगमे उत्पन्नभये उन्होने अनिश्वर वादी बौध्योको और कुतर्कीजैनोंको परास्त करके धर्म विमुखोको सतमार्गमे लगादिया वह सदाचारकी सीमाथे ईश्वरके अंशथे यह बात भक्तमालके ४२ मे अंकमे है.

शंकराचार्यकी जीवनी—शंकरदिग्विजय—आदि सस्कृत पुस्तकोंमे लिखा है कि. केरल (मालाबार) देशमे वृषपर्वतके ऊपर पूर्णानदीके किनारेपर ज्योतिर्लिंग रूपसे शिवजी प्रगट हुये वहाके राजशेखर राजाने उस लिंगकी प्रतिष्ठा करवाई उसलिंगके समीप काटली नामक नगरमे—विद्याधिराजनामक पंडित रहते थे

उन्हींके गृह शिवजी जन्म लिया उनका पिता विद्याधिराजने पुत्रका नाम शिवगुरु-रक्खा और उचित समयपर माध्वपंडित की कन्यासे उनका विवाह करदिया जब २५ वर्षकी अवस्था होनेंपरभीं कोई संतान नहीं हुई तव शिवगुरू अपनी स्त्री सहित नदीमे स्नान कर वृष पर्वतपर शिवजीकी आराधना करने लगे शिवजीके प्रगट होनेपर शिवगुरु उनसे पुत्रमागा शिवजी कहाकि तुम अल्प बुद्धिवाले वहुत पुत्र लोगे कि थोडी आयु वाला सर्वज्ञ एक पुत्र लेवगे शिवगुरुने कहाकि मेरेकू थोडी आयुवाला सर्वज्ञ एकहीं पुत्रकी अपेक्षा है. शिवजी एक पुत्रका वर्दान देकर अंतरिक्ष होगये जब शिवजीकी आराधनासे शिवगुरुके भार्य्यासे पुत्र उतपन्न भया तब प्रशन्न होकर शिवगुरु पुत्रका नाम " शंकर" रक्खा शंकरकी चार वर्षकी अवस्था होनेपर शिवगुरुका देहांत होगया शंकरने ८ वर्षकी अवस्थामे अपनी मातासे आज्ञा लेकर नर्मदानदीके तीरपर जाकर श्री गौडपाद जीके शिप्य गोविन्द नाथ अर्थात गोविन्दानन्दजी जिनको गोविन्द योगीन्द्रभी कहते है उनके पाससे सन्यास धर्मकी शिक्षाली.

कुछ समय के पछि शंकरको गोविन्दानन्दजीने आज्ञा दीकी तुम काशीपुरीमे जाकर ब्रंह्म सूत्रोंपर भाष्यकी

रचना करी शंकरने काशीमे जाकर कावेरी तट निवासी एक ब्राह्मण कुमारको सन्यासकी दीक्षादी और उसका नाम सनंदन रखा और अन्य वहुतेरे लोगोंको सन्यासकी दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया उसके उपरांत वे शिष्यो सहित तीर्थ भ्रमणको निकले और बद्रिकाश्रमको पहुंचे उन्होने वहां कुछ दिन निवासकर व्यासजीके रचे सूत्रोंपर भाष्य बनाया उसके पश्चात् शंकराचार्य्यजीने, ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, माडूक्य तैतिरेय, ऐतरेय, छांदोग्य और व्रहदारण्य" इन १० उपनिषधो पर भाष्यकी रचनाकी उसके पीछे श्रीमद्भवगत्‌गीता पर भाष्य बनाया इन्ही तीनो भाष्योको " प्रस्थानत्रयी " कहते है इनके अतिरिक्त शंकराचार्य्य जीने अनेक वेदान्त ग्रन्थोको वनाया और अपने बनाये ग्रन्थोको अपने शिष्योंको पढ़ाया उनोने अपने प्रेमपात्र शिष्य सनंदनका नाम " पद्मपाद " रक्खा.

शंकराचार्यजीने प्रागमे जाकर " भट्टपाद " नामक महात्माका दर्सन किया जिनका नाम " कुमारिल " भट्ट भीहैभट्टपादजीने कहाकि हे शंकर यदितुम अद्वैत मतका प्रचार करना चाहते होतो माहिष्मतीमे जाकर चारोदिशामे प्रख्यात कर्ममिमांसा के सिद्ध करनेवाले

" मंडनमिश्र " को शास्त्रार्थ मे परास्त करो उस्के परास्त होनेपर संपूर्ण पंडित परास्तके तुल्य हो जायगे ऐसा कहकर भट्टपाद परम धामको चले गये. शंकराचार्यजीने नर्मदा नदीके तटपर माहिष्मती पुरीमे जाकर मंडन मिश्रसे कहाकि तुम हमारे साथ सास्त्रार्थ करो जिसका पराजय होवे वह जीतने वाले के मतको गृहण करे और उसका शिष्य होवे. तुमने वेदानुकूल अव्दैत मार्गको छोडकर केवळ कर्ममार्गहीका आश्रय लिया है मंडनमिश्र बोले की मेरेकू शास्त्रार्थ करनेकी सर्वदा इच्छा रहती है किंतु ऐसा मेरेकू कोई नहीं मिलता. मै शास्त्रार्थ करूं परंतु मध्यस्थ कोण होगा जो जीत हारका निर्णे करे उस समय दोनो जनकी संमतीसे मंडनमिश्रकी स्त्री मध्यस्थ बनाई गई. जिसका नाम " सरस्वती " था शंकराचार्यजीने कहाकि मै परास्त होनेपर गेरु रंगे वस्त्र छोडकर और सन्यास धर्म परित्यागकर स्वेत वस्त्र धारन करूंगा और मंडनमिश्रने कहा कि मै गृहस्थ आश्रम छोडकर सन्यास कर्मका आचरन करुंगा. तब मंडनमिश्रकी स्त्री " सरस्वती " ने दोनो के गलेमे एक एक पुष्पमाला पहिनादी और कहाकि शास्त्रार्थ करते करते जिसकी माला कुम्हला जावे वो अपने को परास्त समझे दोनो जनोका विवाद होने लगा

और दोनो युक्ती और वेंदोसे अपना अपना मत दृढ करने लगे पांच छ दिन वाद जव शंकराचार्यजीने श्रुति और वेद वा युक्तीसे जीव ब्रह्मका अभेद सिद्ध करने लगे तव मंडनमिश्रकी माला कुंमला गई तव सरस्वती मंडन मिश्रका पराजय कबूलकर शंकराचार्यसे कहाकि हे यति राज तुम पूर्णरीतिसे मेरे पतिको नहीं जीता क्यौंकि वेदमे लिखा हैकि स्त्रीपुरुषका आधा अंगहै इसे मेरेकूभी शास्त्रार्थमे पराजय कर पीछे इनको अपना शिष्य बनावो. श्रीशंकराचार्य्यने इस वातको कबूल किया शंकराचार्य और सरस्वतीका १७ दिन शास्त्रार्थ हुवा किन्तु कोईका पक्ष गिरा नहीं.

तव "सरस्वती" ने विचार कियाकि शंकराचार्य बाल-ब्रह्मचारी है " कामशास्त्र " मे कुछ नही जानते होगें ऐसा विचारके शंकराचार्यसे प्रष्ण कियाकि कामकी कला कितनी है उसका स्वरूप क्याहै वह किस स्थानमे रहता है उसकी पूर्व और पीछेकि अस्थिती क्याहै और स्त्री पुरुषोमे उसकी विलक्षणता क्याहै.

शंकराचार्यने थोडी देर मौन रहकर कहाकि एक मास पीछे उत्तर दूंगा. सरस्वतीने कबूल किया. पीछे शंकराचार्य शिष्योसहित मंडनमिश्रके घरसे चल दिये मार्गमे एक गुफामे "अमरुक" नामक राजाका मृत शरीर देखा शंकर

स्वामीने अपने शिष्योंसे कहाकि मै आत्माको इस मृतक शरीरमे प्रवेश कर इसकी स्त्रियोंके पास काम कला सीखूंगा पीछे अपने शरीरमे योगवलसे आ जाउंगा जव तक मै नहीं आऊं तव तक मेरें इस शरीरकी गुफामे रक्षा करना ऐसा कह कर योग वलसे उस मृतक शरीरमे प्रवेश कर गये जव राजा घर गया तव राजा को देख पुरवासी वहुत प्रसन्न भये.

राजा इंद्रके समान प्रजा पालन करनेलगा परंतु राजाका अलौकिक प्रभाव देख मंत्रियोंको संदेह हुवा उन्होंने परस्पर मंत्रणाकी की राजाकेशीररमे कोई "योगीराज" का प्रवेश है उन्होंने यहभी विचार किया कि जिस्से योगी अव अपने शरीरमे फिरके ना जा शके इसके वास्ते मंत्रीयोंने गुप्त दूत भेजकर दुतोंसे कहाकि जहा कही मृतक सरीर मिले उसे भस्म करदो.

यहाँराजा राज्यभार मंत्रियोंको सौंपकर रात दिन स्त्री आदि भोज्ञवस्तू मे लीन होकर कामशास्त्र के जानने वाले पंडितोंसे मित्रता किया पीछे उन्होने भाष्यसहित वात्सायण सूत्रोंका अभ्यास किया आर शृंगारका निधिरूप "अमरु शतक" नामक ग्रंथ वनाया वहा नियत समयके पीछेतक स्वामीजीका लौटना

न देख कुछ शिष्य शरीर रक्षामे और कुछ शिष्य स्वामी जीके खोजके लिये चले और अमरुक राजाके राज्यमे पहुंचें जब वहा उन्होंने सुना कि अमरुक राजाजी गया है जो प्रथम मर गयाथा सो अवन्यायसे और वडे योग्यतासे राज्य पालन करता है तव उन्होंने निश्चे कियाकि इसी शरीर मे गुरु महाराज है.

शिष्योने राजाके शरीरमे गुरु महाराजको अस्थित जाना तव अपने गानविद्यादि चातुर्यता दिखलाई तव शकराचार्य शिष्योको पहिचानकर निज शरीरमे जाने की इच्छाकी और राजाका स्थूल शरीर छोड लिगशरीर से निज शरीरमे प्रवेश करनेके लिये चलदिये वहां जाकर देखाकि मंत्री इत्यादि मिलकर आचार्य्यजीके शरीरको चितामे रखकर भस्म कर रहेंहै उस समय शंकराचार्य झट अपने शरीरमे प्रवेश कर संकटसे छूटनेके लिये श्रीनृसिह भगवानका स्तवन किया जब नरहरि प्रगट भये तव अग्नि बुझगई. आचार्यजी मंडनमिश्रके घर जाकर उनकी स्त्रीको कामशास्त्रमे परास्त किया पीछे शकराचार्यने मंडन मिश्रको सन्यासकी दीक्षादी और उनका नाम "सुरेश्वराचार्य." रक्खा पीछे शंकराचार्य दक्षिण दिशामे गये और वहॉ उनके शिष्य सुरेश्वराचार्य आदिक विवाद करके शैव पासुपत, गोणपत्य, शाक्त

आदि मत बादियोंको शास्त्रार्थ मे परास्त किया पीछे शंकराचार्य सिध्द नामक स्थानमे श्री वन्तीग्राममे निवास किया तब उस ग्रामके प्रभाकर नामक विद्वान ब्राह्मण अपने १३ वर्षके मूढ पुत्रको लाकर शंकरस्वामी के शरणमे कर दिया चरनका स्पर्स करनेके समय आचार्यजीने पूछा कि तूं जड वृत्ती वाला कौन है उसने आचार्यजीके प्रभावसे १२ स्लोकों मे आत्म तत्व वर्णन किया तव शंकराचार्यजीने प्रभाकरजीसे कहा कि इन १२ श्लोकोमे आत्मतत्व हस्तामलक वत् भासता है इसे तुमारे पुत्रका नाम आजसे हस्तामलक होगा पीछे शंकरस्वामी हस्तामलक प्रभृति शिष्योसहित तुगभद्राके तटपर शृंगेरी पुरीमे आये.

जहां वे पहिलेहीसे शारदादेवीकी स्थापना कर चुकेथे वहां उन्होने शृंगेरीमठ स्थापन किया. शंकर स्वामीके शिष्योमे "गिरि" नामक एक मुख्य शिष्यथा जो स्वामीजीके अनुग्रहसे तत्कालही सपूर्ण विद्या लाभ कर तोटक छंदोमे शंकराचार्यकी स्तुतीकी इस कारन उसका तोटकाचार्य नाम हुवा और मुख्य शिप्योमे गणना हुई.

उस समय पद्मपाद, हस्तामलक, सुरेश्वराचार्य और तोटकाचार्य प्रधान शिप्य हुये इनके अतिरिक्त–सामि-त्वाणि-चिहिलास–ज्ञानकंद–विप्णुगुप्त–सुध्दकीर्ती-भा-

नुमरीचि—कृष्णदर्शन—बुध्दीवृध्दी-विरंचिपाद-अनंतानंद इत्यादि अनेक शिष्य थे.

स्वामीजीकी आज्ञासे उनके शिष्योंने बहुत ग्रंथ बनाये शंकर स्वामी ऋृषीशृंगपर बहुत दिन निवास करनेके पीछे अपने घर गये क्योंकि एकवार घर जानेको अपनी मातासे कहाथा. उनकें घर जाने पर उनकी माताका देहान्त होगया शंकराचार्यजी पृथ्वीमे दिग्विजय करके नास्तिक तथा द्वैत मतवाले लोगोंको परास्त कर उनको सुध्द अद्वैतमे लाये शंकराचार्यका मतहै की इस प्रपंचमे जो कुछ देखनेमे आताहै वह सब मिथ्याहै ब्रह्मसे भिन्न कोई पदार्थ नही है ईश्वर और जीव प्रथक नहीं है एकही वस्तूहै. इसीसे जिस मतमे ईश्वरकी सत्ता मानी जाती है उन मतोंको खंडन नहीं किया अद्वैत भावसे सब मतोको स्थापित किया. विष्णु शिवमे भेद रखनेवालोंको अभेद बुध्दी रखनेकों उपदेश दिया. उन्होने यह माना है कि केवल ब्रह्म उपाशना करने योग्यहै परन्तु उसकी उपासना कठिन है इससे शिव, विष्णु, सूर्य. गणेश. दुर्गा इत्यादिकी समान भावसे उपासना करो क्योंकी एदेवता सब परब्रह्मके अंग है शंकराचार्य, जैन, वोद्ध आदि मताभिमानियोंको परास्त करनेके पश्चात कुछ शिष्योंके साथ वद्रिकाश्रमको गये वहा केदाराश्रममे उनका

देहान्त होगया उस समय उनकी अवस्था केवल ३२ वर्षकीथी.

भारतवर्षकी चारो सीमापर शंकराचार्यजीके ४ मठहै जो उनके शिष्योंसे हुये दक्षिणकी सीमाकी तरफ मैसूरराज्यमे शृंगेरी गावमे उनके शिष्य पृथ्वीधराचार्यका शृंगेरीमठहै. जिसका " भूवारसंप्रदाय " भूर्भुवगोत्र सरस्वती, भारती, और पुरी, उपाधि रामेश्वरक्षेत्र आदि वराहदेवता, कामाक्षीदेवी, तुंगभद्रा तीर्थ चैतन्य ब्रह्मचारी, यजुर्वेद, और अहं ब्रह्मास्मि, महावाक्यहै पश्चिमकी सीमापर श्रीद्वारिकापुरीमे शंकराचार्यके शिष्य विश्वरुपाचार्यका " सारदा मठ " है जिसका कीटवार संप्रदाय, अवगतगोत्र, तीर्थ, आश्रम, और श्रीपाद, उपाधि, द्वारिकाक्षेत्र, सिद्धेश्वरदेवता, भद्रकालीदेवी, गंगागोमती तीर्थ, स्वरूप ब्रह्मचारी, शामवेद, और तत्त्वमसि, महा वाक्य हैं.

उत्तरकी सीमाके पास गढवाल जिलेमे जोसी मठ नामक वस्तीमे शंकराचार्यके शिष्य, तोटकाचार्यका जोषीमठ है जिनका आनंद वार संप्रदाय, भृगुगोत्र गिरी पर्वत, सागर, उपाधि, बद्रिकाश्रम तीर्थ, नारायणदेवता, पुण्यगिरिदेवी अलकनन्दातीर्थ, नन्दब्रह्मचारी अथर्वण वेद, और अहमात्माब्रह्म महा वाक्य है.

पूर्वकी सीमापर उत्कल (उडीसा) देश श्रीजगन्नाथ पुरीमे शंकराचार्यके शिष्य पादपद्माचार्यका, गोवर्धन मठ है जिनका भोगवार संप्रदाय, कश्यप, गोत्र वन, अरण्य, उपाधि पुरुषोतम क्षेम, जगन्नाथदेवता, विमला-देवी, महोदाधितीर्थ, प्रकाश ब्रह्मचारी ऋग्वेद और प्रज्ञान मानन्दं ब्रह्म महा वाक्य है मेरे जानेके समय पुरी गोवर्धनमठके स्वामी श्री मदुसूदनस्वामीजी थे मै श्री राघवदास मठमे टिकाथा.

शंकराचार्यके जन्मका ठीक समय नहीं ज्ञात हुआ किन्तु परंपराके क्रमसे जो शंकराचार्यसे अभी तक चली आती है अनुमान होता हैकि सन ई० ९ सदीमे वहथे कुछ लोगोंका अनुमान उसे पहिलेकाहै. बहुत लोग विसेश करके ब्राह्मण लोग शंकराचार्यको "जगतगुरु" कहतेहै और उनके मठोमे मठाधीशके नामके साथ जगत्गुरु तथा शंकराचार्य दोनो विसेशन अवश्य रहतेहै और उपाधियुक्त नाम बीचमे रहताहै केवल ब्रह्मके उपाशक होनेसे सन्यासी एक दंड धारन करतेहै और यज्ञोपवी-तका त्याग तथा सर्वदा दाढी मूछ सहित सिखा मुड-वातेहै इनका मत अद्वैतहै.

———

श्रीरामानुज स्वामीका मत.



श्रीरामानुजके चरण, करों ध्यान एकवार,
जिनके पद वन्दन किए, छूटि जात संसार.

मद्रास हातेमे त्रिवित्तूर, के रेलवे स्टेशनसे १२ मील दक्षिण भूतपुरी एक वस्ती है, इसी पुरीमे सुप्रसिद्ध रामानुज स्वामीजीका, जन्म हुआथा भूत पुरीमे अनन्त सरोवरके पास श्रीरामानुज स्वामीजीका, मंदिर वनाहै, रामानुजस्वामीके अतिरिक्त केशवभग-वानकाभी मंदिर है, औरभी वहुतसे मंडप तथा दर्शणीक स्थान वनेहै भूतपुरीमहात्म्य, स्कंदपुराणसे निकली हुई ४ अध्यायकी एक संस्कृत पुस्तकहै उसमे लिखाहै कि,

अयोध्याके, सूर्यवंशी महाराज, मांधाता, के पौत्र और महाराजा युवनाश्व, के पुत्र हरित, थे, युवनाश्व हरितको राज्य सौंपकर वनमे तप करनेके लिये चले गये एक समय, राजा हरित शिकार खेलनेके लिये, वनमे गये वहाँ सिहसे गऊको वचानेके लिये वॉण छोडा वॉण

भूलसे गऊको आयलगा राजा इसबातसे खेदित होकर घर आया और अपने गुरु महर्षि वशिष्ठजीसे पाप निवृत्तीका कारन पूछा महर्षिने कहाकि तुम अनन्त सरोवरमे स्नान कर तप करोगे तब तुमारा पापसे छुटकारा होगा वेंकटगिरीसे ३ योजन दक्षिण ७ योजन लम्वा और इतनाही चौडा " सत्यव्रत " नामक तीर्थ है. जिसके भीतर अनेक तीर्थस्थान और कांची नगरी है. कांचीसे दो योजन पूर्वोत्तर विदेहंवन है, उसके कुछ पश्चिम अरुणारण्य, और अरुणारण्यसे दक्षिण " भूतपुरी " है जिसमे निरमल जलसे परिपूर्ण अनन्तसर नामक तालाव, सुसोभितहै महर्षि वशिष्ठ-जीने कहाकि हे राजा हरित भूतपुरी की उत्पत्ती की कथामै तुमसे कहताहूँ कि,

सृष्टीके आरंभमे जब शिवजी अपने सर्वांगमे भस्म लगाये और जटा फटकारे नृत्य करने लगे तब उनके साथके भूत गण परस्पर हँसने लगे रुद्र भगवान्ने उनकी ऐसी ढिठाई देखकर श्राप दिया कि तुमलोग हमारेसे अलग रहोगे भूत गणोने ब्रंह्माके पास जाकर सब वृतान्त कहसुनाया ब्रंह्माजीने कहा कि वेंकटगिरिसे दक्षिण भारतवर्ष मे प्रख्यात सत्य व्रत नामक तीर्थ है. तुम लोग वहा जाकर केशव भगवान्की आराधना

श्रीरामानुज स्वामीका मत.



श्रीरामानुजके चरण, करों ध्यान एकवार,
जिनके पद वन्दन किए, छूटि जात संसार.

मद्रास हातेमे त्रिवित्तूर, के रेलवे स्टेशनसे १२ मील दक्षिण भूतपुरी एक वस्ती है, इसी पुरीमे सुप्रसिद्ध रामानुज स्वामीजीका, जन्म हुआथा भूत पुरीमे अनन्त सरोवरके पास श्रीरामानुज स्वामीजीका, मंदिर वनाहै, रामानुजस्वामीके अतिरिक्त केशवभगवानकाभी मंदिर है, औरभी वहुतसे मंडप तथा दर्शणीक स्थान वनेहै भूतपुरीमहात्म्य, स्कंदपुराणसे निकली हुई ४ अध्यायकी एक संस्कृत पुस्तकहै उसमे लिखाहै कि,

अयोध्याके, सूर्यवंशी महाराज, मांधाता, के पौत्र और महाराजा युवनाश्व, के पुत्र हरित, थे, युवनाश्व हरितको राज्य सौंपकर वनमे तप करनेके लिये चले गये एक समय, राजा हरित शिकार खेलनेके लिये, वनमे गये वहाँ सिहसे गऊको वचानेके लिये वाँण छोडा वाँण

भूलसे गऊको आयलगा राजा इसबातसे खेदित होकर घर आया और अपने गुरु महर्षि वशिष्ठजीसे पाप निवृत्तीका कारन पूंछा महर्षिने कहाकि तुम अनन्त सरोवरमे स्नान कर तप करोगे तब तुमारा पापसे छुटकारा होगा वेंकटगिरीसे ३ योजन दाक्षिण ७ योजन लम्बा और इतनाही चौडा "सत्यव्रत" नामक तीर्थ है. जिसके भीतर अनेक तीर्थस्थान और कांची नगरी है. कांचीसे दो योजन पूर्वोत्तर विदेहंवन है, उसके कुछ पश्चिम अरुणारण्य. और अरुणारण्यसे दाक्षिण "भूतपुरी" है जिसमे निरमल जलसे परिपूर्ण अनन्तसर नामक तालाव. सुसोभितहै महर्षि वशिष्ठ-जीने कहाकि हे राजा हारित भूतपुरी की उत्पत्ती की कथामै तुमसे कहताहूं कि,

सृष्टीके आरंभमे जब शिवजी अपने सर्वांगमे भस्म लगाये और जटा फटकारे नृत्य करने लगे तब उनके साथके भूत गण परस्पर हँसने लगे रुद्र भगवान्ने उनकी ऐसी ढिठाई देखकर श्राप दिया कि तुमलोग हमारेसे अलग रहोगे भूत गणोने ब्रंह्माके पास जाकर सब वृतान्त कहसुनाया ब्रंह्माजीने कहा कि वेंकटगिरिसे दाक्षिण भारतवर्ष मे प्रख्यात सत्य व्रत नामक तीर्थ है. तुम लोग वहा जाकर केशव भगवान्की आराधना

करो जब उनोंने सहस्त्र वर्ष परियंत केशव भगवानका ध्यान किया तब विमानमे चढे हुवे भगवानने उन्हे दर्शन दिया भगवान्के साथ अनंत अर्थात् शेषजी आदि अनेक देवताथे, भूतोंने विनय कियाकि हे भगवन् आप ऐसा उद्योग करें जिस्से हम लोग फिरसे, रुद्र भगवान्के गण बने तब विष्णु भगवान्ने शिवका ध्यान किया शिव प्रत्यक्ष, भये, विष्णु नीललोहितसे कहाकि हे धूर्जटे इस पवित्र तीर्थमे निवास करनेसे भूत गणोंका पाप छूट गया अब आप अनुग्रह कर अपना गण बना लीजिये शंकरने विष्णुका वचन स्वीकार किया उसके पश्चात् विष्णुकी आज्ञासे अनन्तने एक सरोवर बनाया भूत गणोने उसमे स्नान कर शिवकी प्रदक्षिणा की, भूतेश्वरने उनको अपना गण बना लिया. पीछे उमापतिने विष्णुसे कहा कि आप, वर्तमान् कालके स्वारोचिष मन्वतर तक इस स्थानमे निवास करो. उस समय विष्णु भगवान्के उत्सव निमित्त एक पुरी बनाई ३ योजन लम्बी और इतनीही चौडी जिसमे देवता, राजा, मनुष्योके रहने योग्य सुदर आलय बनाये और बहुतसे बाग बगीचे राजमार्ग बना कर वैसाख सुद १२ को हस्त नक्षत्रमे रुद्रके सहित विष्णु भगवानका उत्सव किया. भूत गणोने देवताओंके चले जानेपर वहा ब्राह्मण आदि चारो वर्णोंको बसाया

विष्णु भगवानने कहाकि जो मनुष्य इस तिथि (वैसाख सु. १२) को अनत सर मे स्नान कर मेरा पूजन करेंगा उसे हम संपूर्ण वाछित फल देगें शिवजी गणो सहित अपने स्थानमे चले गये. भूतोने निरमान् किया इसे उस पुरीका नाम भूतपुरी पडा.

राजा हारित महर्षी वशिष्ठ के मुखसे इस कथाको सुन अपना राज्यभार पुत्रको तथा उनको सौपकर भूतपुरी चलेगये. वहां उन्होने बडे बडे मंदिर प्रासाद गोपुर सरोवरोका विविध खड हर देखा और अनन्त-सरमे स्नान कर तप करना आरंभ किया सौवर्ष तप करनेपर वहा विष्णु प्रगट भये, उन्होने कहाकि हेराजन् हमारे दर्शनसे तुमारा गोवधका पाप छूट गया अव तुम इसी शरीरसे ब्राह्मण होजावगे तुह्मारे वंशमे हमारे अंश शेषजी जन्म लेगें अर्थात् रामानुजस्वामी अवतार लेंगे तुमारे वंसके मनो वांच्छित फल देनेके लिये वैवस्वत मन्वन्तरके अंततक हम यहॉ निवास करेगें, भूत गणोने स्वरोचिष मन्वंतरमे इस पुरीको वसायाथा उस मंन्वन्तरके अंत मे यहपुरी उजड गई तुम पुरीको पूर्ववत वनादो और अनन्तसरके पूर्व तरफ हमारा स्थान वनाओ आज चैत्रमासकी सुक्ल. सप्तमी है आजसे उत्सव आरभकर १५ के दिन समाप्त करदो अर्थात् पूर्णिमाके

दिन हमारी स्थापना करदो और तुम अपने पुत्र पौत्र सहित इसी पुरीमे निवास करो, राजा हरितने विष्णुकी आज्ञासे उस पुरीको पूर्ववत बना दिया और मंदिर बनाकर विष्णु भगवानकी स्थापना करवादिया, और वहां प्रति वर्ष उत्सव होने लगा, कुछ कालके पश्चात राजा हारित काल धर्मको प्राप्त भये उनके वंशके ब्राह्मण अबतक केशव भगवान् की पूजा करते हैं भूतपुरीमे, वैसाख सुद द्वादसी, और चतुर्थी के मृगशिरा नक्षत्रमे चैत्र सुदी ७ और पूर्णिमाको अनंत सरोवरमे स्नान करनेसे अनेक फल लाभ होते है.

श्रीरामानुजस्वामी, की संप्रदाय की ११७ अध्यायकी " प्रपन्नामृत " नामक पुस्तक है उसमे लिखा है कि तुडीर देशमेभूत पुरीनामक नगरी है उसमे हारीत गोत्रके. केशवाचार्य नामक एक ब्राह्मण रहतेथें, उनकी स्त्रीकानाम कान्तिमती था चैत्र सुद पांचम को जब मेष,रापीपर सूर्य थे गुरुवार को आर्द्रा नक्षत्र मे मध्यान समय, कान्तिमती के गर्भसे शेषजीके अंश श्रीरामानुज स्वामीका जन्म भया पिताने आठवे वर्ष मे उन्हे विद्यारंभ करा या ओर १६ वर्ष की अवस्थामे रक्षाकांवा नामक कन्यासे उनका विवाह करादिया कुछ कालके पीछे स्वामीजीके पिता केशवजीका देहान्त होगया तव रामा-

नुज स्वामी अपनी स्री और माता के साथ भूतपुरी छोड कांची पुरीमे हरने लगे, और वहा यादव प्रकाश, नामक प्रसिद्ध पंडितसे, विद्याध्ययन करने लगे, उसी समय कांचीपुरी के राजाकी कन्याको ब्रह्म पिसाच की बाधाहुई राजा यादवप्रकाशजीको बुलाया पंडित यादवप्रकाश रामानुजादि शिष्यो साहित वहां गये पंडित-जीके अनेक यत्न करने परभी पिसाच नही हटा तब रामानुज स्वामी अपना चरण छुलाकर उसे छुडादिया राजा प्रशन्न होकर रामानुजस्वामीजीको बहुतसा धन दिया और उनका वडा सतकार किया यह देखकर पंडित यादवप्रकाशने अपना वडा अपमान समझा, स्वामीजीका मौसेरा भाई गोविन्दाचार्य्यजीभी आकर वहां रामानुज-स्वामीके संग विद्या पढने लगा. श्रीरंगजीमे "यामुनाचार्य" त्रिदंडी संन्यासी रहतेथे. उन्होने अपने शिष्योके मुखसे रामानुजस्वामी की प्रशंसा सुनकर उनको शिष्य करने की इच्छा की, और कांचीमे आकर उनको देख उनकी बडी प्रशंसा, की एकदिन रामानुजस्वामी यादवप्रकाशकी सेवा कर रहेथे उसी समय श्रुति के एक अशुद्ध अर्थ करने के कारण रामानुजस्वामीने उनको त्याग करदिया उस समय यादवप्रकाश उनसे शास्त्रार्थ करने लगे किन्तु परास्त हुये, अन्त मे रामानुजस्वामी कांचीपुरी

दिन हमारी स्थापना करदो और तुम अपने पुत्र पौत्र सहित इसी पुरीमे निवास करो, राजा हरितने विष्णुकी आज्ञासे उस पुरीको पूर्ववत बना दिया और मंदिर बनाकर विष्णु भगवानकी स्थापना करवादिया, और वहां प्रति वर्ष उत्सव होने लगा, कुछ कालके पश्चात राजा हरित काल धर्मको प्राप्त भये उनके वंशके ब्राह्मण अबतक केशव भगवान् की पूजा करते हैं भूतपुरीमे, वैसाख सुद द्वादसी, और चतुर्थी के मृगशिरा नक्षत्रमे चैत्र सुदी ७ और पूर्णिमाको अनंत सरोवरमे स्नान करनेसे अनेक फल लाभ होते है.

श्रीरामानुजस्वामी, की संप्रदाय की ११७ अध्यायकी " प्रपन्नामृत " नामक पुस्तक है उसमे लिखा है कि तुंडीर देशमे भूत पुरीनामक नगरी है उसमे हारीत गोत्रके. केशवाचार्य नामक एक ब्राह्मण रहतेथें, उनकी स्त्रीकानाम कान्तिमती था चैत्र सुद पांचम को जब मेष राषीपर सूर्य थे गुरुवार को आर्द्रा नक्षत्र मे मध्यान समय, कान्तिमती के गर्भसे शेषजीके अंश श्रीरामानुज स्वामीका जन्म भया पिताने आठवे वर्ष मे उन्हे विद्यारंभ करा या ओर १६ वर्ष की अवस्थामे रक्षाकांवा नामक कन्यासे उनका विवाह करादिया कुछ कालके पीछे स्वामीजीके पिता केशवजीका देहान्त होगया तव रामा-

नुज स्वामी अपनी स्री और माता के साथ भूतपुरी छोड कांची पुरीमे हरने लगे, और वहा यादव प्रकाश, नामक प्रसिद्ध पंडितसे. विद्याध्ययन करने लगे, उसी समय कांचीपुरी के राजाकी कन्याको ब्रह्म पिसाच की बाधाहुई राजा यादवप्रकाशजीको वुलाया पंडित यादवप्रकाश रामानुजादि शिष्यों सहित वहां गये पंडितजीके अनेक यत्न करने परभी पिसाच नही हटा तव रामानुज स्वामी अपना चरण छुलाकर उसे छुडादिया राजा प्रशन्न होकर रामानुजस्वामीजीको वहुतसा धन दिया और उनका वडा सतकार किया यह देखकर पंडित यादवप्रकाशने अपना वडा अपमान समझा, स्वामीजीका मौसेरा भाई गोविन्दाचार्य्यजीभी आकर वहां रामानुजस्वामीके संग विद्या पढने लगा. श्रीरंगजीमे "यामुनाचार्य" त्रिदंडी संन्यासी रहतेथे. उन्होने अपने शिष्योके मुखसे रामानुजस्वामी की प्रशंसा सुनकर उनको शिष्य करने की इच्छा की, और कांचीमे आकर उनको देख उनकी वडी प्रशंसा, की एकदिन रामानुजस्वामी यादवप्रकाशकी सेवा कर रहेथे उसी समय श्रुति के एक अशुद्ध अर्थ करने के कारण रामानुजस्वामीने उनको त्याग करादिया उस समय यादवप्रकाश उनसे शास्त्रार्थ करने लगे किन्तु परास्त हुये. अन्त मे रामानुजस्वामी कांचीपुरी

के हस्तगिरीमे चले गये, रंग पुरके श्रीयामुनाचार्य स्वामीने अपने शिष्य पूर्णाचार्यजी, को रामानुजस्वामीके बुलाने को भेजा, रामानुजस्वामी यामुनाचार्य स्वामीको मिलने श्रीरंगपुरको चले जब यामुनाचार्य स्वामी, रामानुजस्वामीको लेने आगे चले और कावेरी नदीके तटपर पहुंचे होंगे की वहीं तटपर यामुनाचार्य स्वामीका देहात होगया, उस समय रामानुजस्वामी एक मील दूर मार्गमे थे, जब रामानुजस्वामी का सीघ्र वहा पहुंचना हुवा तब देखा कि यामुनाचार्य स्वामीका मृत शरीर तीन अगुली ऊंची किये पडा है उसका आशय यहथा कि बौधायन मतानुसार ब्रंह्मसूत्रादि का भाष्य बनाओ, दिल्लीका यवनेश एक भगवत् मूर्ती ले गयाहै वो लाओ, और दिग्विजय करके विशिष्ठा द्वैत मतका प्रचार करो.

स्वामीजीने प्रतिज्ञा करीके मैतुमारी इच्छा पूर्ण करूंगा पीछे स्वामीजी कांचीपुरीमें आये, कुछ समयके पीछे उन्होने कांचीपूर्ण, के उपदेशानुसार रंगपुरमे जाकर स्वामीपूर्णाचार्य, जीसे श्रीवैष्णव के पंच संस्कार (ऊर्द्धपुंड्र-मुद्रा-माला-मंत्र. और विचार) से दीक्षित होकर विद्या पढी, कुछ कालके पीछे कूपसेजल भरने के समय, पूर्णाचार्यकी स्त्री, और रामानुजस्वामी, की स्त्री

दोनोसे कलह होगया, रक्षकांवा के झगडालू स्वभावसे पहिलेहीसे स्वामीका मन खिच गया था, स्वामीजी स्रीको उसके मा बाप के घर भेजकर और अपना धन सपत्ती घर छोडकर त्रिदंड सन्यास ग्रहण किया, कांचीपूर्ण स्वामीने प्रसन्न होकर उन्हे " यतिराज " की पदवीदी. एक समय रामानुजस्वामी के भुजापर संखचक्रका चिन्ह देखकर यादव प्रकाश वडा आक्षेप किया, उस समय रामानुजस्वामी के शिष्य कुरेस स्वामीने यादव पंडित कोशास्त्रार्थ मेपरास्त किया तव यादव पंडित ज्ञान पाकर गृहस्थ आश्रम छोडके रामानुज मत ग्रहण किया उस समयसे उनका नाम गोविन्दास रखा जिनोने "यतिधर्मसमुच्य" नामक ग्रन्थ बनाया, कुछ समय के पीछे यामुनाचार्यस्वामी के पुत्र वर रंगस्वामीने रामानुजस्वामी कोलाकर रंगनाथभगवान को अर्पण किया स्वामीजीने मालाधार नामक पडितसे शठ कोपाचार्यस्वामी कृत " सहस्रगीतिका " व्याख्यान सुना पीछे स्वामीजी देशाटन को निकले. और वेंकटागिरी होते उत्तरको चले और दिल्ली वाद्रिकाश्रम होते हुये " अष्टसहस्र " नामक गाममे आये. और वर्दाचार्य तथा हेवश नामक अपने दो शिष्यो को मठाधिपति नियुक्त किया. और हस्तगिरी मे पूर्णाचार्य आदिकसे

मिलकर कपिलतीर्थ मे जाकर वहां के राजा विठ्ठलदेव को अपना शिष्य बनाया, राजा तोंडिल मंडल आदि कई गाम स्वामीको दिया, फिरवे रंगननर लौट आये पछि रामानुजस्वामीने वेदान्तसूत्र, पर श्रीभाष्य, वेदान्त दीप, वेदान्तसार, वेदान्तसंग्रह, और गीता भाष्यादि वहुत ग्रन्थ बनाये, पीछे शिष्यो सहित चोलमडल, पाड्यमंडल, कुरंग, इत्यादि देशोमे जाकर वैष्णव मत का प्रचार किया और कुरंग देशके राजाको दीक्षित करके केरलदेश (मलेवार) के पंडितोको जीता.

पछि क्रमसे द्वारिका, मथुरा, काशी, अयोध्या, वाद्रिकाश्रम, नैमिषारण्य, वृंन्दावन, आदितीर्थोमे होकर फिर द्वारिका आये और फिर पुरुषोत्तमक्षेत्र (जगन्नाथपुरी) मे पहुंचकर बौद्धोको परास्त कर रामानुजस्वामी एक मठमे रहने लगे वहमठ अवभी समुद्रतटपर " रामानुजकोट " नामसे प्रसिद्ध राजगोपाल मठके अधिकारमे है. मेरेसे राजगोपाल मठके उत्तराधिकारी श्रीगदाधररामानुजदास महोदय, कहतेथें कि इसस्थान मे रामानुजस्वामी टिकेथे, मै श्रीजगनाथपुरी संवत १९६१ मे गया था और " श्रीराघोदास " मठमे टिकाथा, पीछे स्वामीजी वैंकटगिरिमे आये पीछे चोलदेशीय राजा क्रमीकंठ जो शैव था उसने स्वामीको शास्त्रार्थ

के लिये बुलाया अन्तमे परास्त हो गया. पीछे स्वामीजी भक्तनगरमे कुछ दिन रहे पीछे स्वप्नमे उनको भगवत् मूर्तीने दर्शन दिया.

जिन्हे ये सन १०९० ई० मे पौष शुक्ल चौदस पुनर्वसु नक्षत्रमे यादवाचलकी छिपी प्रतिमा जो स्वप्नमे दर्शन हुआथा उसे निकाला, और वहा प्रतिष्ठा करवादी जो मैसूर राज्यके "मैलकोटा" नामक ग्राममे है. अन्तमे स्वामीजीने अपने शिष्योसे कहाकि अब चार दिनमे मै परम धामको जाऊंगा तब शिष्य वर्ग व्याकुल होकर पृथ्वीमे गिर शरीर छोडनेकी तजवीज करने लगे तब रामानुजस्वामीने सोगन (सपथ) दीया की हमारे वचनका निरादर करोगे तो तुमको पाप लगेगा. शिष्योने कहा कि हम लोग जैसे शरीर धारण करै उसका उपाय आप करदेवे तब रामानुजस्वामी अपना विग्रह निर्माण कराय भूतपुरीमे केशव भगवानके समीप स्थापन करदिया रामानुजस्वामीके अनेक विग्रह देश देशान्तरमे स्थापित भये. इनमे भूतपुरी 'रंगपुरी' यादवाचल तीन स्थानमे मुख्य तथा भूतपुरीकी प्रतिमा सबमे प्रधान समझी जाती है.

चैत्र मासके आर्द्रा नक्षत्रमे अभीषेक करानेसे मनुष्यको विष्णु लोक मिलताहै उसके पीछे माघमास के

सुद दसम शनीवारको मध्यान समयमे श्रीरामानुजस्वामीजीने १२० वर्षकी अवस्थामे रगपुरीमे अपना शरीर छोड़कर विष्णुलोकको प्रस्थान किया.

दानपत्रादि और दक्षिणके राजाओके घरके लेखोसे विदित होता है कि सन ई. के ११ मी सदीके किसीचरनमे उनका जन्म हुआथा और १२ मी शदीमे वःथे रामानुजस्वामीके शिष्य श्रीअनन्ताचार्यजीकी वनायी हुई " वेंकटांचलइतिहास माला " नामक एक संस्कृत पुस्तक है उसमे लिखा हैकि रामानुजस्वामी सके ९३९ सन १०१७ ई० मे तुडीर मंडलके भूतपुरीमे जन्म लिया प्रपन्नामृतमे लिखा है कि १२० वर्षकी अवस्थामे देहान्त हुवा दोनोके मिलान करनेसे सन ११३७ ई० मे उनका देहान्त सिद्ध होता है.

रामानुजस्वामीने विष्णुको एक ईश्वर होनेका उपदेश-दिया और माया, जीव, ईश्वर प्रथक प्रथक माना रामानुज सप्रदायके, प्रथम आचार्य शठ कोप स्वामी थे जिनका जन्म पाड्यदेशके ताम्रपर्णी नदीके तटपर कुरगानगरीमे हुआथा उनके पिताका नाम कारिओर माताका नाम नाथनायकी था. इस संप्रदायमे रामानुजस्वामीसे पहिले, नाथार्य, पंकजाक्ष, राममिश्र, यामुनाचार्य, गोष्ठीपूर्ण, महापूर्ण, (पूर्णाचार्य,) माला-

धारगुरु, श्रीशैलपूर्ण वररग, और कांचीपूर्ण इन्ही दस आचार्योंको पूर्वाचार्य कहते है इनके अतिरिक्त इस संप्रदायमे, काशार, भूत, महत, भक्तिसार, शठारि कुलसेखर, विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाहन, और चतुःकविन्द्र, दस सूरि हुये इनमे भट्टनाथकी कन्या गोदादेवी, और रामानुजस्वामीको मिलाकर १२ दिव्य सूरी कहे जाते है कोई कोई गोदादेवीको छोड मधुर कविको मिलाकर १२ कहते हैं.

१० पूर्वाचार्य और १२ सूरी मिलकर अनेक संस्कृत ग्रन्थ बना कर धर्मका विस्तार किया ३०० सौ वर्ष हुये कि भक्तमाल नामक पुस्तक नाभाजी बनाया उसमे ३६–३७–३८ वे छप्पैमे लिखा है कि श्रीरामानुजके पद्धतिका प्रमाण अमृत के समान फैला, रामानुज सम्प्रदाय के लोग आचारी कहे जाते है इनका मत विशिष्टाद्वैत अर्थात् माया, विशिष्ट, ब्रह्म, और उपास्य, ब्रह्म साकार नारायण है. ये लोग अपनी भुजापर तप्त सख चक्रकी छापलेते है ललाट पर सपेद ऊर्द्ध पुण्ड्रतिलक करते है और बीचमे पीली अथवा लाल श्रीकरते है और हमेसा पडदेके भीतर इतर वर्णकी दृष्टी बचाकर भोजन करते है इस मतमे मुख्य दोसाखा

अर्थात् तिंगल और वडगल तिगल नाशिकाके त्रतियांशेस तिलक करते है और मुख्य ईश्वर भक्ति मानते है साष्टांग एक वखत करते है रामानुज स्वामीके साथ साथ वरवर मुनी स्वामीकी विसेस उपाशना करते है. तिंगलोंकी आठ गद्दी है जिनको वे " अष्ठादिगज " कहते है यद्यपि कांचीपुरी श्रीरंगादि मे गृहस्थ गद्दी और वेंकटगिर, यादवाचल, तोताद्रि विरक्त आचारी कीं अर्थात् त्रिदंडी सन्यासीयोंकी गद्दी है तथापि तोताद्रि की गद्दी मुख्य मानते है इसीसे बहुतसे वैष्णव फिरसे विसेश करके वैरागी लोग वहां संखचक्र लेते है.

वडगल साखावाले रामानुज स्वामीके अतिरिक्त श्री वेदान्ताचार्य स्वामीकी उपाशना करते है जिन्हे करनाटकके राजाने शिवशर्म्मा शैवब्राह्मणके शास्त्रार्थमे शिवशर्माके परास्त होनेपर श्री वेदान्ताचार्य स्वामीको—" सर्वतन्त्र स्वतंत्र " की पदवी दी तथा एक अन्य शास्त्रार्थ मे राजा उनको " वेदान्तकेशरी " की उपाधि और बहुत धन देकर राजाने उनका मत अर्थात् रामानुज मत गृहण किया, दोनो, पदवी अभीतक उनके नामके साथ चली आती है.

इस मतके लोग दो वखत शाष्टांग करते है और कर्मकांन्ड प्रधान मानते है और नाशिकाके मूलसे

तिलक करते है और मैसूरमे प्रकाल गद्दी तथा, त्रिविल्लुर की गद्दी तथा मुनित्रय आदि गद्दी वडगल मतमे प्रधान समजी जाती है.

रामानुज संप्रदाय के वैष्णव भारत वर्षके सव प्रान्तोमे है परंन्तु मदरास हातेके तैलंग कर्नाटक मलेवार आदि अगरेजी राज्य और मैसूर. तिरवाकूर आदि देशी राज्योमे ए लोग वहुत हैं अंगरेजी और देशी राज्योंमे मद्रास हातेमे एलोग उच्च कर्मचारी हाई कोर्टके जज्ज तथा गवर्नर के कौशिलमे सलाहकारक है एलोग सर्वदा दाढी मूछ मुडवाते है दक्षिण देशमे स्थान स्थानपर दरवाजों पर रामानुज संप्रदायके तिलक और संखचक्र लिखे अथवा खुदे रहते है, इस संप्रदायमे संस्कृत पढनेका वहुत प्रचार है संस्कृतके अच्छे अच्छे विद्वान ए संप्रदायमे है.

शैवलोग इनके तिलक छापको अप्रमाणिक कहते है परन्तु इसके प्रमाण नीचे लिखी कथासे ज्ञात होगे.

पद्मपुराण (भूमिखंड ७६ अध्याय) राजा ययाति की आज्ञासे भूमंडल के सव मनुष्य भागवत होकर विष्णुके ध्यानमे परायण हुये सवके मंदिर पताकाओ तथा संखचक्र गदायुक्त हु ए ब्राह्मण आदिक संपूर्ण

वर्णके लोग शंखचक्र तथा बाणा दिसे अंकित होगये पद्मादिसेचिन्हीत होकर प्रकाशित होने लगे, सबके गृहके द्वारों पर संखचक्र तथा पद्मादिके चिन्ह विध्यमान भए नारियोने अपने अपने द्वारोंपर सखादिके चिन्ह बनाये, [स्वर्गखंड ७० वा अध्याय] शालग्राम और चक्राकित ब्राह्मण के समीप श्राद्ध करनेका उत्तम स्थान है.

(पातालखंड ७९ वा अध्याय) चांन्डालभी ऊर्द्ध रेखासेयुक्त उर्ध्वपुड्र अपने ललाटपर देनेसे नि सन्देह शुद्ध आत्मा हो जाता है और पूजा करने योग्य होता है.

(उत्तरखंड ७५ वा अध्याय) गंडकी नदीके पास जहाँ शालिग्राम उत्पन्न होते है नारायण नित्य अस्थित रहते है जो मनुष्य संखचक्रका चिन्ह धारन करके उनके समीप निवास करता है वह मरनेपर चतुर्भुज होकर विष्णु लोकमे जाता है प्रति वर्ष असाढ मासमे शिवजी वहा निवास करते है श्रेष्ट ब्राह्मणोको उचित है कि अषाढमासमे वे वहाँ जाकर सख चक्रादीके चिन्होको धारन करे उनको बाए हाथमे सख और दाहिन हाथमे चक्रका चिन्ह धारन करनाचाहिये, इस्से उनकी मुक्ती होती है.

(२२४ वा अध्याय) शिवजी पार्वतीसे कहा कि विष्णु कि १६ प्रकार की भक्ती है.

(१) सखचक्रका चिन्ह धारण करना (२) उर्ध्व पुन्डूका धारण (३) उसके मंत्रोका परिग्रह (४) अर्चन (५) जप(६)ध्यान(७)नामस्मरण (८)कीर्तन (९)श्रवण(१०) वदन(११) चरण सेवण (१२) विष्णुका तीर्थ लेना (१३) उनका प्रसाद भोजन (१४) उनके भक्तोकी सेवा (१५) द्वादसी व्रत करना (१६) तुलसी वृक्ष लगाना ब्राह्मणोको उचित है कि अपने भुजावोंपर अग्निसे तपे सखचक्र धारण करे अथवा सख मात्र तथा सखचक्र अथवा पांचो आयुध धारण कर ब्राह्मणके कर्मका विधि युक्त आरंभ करे ऐसा करनेसे उनको विष्णुका परपद मिलता है तथा मोक्ष प्राप्त होता है. चक्र सखसे चिन्हित भुजा वाले ब्राह्मणको गऊ. पृथ्वी. सोना दान देना उचित है. ब्राह्मणोको तपेहुए संखचक्र और स्त्रियों तथा शूद्रोको सुगंधित चन्दनसे संख चक्र धारन करना चहिये वर्णसे वाह्यभी वैष्णव त्रिभुवनको पवित्र करताहै ब्राह्मण वाई भुजामे संख और दहिने मे चक्र धारण करे.

इसीभांति महोपनिषद, तथा शाम और यजुर्वेदमे चक्रादि धारण का विधान कहा है जिनके कंठमे तुलसी और कमलाक्षकी माला भुजावो पर संखचक्रका चिन्ह और ललाटमे उर्ध्वपुड्र तिलक रहता है वे लोकको पवित्र करते है. वैष्णवोको उचित है. कि अपनी स्त्री पुत्र नोकर पसु आदिकोभी संखचक्रादि से अंकित करादेवे (२२५ अध्याय) उर्ध्वपुंड्र के मध्यमे लक्ष्मीयुक्त जनार्दन भगवान् विराजते है इस कारणसे जिस्के शरीर मे उर्ध्वपुड रहता है उसका शरीर भगवान का निरमल मंदिर है उर्ध्वपुंड्र धारन करनेवाले मनुष्यको देखकर आदमी सब पापोंसे छूट जाता हैं, ब्राह्मणका तिलक उर्ध्वपुंड्र क्षत्रियोंका पदाकार और वैश्योका तथा शूद्रोंका त्रिपुंड्र है क्षत्री आदि वैष्णवभी ऊर्ध्वपुंड्र धारन कर सकते हैं किन्तु ब्राह्मणोंको त्रिपुंड्र कभी न धारन करना चाहिये.

सन ११३३ ई० मे रामानुज स्वामीने वलाल वंशके राजा हयशालको जैन धर्मसे वैष्णव धर्ममे प्रवृत्त किया राजाने रामानुज स्वामीको अष्ठ ग्रामके सूबेके साथ श्रीरंगपट्टन टापूको दे दिया रामानुज स्वामीजी उसके प्रबंन्धके लिये अनेक कर्मचारी रक्खे ऐसा प्रसिद्ध हैकि उन कर्मचार्योंके वंसधरोंमेसे एकमे विजयानगरम्के

राजासे आज्ञा लेकर सन् १४५४ मे मिट्टीका एक मजबूत किला बनाया और कलसवाडी जो वहासे ३ मील दूर था वहा वहुत जैन मंदिर थे उन्ही मंदिरोंके सामान्से रंगपट्टनके मंदिरको बढाया. भूतपूरीको उस देशके लोग श्री प्रेम दूर कहते है.

श्रीरामानंद स्वामीका मत.

श्रीमत् रामानंन्द पद वन्दों वारंवार
जिनकोयश पूरणशशि पसरयो सबसंसार

रामानुजस्वामीके शिप्य देवाचार्य थे उनके हरियानंन्द पीछे राघवानंन्द और राघवानंन्दजीके पीछे स्वामी रामानंदजी हुए लगभग ३०० वर्ष हुये भक्तमाल नामकी पुस्तक भाषा पद्यकी ' नामा ' जीने बनाई है उसमे लिखा है कि रामानंन्द स्वामीने संसार सागर तरनेके लिये पुल बांध दिया स्वामी रामानंन्दजीके शिप्योंमे अनन्तानन्द, कबीरजी, सुखानंन्दजी, सुरेश्वरानंन्दजी, योगानंन्द, नरहरीयानद पीपा (राजा) भवानंन्द, रामदास धना, सेना, और गालवानन्द १२ प्रसिद्ध शिप्य थे एक एकने लाखो करोडो मनुप्योका उधार कीया था

और सभी नामी कवी और विद्वान थे अनन्तानंन्द-जीका चरण स्पर्स करके योगानंन्द, गएस, कर्मचंन्द्र, अल्ह, पैहारी, रामदास आदिके गुणोकी भारी महिमा हुई. स्वामी रामानंन्दजीने, श्री संप्रदाय चलाया जिस्को रामानंदी संप्रदायभी कहते है इस संप्रदाय-का सीधान्त श्री रामानुजी वीसीष्टा द्वैत मतसे मील-ताहै, रामानंदी संप्रदायके लोग वैरागी साधारणी वैष्णव कहेजाते है इस संप्रदायकी उप्तती श्री लक्षामि-जीसें हुइ है ओर यह संप्रदाय तीन अनी, सात अखा-डाके अंतर गत है और इसमें ३६ द्वाराके वैष्णव है, इनका रूगवेद है, सुक्ल वर्ण है, अच्युत गोत्र है, अनंत साखा है, और तोताद्रीमे मुख्य गादी है. ए संप्रदायके साधु द्वादस तीलक करते है.

स्वामी रामानंन्दजीके पीछे अनन्तानंन्द, कृष्णदास, अग्रदास, नारायणदास (भक्तमालके बनानेवाले, नाभाजी) और गोविन्दास आदि जयपुर राज्यके गलिता गद्दीमे और सीकरके रामगढमें हुये थे भक्तमालके ४२ वे छप्पैमे लिखा हैकि अग्रदासका ऐसा मत हैकि सर्वदा हरि भजन करना उचितहे, उसके तिलकमे जिसको सवत् १७६९ मे प्रियादासजीने बनाया था लिखाहै कि जयपुरके महाराज मानसिहजी अग्रदासके दर्शनके लिये उनकी कुटी (गलिता गद्दी) मे आये अग्रदासजी

जों पत्तोंके फेकने बाहर गये थे, भीड देखकर आम्र-वृक्षके नीचे वहीं बैठ गये, नाभाजीने अग्रदासजीको आये देखकर प्रणाम किया, इस लेखसे जान पडता है कि अग्रदासजी और नाभाजी सोलमी सद्दीमेथे और स्वामी रामानंन्दजी चौदमी सद्दीमे थे क्योकी आंवेर (हाल जयपुर) के राजा मानसिहजी, मुगलसम्राट अकबरके सूबेदार थे जिन्होने सन १५९० मे वृन्दावनमे गोविन्देवजीका मंदिर बनवाया.

रामानंदी वैष्णव श्री रामचंद्रजीकी मुख्य उपासना और अयोध्याजीको मुख्य तीर्थ मानतेहै ए संप्रदायके लोग भारत वर्षके सब प्रान्तोमे है भारत वर्षका कोई ग्राम ऐसा नहीं है जिसमे साधु वैष्णव का स्थान न होवे रामानंदी साधु आपुसमे मिलने पर दंडवत कहकर प्रणाम करते है क्षौर नहीं करानेकी विसेस चाल है पच केस रखते है और हमेसा तुलसीकी कंठि अथवा हीरा (तुलसीका एक मणिका) पहिरनेकी चाल है और आपुसमे साधुकी पहीचानके वास्ते धाम क्षेत्र, द्वारा, आखाडा, पच सस्कार. आदि कई संकेत वातेहैं सो पहीचान करनेके वास्ते पूछी जाति हैकि यह साधु है या नहीं. प्राग. गोदावरी. उज्जयन हरिद्वार ए चार वडे मेला भराते है ए मेलोमे कई लाख साधु डका निशान

सहित स्नानके लिये एकट्ठे होतेहैं इनमे लाखो साधु हाथी घोडा ऊंटादि रखकर जमात बांधकर पैदल फिरतेहैं निशान कीमती जरीके होतेहैं जिनमे एक तरफ हनुमानजी और दुसरी तरफ गरुडजी या सुर्यनारायण रहतेहै दिगंबर अखाडेके निशान पचरंगी वादलाके होतेहै और नीरवाणीका नीसान पीला जरीका होता हैं और नीरमोही का नीसान सपेत जरीका होता है और तीनो अंनीकी पताका एकही पच रंग रहती है. ए नीसान जो नागा होवे जीनकु चडावपर मालादी जाती है वोही रख सकते हैं अन्य कीसीके पास नही रहता हैं. इनमे प्रथम जो जमातमे दाखील होता है उसै छोरा कहते हैं वाद ३ वर्ष तक वंदगीदार कहते हैं अर्थात ए दोनोका काम ऊंट चराना, प्रभाती दतून) लावनो वर्तन साफ करना इत्यादि ३ वर्ष पीछें वंदगीदारसे " हुरदंगा " होताहै अर्थात, पुजा रसोई आदि काम करताहै और नीसान उठावताहै ३ वर्ष हुरदंगा रहने पर नागा(अखाड मल)होतेहैं अर्थात निशान डंका सहित जमात वांधकर केश संस्कारसे रहित होके जडावरखके देश विदेस फिरतेहै और वो सब चडाव पर अेकत्रीत होतेहै.

सब मिलिएकजागा रहै कारिके वडी जमात
याते संत महंतमे नागनकी वडी वात.

क० राखैं सौखसान चढैं नौवत निशान कारिवेको अभिमान सजै अस्त्र शस्त्र हाथहैं—संग इभघोरे रण मुरत न मोरे औ भुकावे कडे तोड़े रहें रुष्ठ पुष्ट गातहैं सुकवि सुपाल पटे वार्जीके देखावे हाथ काहू न डरात जंगजोरे जित जातहैं। माल भले खात संग राखत जमात याते जगमे विख्याति वडी नागनकी बातहै.

बाद " अतित " संज्ञा होजाती है ए अतीत उनकु कहतेहै जीनके नीचे कइनागा होवे और उसके वाद महा अतित सिद्धादि संज्ञा होतीहै ए लोगमे आपुसमे हमारे राम कहकर वातचीत करने की चाल है स्वामी रामा-नंन्दजीके विषयमे " मि. वारली साहव, तथा टी. आर, मकी साहवने लिखा है. कि उनका उपदेश वडा प्रवल था वे निःस्पक्षपातीथे वे धार्मीक थे जीवपर दया करथे और परोपकारी थे "

ए संप्रदायके लोग कवीरपंन्थि नानक पंथी, रामस्नेही आदि पंथोके अनुयायोंके साथ वैठकर भोजन नही करते है केवल रामानदी संप्रदायके साधुके हाथकी करी हुइरसोइ पावतेहै. अयोध्या, जगन्नाथपुरी. जनकपुर ब्रह्मपुर त्रीपती-मटीयानी आदिक वहुतसे स्थान लक्षाधिपति और परमार्थी है इस सम्प्रदायके वैष्णव नैष्टीक

ब्रह्मचर्यवृत पालतेहै और केवळ इश्वरकी भक्ती करतेहै इश्वरप्रीत्यर्थ सेवक भावरखके अखड भक्तो करतेहे इस सप्रदायमे हजारो माहात्मायोगी पुरूसहो गयेहै और अभीभी हजारो वीद्यमानहै मोक्षको देनेवाला इस संप्रदायके जेसा और कोइ सप्रदाय यह भारत वर्षमे नहीहै इस सप्रदाके वैष्णावोके जैसा अतिथी दान और कोइभी भुखेको भोजन देना ए यह येकही सप्रदायमे है इस सप्रदायमे चारो वर्ण दाखीलहो सकतेहै परन्तु रसोइ पुजा आदीक मुख्य कार्योमे ब्राह्मण सीवाय अन्य वर्णका वैष्णव दाखील नहीहो सकताहै. इस संप्रदायको श्रीरामानंदस्वामीने केवल जनसमाजके मोक्ष प्राप्तीके वास्ते आचार्य सप्रदायमेसे साधारणी सप्रदाय उत्पन्न कीया की इस संप्रदायका लाभ सर्व वर्णके लोक ले सके और सर्व लोक यह काकीद्‌ उत्तम साधु माहात्माओकी सत संगतीमे आयके मोक्षप्राप्त करे इस हेतुसे इस सप्रदायमे चारोवर्णके लोक दाखील हो सकते है इस सप्रदायमे पंच संस्कार लेनेसे साधु बनते है चार सन्कार अपने गुरुके पाससे लेते है और ताप संस्कार द्वारीका जायके लेते है द्वारीकाकी छाप लीये बीनापुर्ण साधु नहीं हो सकता है और वो रसोई पुजाके काममें भी नहीं आ सकता है.

वैरागियोमे एक रामसखे साधु हो गये है और बहुतसे पद्यकी रचना की है वे लोक शरीरसंस्कार अच्छा करते है रामचन्द्रजीकी मित्र भावसे उपासना करते है और कपालमे पीला बिन्दु करते है और नामके पिछे दासकी जगह शरण पद रखते है इस मतका एक स्थान मैहर राजधानीमे है प्रसिद्ध कवि " मधुर अली " इसी मतके थे जो राज्यरीवामे-रहतेथे,



श्रीमाध्वाचार्यका मत.

माध्वाचार्य कौनमनकारि, उरधारिकृष्णस्वरूप,
जिनके कृपाकटाक्षसे मुक्तिलहे बहुभूप

श्री माधवाचार्यजीका जन्म मद्रास प्रान्तके मैसुर राज्यमे कुडगुलीलासे २०—२५ मील पश्चिम "उडुपी" ग्राममे शाके १११७ मे हुआथा. ए महापुरुषको उनके मतके लोग ब्रह्मा अथवा 'वायु'का अवतार मानते है श्रीमाधवाचार्य और मेनाचार्य, दोभाई थे

दोनो भ्राता महापंडित और धार्मिक थे ऐसाभी वहुत लोगोका मत है कि श्रीरामानुज संप्रदायके मतके और श्रीशंकराचार्यजीके मतके अर्थात अद्वैत और विशिष्टा-द्वैत मतका एक समय वाग्युद्ध हुआथा उस समय महा पंडित श्री माधवजीको आचार्य उपाधिके साथ दोनो पक्ष वालोंने विवाद निर्णैके लिये मध्यस्थ, कवूल किया इसीसे इनको माध्वाचार्य कहते है इनका प्रथम नाम कोई माधव और कोई गोविन्दनारायण भट्ट कह ते है परंन्तु दोनो नाम कोई पुस्तकमे नही दीखते कृष्ण चरण भट्ट " माध्वधर्मसार " नामक पुस्तकमे लिखा है कि श्रीमाधवाचार्यजीको जव दोनो उपरोक्त विवा-दोमें जीव ब्रंह्मकी ऐक्यता तथा माया जुदा मानना इत्यादि उनके ध्यानमे नहीं आया तव उन्होने द्वैत मतका पाया दिया अर्थात माया रहित जीव ब्रह्मका अलग अलग मानना उनके मन और शास्त्रोके विचा-रसे द्रढ हो गया.

कुछभी होवे परन्तु ये महा प्रतापी दोनो भाई. राजा हरिहरकम्म और राजा बुकरायके उपदेशक और मत्रीथें श्रीमाध्वाचार्यजीका उपदेश ऐसा प्रवलथाकि कट्टर जैन हौसला वलाल वंसका राजा विष्णुवर्धनने जैन धर्मसे वैष्णव मत ग्रहण किया, केवल माधवाचार्यका

मत ग्रहण करनेसे उन्हें संतोष न हुआ किंतु धर्म बदलनेकें स्मरणार्थ वेलूर शहरमे अपने प्रसिद्ध कारीगर डंकनाचार्यके निरीक्षणमे, प्रशन्नकेशव भगवानका मंदिर बनवाया जो ऊपरसे नीचे तक कारीगरीसे भरा हुआहै वह मंदिर कारीगरीमे देखने योग्यहै.

श्रीमाध्वाचार्यजी अनेक निरीश्वरवादी बौद्ध और कुतर्की जैनोको परास्त कर अपना प्रताप जगतमे फैलाया.

माधवाचार्यजीकी गादी उडुपीमे हमेशा सन्यासी गादीश्वर होते है वे सिखा सूत्र रखते है और गेरुका रंगा वस्त्र पहिरते है हाथमे दो दंड रखते है क्योंकी जीव ईश्वर का भेद मानते है अनुमान होता है कि महात्मा गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीका अभिप्राय माध्वसम्प्रदायसे कुछ मिलता कुछ भिन्न है क्योंकी रामायणमे लिखा हैकि " जीवकी ईस समान " अर्थात जीव ईश्वरके समान नही मुख्य उपासना श्रीकृष्णपरमात्माकी करते है चंदनका उर्ध्व पुंड्र तिलक बीचमे कालीश्रीकी लकीर करते है जैसे कि ग्रन्थोमे लिखा है कि " कस्तुरी कालि तोर्द्धपुंड्र तिलकम् " अथवा कस्तुरी तिलक ललाट पटले इत्यादि और नित्यद्वादस

अर्थात १२ तिलक करते है जैसाकि, पुराणोंमे लिखा हैकि " ललाटे केशवं ध्यायेत नारायण मथोदरे वक्षस्थले माधवंच गोविन्दं कंठ कूवरे " येवंद्वादस पुंड्राणि, ब्राह्मण:सततंधरेत् " इत्यादि, रामानुज संप्रदायके माफिक इस संप्रदायमे तप्त शंखचक्र भुजाओं पर लेनेकी चाल है अंतर इतनाही है कि रामानुज संप्रदायमे केवल येकही वखत तप्त मुद्रा लेते है परन्तु माध्वमतके प्रतिवर्ष तप्त मुद्रा अर्थात संखचक्र लेते हैं यहां तककी बालक गर्भमे रहता है तव संखचक्र तप्तकर दूधमे ठंडा करके गर्भ धारिणी स्त्रीको वह दूध पिला देते हैं उसे " गर्भ संस्कार " कहते है ए लोग जो चक्रांकित न होवे उसे दानभी कभी नहीं देते और कहते है कि " भुजश्चक्र ह्युजातीनां सिरश्चक्रस्य देवतां अचक्र ह्युज देवानां पूजादानंच निस्फलम् ॥ इत्यादि मैसूर र[illegible]मे ए लोग बहुत है और उड्डुपी गाममे इनकी मुख्य[illegible] है, इस संप्रदायमे संस्कृत पढ़नेका बहुत प्रचार है उनमे अच्छे अच्छे पंडित है ए लोग बडे सान्त धर्मनिष्ठ होते है भक्ति बडी प्रबल है, कभी कीसीसे झगडते न दूसरे कि निन्दा करते. माधवाचार्य संप्रदायकी उतपत्ती ब्रह्मासे है इस संप्रदायका अथर्वण वेद है, सुक्लवर्ण है, अच्युत गोत्र है, अद्वैत साखा है और उडपीमे मुख्य गादी है,

इस संप्रदायके साधारणी वैष्णवोंके दोद्वारा है और तीनो अनीसातो अखाडा अंतरगत है इस संप्रदायका मुख्य सिद्धान्त ईश्वर तटस्थ है उसकी प्रेरणासे माया जगतको रचती है, इस सम्प्रदायवाले श्री कृष्ण भगवानकी उपासना करते है इस संप्रदायका प्रचार दक्षिण वंगाल, वंद्रावन आदीकमे वहुत है.

गौड संप्रदाय इन्हींके अंतर गत और कुछ भिन्नहै माध्व संप्रदायमे संस्कृतके वहुत ग्रन्थ हैं परतु वे इतने कठिनहै कि साधारन पंडितका काम उनमे नहीं है.

डाक्टर विल्सन साहेवने लिखा हैकि गुजरात देशका राजा कुमारपाल जो पंडित और कट्टर जैन था उसका जैन धर्म छोडानेवाले माध्वाचार्यजी है डाक्टर साहेव यहभी लिखा हैकि माध्व मतके संन्यासी शंकर मतके संन्यासीको नमस्कार करते है और आपुसमे एक दूसरेके यहा आया जाया करते है उडुपीके महंत शृंगेरीमे और शृंगेरीके महंत उडुपीमे जाते आते है माध्वचार्य धर्मसे गौड धर्मका घनिष्ट सनवन्ध है वहुत लोग गौड संप्रदाय माध्वके अंतर गत मानते है.

मदरास तरफके माध्व तप्त मुद्रा लेते है परन्तु महाराष्ट्रके माध्व लोग नहीं लेते.

निंबार्क मत.

निंबअर्कको ध्यान धरूं, मनमे अति अह्लाद,
जिनकी गादी आजभी, अहै सलेमाबाद

इस मतकी प्रधान गादी राजपूतानाके अंतरगत ढुंढार प्रदेशके शलीमाबादमे है पुरानी कहावत है कि एक समय उक्त संप्रदायके महंत तरफ़से भोजनके लिये बहुतसे शन्त निमंत्रित किये गये थे, मंदिरमे विसेष उत्सव के कारण रसोई होने प्रसाद ग्रहण करते कराते भगवान् मारतंड अस्ताचल चूडा विलम्बी हो (सूर्यास्त) गये इतनेही मे एक यति आया जब महंत महाराज भोजन करनेको सन्यासीको आग्रह किया तब परिव्राजक कहाकि मै सूर्यके अस्त होनेपर भोजन नही करता तब महंतजी कहा कि अभीदिन है और अपने हाथका कंकन निकालकर सामने के एक नींब के वृक्षके ऊपर फेंका नीमके ऊपर कंकन सूर्यके सद्रस प्रकाशित देख सभी लोगोंने दिन स्वीकार करलिया यतीभी भोजन कर उक्त महाराजके पाउमे पडा.

फिर जनसमुदाय नीवमे अर्क(सूर्य)देखकर " निंवार्क" और पांडित्यताके लिये " आचार्य " की उपाधिसे विभूषित किया इसीसे इस संप्रदायको " निंवार्काचार्य " की संप्रदाय कहते है इस मतकी मुख्य उपासना " श्री कृष्णराधे"की है तिलक चंदनका कृष्ण काला बिन्दू सहित है तुलसीकी कंठी बांधते है और नित्य द्वादस (१२) तिलक करते है साधू और महंत विवाह नहीं करते उस देशमें (मारवाड) उनके बहुत शिष्य है और उस गादीपर वहांके मनुष्यो की बडी पूज्य बुद्धी है इस मतके लोग नीमका वृक्ष कभी नही काटते न उसकी दतून तोडते कोई कोई नीमके वृक्षकी पूजा करते है. मतके नियम उत्तम है.

विष्णुस्वामीका मत.

विष्णुस्वामी एक प्रसिद्ध योगीथे उन्होने छ शास्त्र चार वेद पुराणादि अच्छी तरह अध्ययन कियाथा और निरतर एक विष्णु भगवानके उपासक होनेका लोगोंको उपदेश देतेथे एक वखत विष्णुस्वामी जगदीशपुरीको बहुतसे शिष्योंको लेकर दर्शन करनेको गयेथे उस

समय पुरीमे होलीका उत्सव था इस्से भीडके कारन से एक जगह शिष्यो साहित वैठ गये, कहते हैकि वहीपर आकर श्रीजगन्नाथजीदर्शन दिये हजारो मनुष्य श्री विष्णु स्वामीजीके ऊपर फूलोकी वर्षाकर धन्य धन्न कहने लगे विष्णु स्वामकि ऐसे अनेको चमत्कार है इन्ही स्वामीजीसे विष्णुस्वामीकी संप्रदायचली परंतु अव यह संप्रदाय उपदेशक न होनेसे क्रमसे घट रही है वहुत लोगोंका अनुमान व प्रमाण हैकि वलभीय संप्रदाय इन्ही विष्णुस्वामके मतके अंतरगतहै इसीसे तिलक उपाखनादि एक दुसरेसे मिलते हुये है.

श्रीवल्लभाचार्य मत.

श्रीवल्लभके चारित आति, सुखकर भक्तिऐन,
कृष्णचरनमे प्रीतिकरि, लहे यह चेतन चैन

तिलंगदेशमे "काकरवा" गाममे लक्ष्मणभट्टजी एक कर्मकांडी और पंडित ब्राह्मण रहतेथे उनके स्त्रीका नाम "इल्मागारू" था उनके एक पुत्र भया जिसका नाम्म कृष्णभट्ट था जव कृष्णभट्ट योग्य वयके गृहकार्य

जोग हुए तव लक्ष्मणभट्ट स्त्री सहित तीर्थ यात्राको निकले अनेक पुण्यतीर्थोमे और पवित्र नदियोमे स्नान करते हुए " चंपारण्य " नामक वनमे आये तव इल्मागरूके गर्भसे सं. १५३५ वैसाख वद ११ रवीवारको एक पुत्र हुआ जिस्का नाम भट्टजी "वदवक्र" रक्खा पीछे वल्लभ नामसे प्रसिद्ध हुए भट्टजी दो तीन पुत्र होनेपर सन्यास लेलिया अतमे उनकी अवस्था विशेष वृद्ध हो जानेसे काशीमे रहने लगे वहीं उनका देहान्त होगया उस समय वल्लभका वय केवल ११ वर्षका था.

वल्लभ संस्कृतमे न्याकरण, न्याय, वेदान्त आदिका अध्ययन समाप्त कर तीर्थयात्राको चले फिरते फिरते दक्षिण तरफ चले दक्षिणमे विजयानगरम्के राजा कृष्ण-रायल्के सभामे वैष्णव और शैवोंका शास्त्रार्थ होताथा वैष्णवोंके तरफ वल्लभभी सामिल हुये अंतमे शैवोंके परास्त होनेपर राजा वैष्णवोंको वहुत सत्कारके साथ एक एक योग्यताके अनुसार उपाधि प्रदानकी उसी समयसे वल्लभसे श्रीवल्लभाचार्य हुये आचार्यजीके प्रथम शिष्य दामोदरदासजी हुये आचार्यजी श्रीविष्णु स्वामी संप्रदायके शिष्यथे इसीसे इनको गोस्वामी कहतेहै अतमे श्रीवल्लभाचार्यजी अपनी गादी गोकुलमे स्थापन

थी इसीसे गोकुली गोस्वामी कहातेहै इन्होने अनेक शहरोंमे अपनी वैठक कायम की इनको कोई अग्नीका पुत्र और कोई अग्नीका अवतार मानतेहैं इन्होने इस मतका नाम पुष्टीमार्ग शुद्धाद्वैत रक्खा, इनके चमत्कार की वातें इनके तथा वंशवालोंके ग्रन्थोमे अनेकहै जैसे कि " वहुतसे शिष्योको संग लेकर अरण्यमे फिरने गये वहां शिष्योंको भूख लगी आचार्यजीके प्रभावसे एक वृक्षमे रोटी शाक अचारादि फलेथे सवोंने खायें " एक वखत मैदानमे कथा वांचतेथे वहुत वर्षा हुई परंतु उनके उपर छींटाभी न पडा " पांच सेर दूधकी खीर वनाये हजार वैष्णव (वानिया) भोजन किये श्रीनाथजी प्रत्यक्ष वातचीत करतेथे, इत्यादि इत्यदि अनेक चमत्कारकी वाते लोग कहते है वल्लभाचार्यजीके स्त्रीका नाम लक्ष्मीवाई था उनको दो पुत्र हुए गोपीनाथजी और विठ्ठलनाथजी, श्रीवल्लभाचार्यजीके गादीके लिये खटपट करते कराते दोनोमेसे एक अर्थात् गोपीनाथजीका देहान्त हो गया, और गादीके मालिक विठ्ठलनाथजी भये उनके ४ लडकी ७ लडकेथे साती अपनी अपनी गादी जुदे जुदे ठिकाने कायमकी जो ७ गादी कही जातीहै. सात पुत्र अर्थात् गिरधरराय, गोविन्दराय, वालकृष्ण, गोकुलनाथ, घन-

श्यामजी रघुनाथ और यदुनाथ, विठ्ठलनाथजी पंडित थे उन्होंने बहुतसे पुरानी पुस्तक सुधारी और नई बनाई इस मतको बहुत फैलाया, और बडे प्रतापी हुए.

इनकी सातो गादी अविछिन्न परपरासे चली आती है उनमें श्रीनाथजीकी गादी मुख्य समझी जाती है वहां के महाराजको टिकैत (तिलकायत) कहतेहै.

धन्न दैके पधरामनी करत राव उमराउ
घर बैठे पूजत सदा गोस्वामीनको पाउ

क.—ईश्वरके रूप भूप सेवत अनेक जिन्हे, राखत न उरमे भरोसो कही काई को, आसनको डारि जप माहिं बैठै तवनवतत्रिलोकी रूप देखही ताइको. भणै कविराज वृजरजको. रहत ध्यान आवे चली भेट घर बैठे सदा जाइको. पद्धति सवाई भोग भोगत सदाई याती, बडो सुखदाई वह धरम गोसाइको.

इस मतमे आचार्य आदि सब गृहस्थ होते है कृष्णके बालस्वरूपकी उपासना करते है और आपुसमे मिलते समय जयश्रीकृष्ण, जयगोपाल, कहते है. और कंठी बाधते है और कुकूका दो लीटीका खडातिलक करते है और गोपीचदनकी छापे लगाते है. भक्ती

पूजा उत्सवादि भोग सब बहुत उत्तम प्रकारसे करते है मुक्तीको गोलोक कहते है और कोई कोई आचार्यको " पूर्णपुरुषोत्तम " अर्थात कृष्णपरमात्मा मानते हैं. इस मतमे दोसौ बामन वैष्णवकी वारता, चौरासी वैष्णवकी वार्ताके अतिरिक्तभागवत परसुबोधिनी टीका, व्याससूत्र-भाष्य, जैमिनीसूत्रभाष्य, दीपानिबन्ध, पुष्टीप्रवाह मर्यादा, सिद्धान्त रहस्यादि, बहुत पुस्तके है कोई कोई कहते हैकि खाय पीकर यथेच्छ भोगादि से पुष्ट रहना इस लिये पुष्टीमार्ग नाम रक्खा है परतु कोई पुस्तकमे यह बात देखनेमे नही आयी इसवास्ते यह अर्थ हमको मान्य नही है क्योंकि मतका ठीक नाम शुद्धाद्वैत है इस संप्रदायसे देशको बहुत बडा लाभ यह भयाकि लाखो आदमी आस्तिक होगये है विष्णुपुजा बहुत उत्तम प्रकारसे करते है और कभी विवाद (निरर्थक) नही करते. मुख्य यात्रा मथुरा श्रीनाथजी है. जो लोग ब्रंह्म संबन्ध लेते है वे बडे पवित्र रहते है.

गौड मत.



श्रीगौरांग महाप्रभुहिं कैंराध्यान एकाचित्त, वंग ओडीसा भक्तिलहि, विसरायोनिजवित्त

कवित्त.

सामल वरण अरुणाई अधरन माथे चान्द्रिका धरन कल कुंडल करनमे ॥ फैलिरही तरुण किरिणि किसी आभा ओप आभरण वीच गरे मोतीकी लरनमे ॥ वरन वरन अतरन तर अंवरन राजत गुपाल कावि दरन दरनमे ॥ विघन हरन सुखसंपाति करन ऐसे राधिका रमणके चरणकी शरनमे ॥

नवधा भक्ती.

प्रथम भक्ति सतसंगकरे संतनको दूजे कथा सुने श्री गुपाल गुण गानकी ॥ ती जै गुरु ध्यावे चौथे मोहीको लडावे पाचें मंत्र जपि करे वेद वचन प्रमाणकी ॥ छठे दम शील वैराग्य कर्म धर्म साधै सातै मो मय जगत दास मोते अधिकानकी ॥ आठवे संतोष नवे सरलता आवे जव पावे नर नवधा भक्ति भगवानकी ॥

वंग (वंगाल) देशके नदिया शहरमे सन १४८५ ई० पंडित जगन्नाथमिश्रके घर उक्त ब्राह्मणके स्त्रीके गर्भसे गौरांग महाप्रभु जिनको कृष्णचैतन्य महाप्रभु अथवा कृष्णका अवतार कहतेहैं जन्म लिया, वाल्य अवस्थासे वे भक्तिका उपदेश करने लगे संपूर्ण वंगाल और उत्कल (उडीसा) मे विष्णुकि भक्तीका उपदेश करते रहें. उनका विवाह एक संतकी पुत्रीसे हुआथा. परंतु उनका ज्ञान वैराग्य इतना प्रबल था कि गृहस्था-श्रममे चित्त न लगाकर २४ वर्षकी युवा अवस्थामे उडीसा देशमे चले गये, और १५ वर्ष तक विष्णुकी उपाश-नाका उपदेश कर सन १५२७ ई० मे परमधामको चले गये.

चैतन्य महाप्रभुका ऐसा मत है कि सबजातीके मनुष्य विष्णूके समान पुजाके अधिकारी है सचाई और सर्वदा भजन करना उनका मुख्य उपदेश था, उनके उपदेशके अनुसार केवल भक्तीसे नही किन्तु उसके साथ ज्ञान होनेसे मोक्ष होता है. मोक्षका अर्थ केवल वासनाओंका नष्ट होनाही नही है किंतु शरीरके दुर्गुण और विकारका नष्ट होनाभी सामिल है इस मतके संत वहुतसे अपना विवाह करते है और कृष्णके मंदिरके निकट कुटुंब सहित निवास करते है और वहुतसे संत

बिरक्त रहते है चैतन्य महाप्रभुकी पूजा उडीसा और वंगालमे घर घर होती है.

लगभग ३०० वर्ष हुये नाभाजीने भक्तमाल नामक पुस्तक बनाई है उसमे लिखा है कि श्रीनित्यानंद कृष्ण चैतन्यकी भक्ति दशोदिसामे फैल गई उन्होने गौड देश (वगाल) के पाखंडको दूर कर वहांके मनुष्योको भजनमे निरत कर दिया और कृपाद्रष्टीसे असंख्य मनुष्योको सुगती दी, गौडिया संप्रदायकी भक्ति बडी प्रवलहै श्रीजगन्नाथजीके नाशिकामेभी इसी संप्रदायका तिलक धारण होता है ए लोग चंदन केसरादिका तिलक नासिकासे करते है और गलेमे तुलसीकी कंठी बाधते है रातदिन झोलीमे माला रख कर भजन करते है और म्रदंग झांझ वजाकर भजन करते है अर्थात् " गौराग महा प्रभुराधेश्याम अथवा गौराग महाप्रभु राधे कृष्णा " इत्यादि पुरीमे इस मतके कई मठ हैं जैसे कि वडा उडिया मठ, राधाकांतमठ गगामातामठ, इत्यादि कई धनी मठ है नादिया शहरमे एक मंदिरमे गौराग महा प्रभुकी मूर्ती है यात्रीलोग प्रथम पुडामान और वूढे शिवके दर्शन करके पछि गौराग महाप्रभुका दर्शन करते है माघ मासमे नदिया शहरमे एक मेला होताहै वहा उस समय लग-

भग १०००० वैष्णव येकात्रित होते है. इस मतमे चौसठ परिवार अर्थात् शाखा हैं और उनके तिलकभी भिन्न है.

नादिया शहरसे २ मील विद्यानगर जो आजकल एक छोटा गांमहै वहां गौराग महाप्रभुकि विष्णुमढी थी वहां एक मंदिर मे उनकी मूर्ती है नादिया शहर न्यायशास्त्र पढनेके लिये प्रसिद्धहै दूरदूरके लोग वहां न्यायशास्त्र पढनेके लिये आतेहैं वहा कई पाठशाळा है चैतन्य महाप्रभुके जन्म होनेके लिये नादिया शहर पवित्र तीर्थ गिना जाता है.

नदियासे थोडी दूरमे शनीपुर एक कस्बा है जहां कार्तिककी पूर्णिमाको कृष्णका रथ निकलता है उस समय वहां बडी भीड होती हैं भरतवर्षमे ७२५११५ मनुष्य इस मतमे है यह हिसाब सन् १९०१ ई. की मनुष्य गणनाका है. महंतको गोस्वामीभी कहते है.

हरीव्यासी मत.

इस मत वाले अपनी परंपरा ब्रंह्माके पुत्र सनकादिसे बताते है परन्तु यह मत निवार्कके अंतरगत है और निवार्क आम्नाय ब्रंह्माके पुत्रसनकादिकसें होगी यही ठीक प्रतित होता है क्योंकी सलीमाबादकी गादीको हरिव्यासी प्रधान मानते हैं इस मतमे मुख्य उपासना गोपालजीकी है इनका खान पान अन्य सम्प्रदायी साधुओंके संग होता है गलेमे तुलसीकी कंठी बांधते है और गौड संप्रदायके माफिक अर्ध नासिकासे पतला तिलक लगाते है व्रंन्दावनादि स्थानोंमे इस मतके अच्छे अच्छे मंदिर बने है बहुतसे वंगवासियोंने इस मतको ग्रहण किया है इस मतके साधु बडे शान्त और धर्म निष्ट होते है इस मतमे उपदेश कम होनेसे मतकी कम वृद्धी है यदि वंगदेशमे इस मतमे अच्छे अच्छे उपदेशक होवे तो आसा हैकि बहुत मनुष्य इसमे दाखिल हो जावे.

इस मतमे कोई कोई गांजा भागआदिका नशा बहुत करते है.

सबको मारे एक सम सुजनो नशा चडाल
मारे नशा सैताननें युवा वृद्ध अरु बाल.

कवित—नशेकी बीमारीने उखाडी जड मतनकी, जटाधारी निराकारी नशे मार डाले है ॥ दादूपंथी रामानन्दी मारेहै कबीर पन्थी नशे काल बीरसे गुलाब दासी हारे है ॥ मारे है सन्यासी मारे जंगम उदासी मारे निर्मल गरीब दासी नशेके जो प्यारे हैं. योगी मारे भोगी मारे रोगी मारे सोगी मारे नशा बीर जान नशा बाजोंकी निकारे हैं ॥ १ ॥

मारे शाहूकार गिरफ्तार करै रंकनको हिन्दु और तुर्क मार नशेने संहारे हैं ॥ मारे है ईसाई हुये पारसी सौदाईगिरे बामीनशे खाई वाको कोई न उबारे है मारे ब्राह्म प्रार्थनासमाजी और गप्पानन्दी मौजी रोडे चाकु कटीनशे मार डाले है ॥ मारे है वकील गई बुसर दलील होई खारज अपील मारे नशेके अधारे है ॥ २ ॥ मारे गुरु पीर मारे बाद-शाह वजीर मारे शूरवीर धीर भीर नशेने विदारे है ॥ मारे है नैपाली मारे मर्हटे बंगाली मारे सिन्ध और पंचाली नशा पीके मतवारे है ॥ मारे माडवारी पोठो हारीका खाना खराब मारे गुजराती कच्छी नशेने प्रहारे है ॥ मारे मुलतानी मारे काबुली इरानी मारे जर्मनी युनानी ध्यान नशेका जो धारें है ॥ ३ ॥

मारी पटवारी नहीं बची है तहशीलदारी मारी जमा-दारी हौलदारी कितकारी है मारे कप्तान जंगी बेडेके जो ज्वान मारे नशेके हैरान कोतवालभी पुकारे है ॥ मारे है अदालती न बचे है सरीस्तेदार नाजरकी नाजरीको नशाहीं उतारे है ॥

कीजो दूधपान छोडदीजो नशा खाननशे जैसा न सैतान यों कुरानभी उचारे है (नशा इस शब्दमे तमाम नशा (व्यशन) सामिल है)

श्रीराधावल्लभीय मत.

श्रीयुत वल्लभाचार्य्यजीके मतके अंतर गत यह एक शाखाहै परन्तु इस मतवाले पुष्टीमार्ग कोही कोई कोई अपनी साखा कहते है और कोई कोई दोनोको भिन्न कहतेहै मथुरा व्रन्दावनादि स्थानोमे इस मतके कई वडे वडे मंदिर है. वल्लभसंप्रदाय और राधावल्लभमे तिलक छाप कंठी दर्शनकी रीत आचार व्यवहार एकही है केवल अंतर इतनाही है कि राधावल्लभी पूजाभोग सिंगार आरती शयनादि प्रथम श्री राधिका

जीका तदनन्तर कृष्णजीका करते है इसीसे इनकी राधावल्लभ संज्ञाहै. वल्लभसंप्रदायके सद्रश राधावल्लभी गोलोकादि मानतेहैं आचार्य ग्रहस्थ होते है और 'गोश्वामी' कहे जाते है इस मतमे एक विशेष चाल और भी पुष्टी मार्गसे ली गई है कि श्रीकृष्णाष्टमीके दिन जो आचार्य होवे वह जसोदाका भेष लेकर भगवानको पालने झुलाते है उस समय दर्शकोकी वडी भीड होती है उसदिन कोई कोई गोस्वामी मूछ मुडवाडालतेहै और कोई नही मुडवाते तो घूघुटसे मूछ ढाक रखते है इस मतके कोई कोई अन्य मतवालो की निंदाभी करतेहै.

धनाक्षरी छन्द.

राम भजो कृष्ण भजो शक्ति भजो शंभु भजो चंद्र भजो सूर भजो भजो श्रीगणेशको ॥ ब्रंह्मा भजो विष्णु भजो भैरव जलेश भजो चाहे भजो हनुमान चाहे जगदीशको ॥ लोहेका आकार चाहे चांदीका आकार भजो पत्थर आकार चाहे भजो अखिलेशको ॥ जामै लगे मन आप उसीहींकी भक्ती करों दुसरेकी निन्दामे न कीजियो प्रवेशको ॥ १ ॥

माला फेरो कंठी बांधो तिलक लगावो भाल, शिखा रखौ मुत्र रखो मानो अवतारको ॥ चाहे मानो रामा-

नुज चाहे मानो वल्लभको चाहे मानो नानकको छोडो तकारको ॥ जप करो तप करो जटा रखो केश रखो सफन सफाय चाहे राखो जरा बारको ॥जापै हो इमान आप उसीहीकी भक्तीकरो ॥ दुसरेकि निन्दा छोडौ ली जो सर्व सारको ॥ २ ॥

रोजा रखो कलमा पढो बांग देवो मक्के जाओं, तस्वीको फेरो चाहे ताजिया बनायलो ॥ मानौ चाहें मघा पीर गाजी मियां जिन्द पीर शीया कहलावो चाहे सुन्नी कहलायलो ॥ मुगल पठाण चाहे वेग नाम राख लीजो चाहे हो वलोच चाहे त्रुक पद पाय लो ॥ जैसै चाहे वैसे रहो निन्दा छोडो दूसरेकी एकही खुदाय हरजगामे लखायलो ॥ ३ ॥

गिरजामे जाओ चाहे देवल बनाओ चाहे इसा गुण गावो चाहे यर्डनमे न्हायलो ॥ ईसाको खुदाय चाहे मानलो खुदाका वेटा आपने समान चाहे ईसाको बनायलो ॥ पादरी कहाओ चाहे पोप वनजाओ चाहे ईश्वरको ध्याओ चाहे वुद्धको मनायलो ॥ जहा वहा रहो निन्दा छोडो दूसरेकी ब्रंह्मरूप सारेही जहानको लखायलो ॥ ४ ॥

॥ कबीरजीका मत. ॥

श्री कबीरको ध्यानधरि, मनमे करि द्रढनेम
जिनका मत वर्णनकरत उपजेमन अति प्रेम

जेष्ट शुक्ल पूर्णिमाचन्द्रवारको काशीके लैहर नामक तलावमे कमल के पत्रपर काशीके रहनेवाले अली उपनाम वीरू जोलाहा अपना गौना कराकर अपनी स्त्री (नीमा) के साथ अपने घर आताथा, उसकी स्त्री मार्गमे लैहर तलाव पर बालक रूपी कबीरजीको पाकर अपने घर लाई कबीरजी बाल्य अवस्थासेही ज्ञानोपदेश करने लगे, एक समय जोलाहोंने गोवध किया परन्तु कबीरजी अपनें प्रतापसे उसे जिला दिया, और कबीर चौराके पासजोनीरूटोला नामक मोहल्लेमे है वहांसे काशीपुरीमे चलेगये, और साधुओसे मिल ज्ञान कथन करने लगे, जब साधुलोग गुरु का नाम पूछने लगे तब कबीरजीके मनमे आया कि गुरु अवश्य करना चाहिये क्योंकी गुरु विना ज्ञान प्राप्त करना कठिन हैं, उस कालमे प्रसिद्ध महात्मा रामानन्दस्वामी वही रहतेथे प्रातःकाल उठकर गंगास्नानको जाया करतेथे एक

दिन कवीरजी रस्तेमे सोयगये जव रामानंदस्वामी अंधेरेमे उठकर स्नानको चले तव उनके चरण की ठोकर कवीरजीके मस्तकमे लगी जव कवीरजी रोने लगे तव श्रीरामान्दजी कहा कि, बच्चा रामराम कहो तव कवीरजी राम नामको मंत्र, और रामानंदजीको अपना गुरु समझा, और अपनेको उनका चेला कहना आरंभ किया, रामानंदस्वामी अपने चेलोद्वारा कवीर जीकी ऐसी वात सुनकर कवीरजीकु बुलाकर पडदेके भीतरसे वातचीत किया जव कवीरजीका असाधारन ज्ञान देखा तव उनको रामानन्दजी अपने मुख्य चेलोंमे मिला लिया चेला होनेका वृत्तात कवीरजी पहि-लेहीं कह सुनायाथा, स्वामी सर्वानन्दजीको ज्ञानकी वार्तामे जव कवीरजी परास्त किया तव स्वामी रामा-नन्दजी, कवीरजीको वारह चेलोमे मुख्य गिना. एक समय सिकन्दरशाह लोदीके शरीरमे ज्वाला उठी जव असंख्य उपायोंसे अच्छी नही भई तव कवीरजी अच्छा किया वादशाह कवीरजीको वहुत कुछ देना चाहा परन्तु वे वडे निस्प्रेहीथे कुछ नहीं लिया कवीरजीकी असाधारन प्रतिष्ठा देख वादशाहके उपदेशक शेख तक्कीको वडी डाह भई और कवीरजीके मारनेके अनेक उपाय किये परन्तु वे सव निस्फल गये,

॥ कबीरजीका मत. ॥



श्री कबीरको ध्यानधरि, मनमे करि द्रढनेम
जिनका मत वर्णनकरत उपजेमन अति प्रेम

जेष्ट शुक्ल पूर्णिमाचन्द्रवारको काशीके लैहर नामक तलावमे कमल के पत्रपर काशीके रहनेवाले अली उपनाम वीरू जोलाहा अपना गौना कराकर अपनी स्त्री (नीमा) के साथ अपने घर आताथा, उसकी स्त्री मार्गमे लैहर तलाव पर बालक रूपी कबीरजीको पाकर अपने घर लाई कबीरजी बाल्य अवस्थासेही ज्ञानोपदेश करने लगे, एक समय जोलाहोंने गोवध किया परन्तु कबीरजी अपनें प्रतापसे उसे जिला दिया, और कबीर चौराके पासजोनीरूटोला नामक मोहल्लेमे है वहांसे काशीपुरीमे चलेगये, और साधुओसे मिल ज्ञान कथन करने लगे, जब साधुलोग गुरु का नाम पूछने लगे तब कबीरजीके मनमे आया कि गुरु अवश्य करना चाहिये क्योंकी गुरु विना ज्ञान प्राप्त करना कठिन हैं, उस कालमे प्रसिद्ध महात्मा रामानन्दस्वामी वहीं रहतेथे प्रातःकाल उठकर गंगाष्णानको जाया करतेथे एक

दिन कबीरजी रस्तेमे सोयगये जब रामानंदस्वामी अधेरेमे उठकर ष्णानको चले तब उनके चरण की ठोकर कबीरजीके मस्तकमे लगी जब कबीरजी रोने लगे तब श्रीरामान्दजी कहा कि, बच्चा रामराम कहो तब कबीरजी राम नामको मंत्र, और रामानंदजीको अपना गुरु समझा, और अपनेको उनका चेला कहना आरंभ किया, रामानंदस्वामी अपने चेलोद्वारा कबीर जीकी ऐसी बात सुनकर कबीरजीकु बुलाकर पडदेके भीतरसे बातचीत किया जब कबीरजीका असाधारन ज्ञान देखा तब उनको रामानन्दजी अपने मुख्य चेलोंमे मिला लिया चेला होनेका वृत्तांत कबीरजी पहिलेंहीं कह सुनायाथा, स्वामी सर्वानन्दजीको ज्ञानकी वार्तामे जब कबीरजी परास्त किया तब स्वामी रामानन्दजी, कबीरजीको बारह चेलोंमे मुख्य गिना. एक समय सिकन्दरशाह लोदीके शरीरमे ज्वाला उठी जब असंख्य उपायोंसे अच्छी नही भई तब कबीरजी अच्छा किया बादशाह कबीरजीको बहुत कुछ देना चाहा परन्तु वे बडे निस्प्रेहीथे कुछ नहीं लिया कबीरजीकी असाधारन प्रतिष्ठा देख बादशाहके उपदेशक शेख तर्कीको वडी डाह भई और कबीरजीके मारनेके अनेक उपाय किये परन्तु वे सब निस्फल गये,

सिकन्दर लोदी कबीरजीके अनेक प्रभाव देख उनको काशीसे इलाहाबाद(प्रागराज)ले आया एक दिन गंगाजीमे एक मुर्दा बहा जाताथा कबीरजी उसको जिलाकर उसका नाम कमाल रक्खा, यह देखकर बादशाह और शेख तक्कीको बडा आश्चर्य हुआ अन्तमे कबीरजी कहाकि दो चार दिनमे मै शरीर छोडूगा लोगोंने कहाकि आप काशीमे शरीर छोडे जिस्से मुक्ती मिले कबीरजी कहाकि मै मगहमे शरीर छोडकर मुक्ती लूगा.

अर्थात् मगहमे मरनेसे गढहा होताहै ऐसी लोकोक्ती है बहुत लोग अबभी मरनेके समय मगह देशसे काशी मे आतेहै, अन्तमे कबीरजी मगहमे शरीर छोडा जो गोरखपुर जिलेमे है, वे हिन्दु मुशलमान दोनोको समान भावसे मानतेथे जब उनके मृतक संस्कारके लिये हिन्दु मुशलमान झगडने लगे तब आकाशवाणी हुई की लडो मत कबीरजीका सब(मृतक)वस्त्र उठाकर देखो जब वस्त्र उठाया गया तब कबीरजीका मृतक शरीर नही था परन्तु आधेमे दमना और आधे भागमे फूल पडाथा दमनाको मुशलमानोने दफन किया और हिन्दुओंने फूलोको अग्नी संस्कार किया.

डाकटर हंटर साहब लिखा हैकि रामानुजस्वामीके गद्दीपर बैठने वालोंमेसे रामानन्दजी पांचमेंथे, उनका

मठ बनारस (काशी) मे था, और सर्वत्र भ्रमण कर विष्णुके नामसे एक ईश्वर होनेका उपदेश देतेथे, रामानदहीसे वैरागी संप्रदायकी नेय पडी जिसमे जातीभेदका विचार कम रहता है और कर्म प्रधान माना जाता है रामानन्दजीके १२ चेलोमे कबीर मुख्य थे जो सन १३०० से १४२० तकथे सबसे प्रासिद्ध हुये " अगरेजी किताब हिन्दु इज्म " मे लिखा हैकि कबीरजी सन ई० के १४ मी सद्दी मे थें और फारवेशकी डिक्सनरी " मे हैकि १४ मी सद्दी मेथे और मूरसाहबके किताबमे हैकि वह १६ मी सद्दीके आदिमे थे.

एक साखीमे लिखाहै कि "चौदहसौ पचपन सालगिरा चन्द्रवार एक ठाट ठये, जेठ सुदि बरसायतको पूरनमासी तिथि प्रगट भये, धनगरज दामिनी दमके बूदे बरषे झर लाग रहे लैहर तलावमे कमल खिले जहां कबीर भानु प्रगट भये, ॥ इसके अनुसार कबीरजीका जन्म १३९८ ई० मे सिद्ध होताहे. दूसरी साखीयों है सवत पद्रहसौऔपाच मगहर कियोगमन, अगहन सुदी एकादसी मिले पवनसे पवन, इसके अनुसार कबीरजीका देहान्त १४४८ ई० मे हुवा तीसरी साखीयों है.

संवत पद्रहसो पचहत्तग कियो मगहर गमन, माघ सुदी एकादसी भले पवन्से पवन् ॥ कबीर पंथकी

पुस्तके वीजक, चौरासीअंगकीसाखी, रेखता भुलनी, अनुरागसागर, निरभयज्ञानसागर, ज्ञानसागर अम्बुसागर, विवेकसागर, स्वासगुजार, कुरुमावली, कवीरवाणी, लक्ष्माबोध, सरोदा, मुक्तिमाल, माखोखंड, ब्रह्मनिरुपण, गुमानभंजन, हंशमुक्तावली, आदिमगल, शब्दकुंजी, आदि अनेक भाषा पुस्तके इस पंथमे है काशीमे कवीर चौराहै वहां पर कवीरजीकी गद्दी है, गद्दीके पास कवीरजीकी टोपी और रामानंदजी तथा कवीरजीकी तस्वीरेंहैं कवीर चौरामे इस क्रमसे महत हुये १ कवीरजी, २ श्रुतिगोपालसाहेव, ३ ज्ञानदाससाहेव, ४ सामदाससाहेव, ५ लाभदाससाहेव, ६ हरिसुखदाससाहेव, ७ सीतलदाससाहेव, ८ सुखदाससाहेव ९ हुलासदाससाहेव, १० माधोदाससाहेव, ११ कोकिलदाससाहेव, १२ रामदाससाहेव १३ महादाससाहेव, १४ हरिदास साहेव, १५ शरणदाससाहेव, १६ पूरणदाससाहेव, १७निर्मलदाससाहेव,१८रंगूदाससाहेव सन१९०६ तक अठारेंथे, कवीर मतमेभी १२॥ भेद है जिनमे कवीरजीके पीछे सुरतगोपाली, तकसरी, मूलपथी, योगीपथी, जीवपंथी, नामकवीर, ज्ञानीपन्थी, दवनपथी, समपन्थी, वंसघराना, नारायणपंथी ,, कमालपंथी, १३ हुये परन्तु कमाल पंथीको आधा पंथ कहते है इससे १२॥होते हैं.

धर्मदासजी कबीर साहेबके प्रधानशिष्यथे उनका जन्म बाधवगढ (रीवाराज्य) मेहुआथा वहाभी कबीर पंथियोका एक मठ है अनेक पुस्तकोमे कबीरजी और धर्मदासजीका संवाद है अनुरागसागरमे लिखाहै कि धर्मदासजीके प्रार्थना करनेपर कबीर साहब कहाथा कि तुमारा ४२ वंश चलेगा, पुस्तकमे भविष्य वंसोके नाम लिखेहै वे योंहै.

१ वचन चूडामणी साहब (धर्मदासजीकेपुत्र) २ सुदर्शननाम, ३ कुलपतिनाम, ४ प्रमोद गुरु बालापीर ५ कमलनाम, ६ अमोलनाम, ७ सुरतसनेही नाम ८ हकनाम, ९ पाकनाम, १० प्रगटनाम ११ धीरजनाम. १२ उग्रनाम, १३ दयानाम, १४ गिरधरनाम, १५ प्रकाशनाम, १६ उदितनाम १७ मुकुन्दनाम. १८ अर्धनाम, १९ उदयनाम, २० ज्ञानीनाम, २१ हंसमणिनाम २२ सुकृतनाम, २३ अग्रमणिनाम, २४ रहस्नाम, २५ गगामणिनाम, २६ पारसनाम, २७ जाग्रतनाम. २८ गगामणिनाम, २९ अकहनाम, ३० कठमणिनाम, ३१ संतोषनाम, ३२ चातकनाम, ३३ धनी नाम ३४ नेहनाम, ३५ आदिनाम ३६ महानाम, ३७ निजनाम. ३८ साहबनाम, ३९ उद्धवनाम ४० केतनाम ४१ दृगमणिनाम, और ४२ मा विज्ञानी नाम,

इनका प्रधान मठ कबरदह (विलासपूर) मेंहै और एक दूसरा मठ वहांसे ८० मील कुदरमालमे है उन मठोमे वहुत प्रदेशोके कवीर पंथी यात्री जातेहै कुदरमालमे धर्मदासजीके पुत्र वचन चूडामणी साहबकी समाधी है माघमासमे वहाँ एक मेला होता है जो तीन सप्ताह तक रहता है चतुर्दशी और पूर्णिमाके दिन बडी तैयारीसे समाधीकी चौक आरती होती है यात्रियोंको बंगाल नागपूर रैल्वेके B N R "चांपा"स्टेशनपर उतरना चहिये वहासे बैलगाडी जाती है मैभी उसी स्टेशनसे गयाथा मेरे जानेके समय महंत विश्वनाथदास साहब मठके मालिकथे और कबरदहकी गद्दीपर अभियोग (मुकदमा) चल रहाथा,

भक्तमाल जिसको बने ३०० वर्ष हुवे नाभाजी लिखा हैकि, " कबीरकानिराखी नहीं वर्णाश्रम षट दर्शणी इत्यादि, इस पंथमे हिन्दु यवन दोनो दाखील होते है क्योंकि कबीरका ऐसा मत हैकि ईश्वर एक है उसको हिन्दु राम मुसलमान रहीम कहते है इस पंथके साधु कंठि बांधते है और नाशिकासे चंदनका तिलक करते है और लबींचोंच वाली टोपी पहिरते है अरसपरस मिलनेके समय साधु या उनके अनुयायी बदगी अथवा

सतनाम साहेब कहते है दोनो हाथ आगे फैलाकर, मरनेपर जलानेकी चाल नही है दफन करते है मठमें नील रंगका निसान रहता है साधु अथवा अनुयायी-योमें कोई जीव हिसा नही करता मद्य मांस नही छूता साधुओंका चाल चलन अच्छा रहता है और धर्मके उपदेशमे लगे रहते है वंश घरानेके कबीर पंथिओके लिये विवाहका निषेध नही है परंतु बहुतसे साधु अपनी प्रतिष्ठाके लिये विवाह नहीं करते कबीर पन्थी रायपुर, बिलासपुर–छिंदवाडा जिलामे बहुत है केवल मध्यदे-शहीमे सन १८८१ की गणना के समय ३४७९९४ कबीर पंथीथे, मध्यदेशके कबीर पन्थी सब विवाह करते है केवल वंश घरानेके बहुतसे साधु नहीं करते

गोरखपुर जिलेमे मगह एक वस्ती है जहां कबीर-जीका समाधी मंदिर है, समाधीके अधिकारी मुसल-मान है जो अपनेको दरपुस्तसे वहाके अधिकारी बताते है जो कुछ पूजा चढती है वही लेते हैं मद्य मांस नहीं छूते और कबीरजीको इष्ट मानते हैं वहा कमालकाभी समाधी मंदिर है खर्चके वास्ते जागीर लगी है कबीर-जीका समाधी मंदिर उसी जगह है जहां बिजुलीखा पठान कबीरजीको दफ़न कियाथा,

कबीर शिकन्दर लोदीके समयथे शिकंदर लोदी सन १४८९ गादी बैठा और १५१७ ई. तकथा.

श्रीराधास्वामीका मत

आगरानिवासी राधाजीने राधास्वामीमतको नियत किया जो जातिके खत्री थे पश्चिमोत्तर देशके पोष्ट मास्तर जनरल राय शालग्राम साहब बहादुरने राधा स्वामीकृत " सार वचन राधास्वामी " नामक पुस्तकको सन १८८५ मे छपवायाथा उन्होने उसके आदिमे लिखा है, कि

आगरा शहरके पन्नी नामक मोहल्लेमे सं. १५७५ सन १५१९ ई० भादों वदि ८ को अर्ध रात्रीके समय राधास्वामीका जन्म हुवा, वे बाल्यावस्थाहीसे खास कर लोगोको परमार्थका उपदेश करने लगे उन्होने लग-भग १४ वर्ष अपने मकानके कोठेमे बैठकर " श्रुत शद्ध योग " का अभ्यास किया और उसके पश्चात् १७ वर्ष तक सतसगियोंको संतमत अर्थात् राधास्वामी मतका उपदेश दिया लगभग ३००० मनुष्योने उनका उपदेश ग्रहण करके उनके मतमे आये, अब बहुतसे लोग अभ्यास करके उनके मतमे लगे हुये है

आगरामे लाला शिवदयालसिंहजी, वृन्दावनजी और प्रतापसिंहजी ३ भाई थे जिनमे लाला शिवदयाल-

सिंहजी पीछे राधास्वामीके नामसे प्रसिद्ध हुये राधा-स्वामीजीका सं० १८३५ ई० स० १८७२ मे असाढ वदि १ को देहान्त होगया आगरा शहरसे ३ मील दूर राधास्वामी नामक वागमे उनकी संगति वनी है अर्थात् समाधि मंदिर वनाहै. वहां राधास्वामी मतके साधु रहते है.

राधास्वामीके प्रधान शिष्य आगरानिवासी राय शालिग्राम साहेब बहादुर पोष्ट मास्तर जनरलने इस मतको वहुत फैलायाहै इन्होने इस मतके कई ग्रन्थ वनाये और छपायेहै उनके प्रधान शिष्य काशीनिवासी व्रह्मशंकर मिश्रजी है जो अच्छे पंडितहै आगरा और प्रागमे राधास्वामी मतकी "सभा" है सन् १८९१ के मनुष्य गणनाके समय भारतवर्षमे इस मतके १७६४३ मनुष्यथे राधास्वामीके ग्रन्थोमे लिखा हैकि ईश्वर जोस-वसे परेहै उसका नाम राधास्वामी है उस मतके लोग आगराके शिवदयालसिंहजीको उन्हीका अवतार मानकर राधास्वामी कहने लगे राधास्वामी मत श्री कवीरसाह-वके मतसे मिलता हुआ है.

इस मतके लोग " सुरतशद्ब " का योग करते हैं अर्थात् उसी अभ्यासमे लगे रहते है जीवात्माको नेत्रोके

ऊपर ब्रंह्मांडमे चढाते हैं और अंतरका शब्द सुनते हैं इनका मत हैकि सच्चा गुरु सच्चा नाम सतसंग इन बातोकी आवश्यकता है इस मतके लोग मद्य मांस सेवन नहीं करते इनका मत हैकि तीर्थ, व्रत, मूर्ती पूजा, तथा पाठ इत्यादि क्रियेसे अंतःकरन सुद्ध नहीं होता अर्थात इन बातोंसे कुछ लाभ नहीं.

रामस्नेही मत.

आये शाहपुराके संत, माको राम सनेही पंथ

ढुढार प्रदेशके अन्तर गत "सबाई जयपुर" राज्यके रहनेवाले रामचरणदासजी एक वैश्य थे, सदा उनकी धर्मसे निष्ठाथी और सर्वदा हरि भजन करते और मनुष्योको उत्तम उपदेश देते थे उनको संसारसे वैराग्य त्पन्नउ भया तब वे "दांतडा" (जोधपुर) ग्राममे आये वहां एक साधुसे उपदेश गृहण कर मेवाड प्रदेशके "शहा-पुरा" स्टेटमे आये वहां रहते थे और निरंतर माला लेकर रामराम कहते थे जब कुछ मनुष्य उनके अनु यायी हो गये तब कुछ नियम बनाकर रामस्नेही नामसे

गादी कायम की जो अविछिन्न परंपरासे चली आती है उस देशमे तथा अन्य प्रदेशोंमे उनके बहुत चेले है.

जो महंत होता है वह रेलगाडीमे नहीं बैठता और पगमे तुलसी चढवाता है ऐसा कहते है इस मतमे मूर्ति पूजा नही करते गादी खडाऊं पूजते है रातादिन रामनामकी माला जपते सुपारीका रंगा लाल वस्त्र पहिनते और काठका कमंडल वा तुंबा रखते है उडदेके माफिक कोई फल होता है उसकी कंठी वांधते और माथेमे सफेद टीली (तिलक)करते हैं रसोई नहीं बनाते शिष्योंके घरमे जो रसोई होती है उसमिसे वोलोग इनकोभी देजाते है एकादशी के दिन रात्रीमे जागरन करने की चाल है किंवदंती हैकि इसमतमे शिष्यो को जूठा खवाते है और शिष्य जब विदेशको जावे तव गुरुके दाढीके बाल और नख काटकर ले जाता है उसीको धोकर पीता है स्त्रीभी लम्बी पडकर साष्टांग करती हैं और वर्णाश्रम कम मानते हैं.

कुछभी होय इस मतके साधु क्षमाशिल परमार्थी और सज्जन होतेहै अन्य मतोके मंदिरोमे वैठकर लोग गपोडा मारतेहै वैसा इनमे नहीं है मंदिरमे पैठतेही हॉथमे माला लेकर राम नाम लेना पडता हैं इसी वास्ते वहुत माला उॅनके वहाँ धरी रहती है

साधु रामायण की कथाभी वॉचते हैं इस मतके स्थापक " श्रीरामचरणदासजी " तथा हरनामदास रामदास प्रभृति संस्कृत तो पढेही नहीं थे, कुछ भाषाकी दोहा चौपाईवाली पुस्तकें बना गये है जिनको इस मतवाले वेदसे अधिक मानकर आठ दंडवत करते है उनके कविता के निमूना नीचे कुछ लिखते है ।

(रामदास वचन)

पंडताइ पाने पडी ओपूर वलोपाप ॥ राम राम सुमऱ्याविनारहि गयो रीतो आप,

(संतदास वचन)

भरम रोग तवहीं मिट्या, रट्या निरंजनराइ तब जमका कागज फट्या ॥ कट्या करम तबजाइ ॥

(मुख्य मतस्थापक श्रीरामचरणदास वचन.)

महमा नाव परतापकी, सुनौ सरवण चितलाइ " रामचरण " रसना रटौ, क्रम सकल जगजाइ ॥ जिनजिन सुमऱ्या नांवकू सोसव उतऱ्यापार " रामचरण जो वीसऱ्या सोही जमकेद्वार ॥

राम भजन छूटे सब क्रम्मा ॥ चंद अरु सर देई परकम्मा ॥ उंच नीच कुलभेद विचारे ॥ सोतो जनम

आपणो हरि, ॥ संताकै कुलदीसै नाही ॥ रामराम कह राम सदांही रामसंतांका अन्तनपावे ॥ आप आप की वुद्धी सम गावे (इत्यादि इत्यादि) इसमतकी एक दूसरी साखा मारवाडमे " खेडापा " ग्राममे है " खेडापा " वाले वही रंगीत धोती अगरखी फेटा तथा भूषणभी पहिनते और रसोई भी कभी वना लेतेहै परन्तु शाहपुरावाले रसोई आदि नहीं वनाते मंदिरको ' रामद्वारा " कहतेहै इस मतकी पुस्तके वहुत कम छपी है.

श्रीनानक मत.

श्रीनानकको नमन करि, धरिईश्वरको ध्यान,
इस मजहवसे मनकिये, छूटिजात अभिमान,

शिक्ख शब्द " शिष्य " शब्दका अपभृंसहै शिक्ख मत नियत करनेवाले गुरु नानक है. जो लाहोर प्रान्तके तलवंडी ग्राममे स. १५२६ सन १४६९ के कार्तिक सुदी १५ की रात्रीमे, कल्याणरायखत्रीके गृह

तृप्तासे जन्मालिया नानक बाल्य अवस्थाहीसे वुद्धीशाली, ज्ञानी ईश्वरोपा शनामेदृढ थे, इनके धर्मोपदेश और चमत्कार असाधारण ज्ञान देखकर लाखो मनुष्य इनके अनुयायी हो गये, नानकके अवतार विषयमे भगवान् व्यास महर्षी भी, भविष्यपुराण मे लिखा है कि यवनाक्रांत मेदिन्या भविष्यातिति नानकः (जब मेदिनी यवनोसे पूर्ण हो जायगी तब नानकका जन्म होगा) इस विषय के चार पांच श्लोक स्वर्गस्थ श्री बालराम उदासीन कृत हिन्दी "दयानन्द मुंड तुंड दंडस्य" नामक पुस्तकमे है गुरु नानकजी के विवाह करनेपर उन की सुलक्षणी नामक स्त्रीसे दोपुत्र हुये अर्थात श्रीचन्द्र और लक्ष्मीचन्द श्रीचंद्रजी से उदासी पंथ नियत हुआ नानकके सुतरा, और मर्दाना, दो शिष्य थे, उसमे सुत्राशाही आदि जो बजार मे लकडी बजा कर मागते है वो पन्थ चला.

नानकजीकी प्रथमसे इच्छा थीकि गुरुपद पुत्रोंको न देकर शिष्योंको दिया जाय नहीं तो वंस वाले गुरु घंसके अभिमानमे पडकर कुछ अनर्थ करेगें और अहंकारी बनेगे इसी विचारसे शिष्योंमेसे लहनाजी, अंगद के नामसे दूसरा गुरुबने, धन्य नानक जो लोग कुटुंव पालन वा विषय भोगके लिये गुरु बनते है उनको नानकजीके विचारका अनुकरन करना चाहिये गुरु

नानकका उपदेश कवीरजीके सदृस है सं. १५९५ मे आश्विन वदि ५ को गुरु नानकका देहान्त हो गया.

दुसरे गुरु अंगदजी वने जो व्यासनदी के तट खादुरग्राम मे रहतेथे जिन्होने शिष्योंके पवित्र पुस्तकों को लिखा, सन १५५२ ई० मे जव खादुरग्राममें गुरु अंगदका देहान्त हो गया तव अमरदासजी तिसरे गुरु वने, वे गोविन्दवास ग्राममे रहतेथे सन १५७४ ई० मे अमरदासजी(खत्री)की मृत्यु होनेपर रामदासजी चौथे गुरु वने, जो अकवर यवनेश की दी हुई जागीरपर अमृतसर तलाव खोदाकर शहर वसाया और तलावके टापूके मंदिरका काम पूरा किया, जो सुवर्ण मदिर कहाता है भारत वर्षके किसी मंदिरमे इतना सोना नही लगा है. कोई कोई का मत है कि काम चौथे गुरु आरंभ किया परंतु पूरा नही किया, १५९१ ई० मे रामदासजी के देहान्त होनेपर रामदासजी के पुत्र अर्जुन मलजी पांचमा गुरु वने जो शिक्खोंके आदि ग्रन्थको वनाया मंदिरका काम पूरा किया और शहरको वढाया, वे. १६०६ ई. मे जहागीरके कारागार (जेलखाने) मे मर गये,

उनके जेष्ट पुत्र हरगोविन्द, शिक्खोंके छठे गुरु हुये, जिन्होने अपनी पिताकी दुर्गती देखकर शिक्खोंमे मुशल-

मान द्वेस भडकाया वह दो तलवार बांधतेथे, एक यवनोके राज्य नष्ट करनेके लिये एकपिताके शत्रुके वधानिमित्त, हरगोविन्द जीके पांच पुत्र थे,१गुरुदत्त, २ सूरत,३तेगवहादुर, ४ हरराय, ५ वां अरभराम, सन् १६४४ ई० मे हरगोविन्दकी मृत्यु होनेपर उनके चौथे पुत्र हरराय सातवा गुरु वने उनका देहान्त १६६१ ई० मे हुआ पीछे हररायके पुत्र हरकृष्ण आठवा गुरुकी गद्दीपर वैठे, सन् १६६४ ई० मे उनकी मृत्यु होनेपर हरगोविन्दके तीसरे पुत्र तेगवहादुर नौमा गुरुकी गद्दीपर वैठे जिनको १६७५ ई० मे औरंगजेवने मार डाला, तेगवहादुरके पुत्र गोविन्दसिह दसमा गुरु हुए जिनका जन्म सन् १६६६ मे पटना शहरके हरि मंदिरमे हुआथा.

गुरु गोविन्दसिंहकी कथा, सुनो मित्र दे कान। धर्म वचाया हिन्दका श्रीगुरु कृपानिधान ॥ दैवी गुण नाश होते, आसुरी प्रकाश होते, साधन विनास होते, हेतु ब्रंह्म ज्ञानके ॥ विप्र सो विलाय जाते, काजी जोर पाय जाते, साधु घवडाय जाते, भारत प्रधानके ॥ कर्म धर्म भ्रष्ट होते भक्तोंकोभी कष्ट होते, साधन विनष्ट होते मित्रो योग ध्यानके ॥ गोमती गिरनार कहा नर्मदामेन्हान होते, छूटते नतीर जो गोविन्दसिह ज्वानके ॥१॥ दूर होते चारो धाम मक्के जाय सलाम होते, भूल जाते

राम नाम हेतु जो कल्याणके ॥ लोप होते, हनुमान् कोप होते, गाजीमियां, ग्रन्थभी होजाते लोप वेद औ पुराणके ॥ वन उपराम होते, रोजे यहां आम होते, होवते गुलाम सारे गाम लै मकानके, जप तप यज्ञ होम क्योजी कहां होते आज, छूटते नतीर जो गोविन्दसिंह ज्वानके ॥ २ ॥ खाय जाते खानजी, दवाय लेते अली वेग, खाखसे मिलाय जाते वेटे जो पठानके, रांध्यासो विलाय जाती. बांग सारे छाय जाती होनी थी निवाज सारे वीच हिन्दुस्तानके, न्याय सो विलाय जाते, जुल्म जोर पाय जाते, होनेथे मिलाप कहां दीन औ इमानके देवी देव देवलके नाम ना निसान होते छूटते नतीर जो गोविन्दसिंह ज्वानके ॥ ३ ॥

गुरु गोविन्दसिंहजी, शिक्ख शासनको फिर सकल मे लाये, उन्होने अपने मतवालोंको टोपी ना पहिरनेकी भोजनके समय वस्त्र ना उतारनेकी बाल ना मुड़वाने कीसलाहदी और सिंहकी पदवी दी और एक ग्रन्थ बनाया जो दसवां गुरुका ग्रन्थ कहा जाता है और यहभी आज्ञा दीकि अबसे कोई गुरु ना होगा जो कुछ पूछना होवे ग्रन्थसाहेब से पूंछ लेना, बहुतेरे शिक्ख हिन्दुवोंके धर्म कर्मसे चलतेहै पर्व श्राद्ध करते जनेऊ पहिनतेहैं अगरेजोंके संग जितनी जाती लड़ी उनमे शिक्खो

के बरोबर कोईभी पराक्रमका परिचय नहीं दिया, चिलि-यानवालाके लड़ाईमे अगरेजोंके २४०० सौ आदमी मारे गये, अफसर जुदा, सन् १८४९ की १३ फरवरी को अगरेजोंकी४ तोपे और तीन पलटनके निशान जाते रहे. अन्तमे गुजरात शहर (पंजाब) के निकटकी लड़ाईमे रणकंदन मचाकर बड़ी काठिनतासे बहादुर सिक्ख परास्त हुये. धन्य अगरेज महाराज आपकी द्रढ़ता और साहस.

गोविन्दसिंहका बडा भाग युद्धसे बीता अन्तमे वे बीदड़ (हैदराबाद) गामके पास हजारो यवनोंको मार कर प्राण विसर्जन किया वहां उनकी संगति बनी हैं सन् १७०८ ई० मे देहान्त हुआ सन् १८९१ की मनुष्य गणनामे भारत वर्षमे १९०७८३३ शिक्खथे शिक्खोंमे ५ ककार मानतेहै केश, कगण, काछा. कंगा काचू.

उदाशीनोमे निर्मले आदि गुलाबदासी गरीबदासी सब कुछसामान्य भेदसे नानकके अंतर गत है इस मतमे किसी प्रकारकी नशा करनेकी चाल नहीं है प्रत्येक नशा निषेध है.

दादु मत.

दादुजी बडे प्रसिद्ध पुरुष हो गये इसमतको. कोई शंकरके और कोई कबीरके अंतरगत कहते है. परन्तु दादुजीका जन्म गुजरात प्रदेशके, अमदावाद, शहरमे विनोदीराम, नागर ब्राह्मणके घर हुआथा १२ वर्षकी अवस्थामे वे संन्यास ग्रहण कर, राजपूतानेके, आवेर, शिकरी. निराना, आदिशहरोंमे विराजे, उनका बड़ा प्रताप फैला. साभर के पास " वरहणा " मे उनका देहान्त हुआ दादुजीके शिष्योंमे स्वामी सुंदरदासजी वहुत प्रसिद्ध हुये.

उनके बनाये ज्ञानसमुद्र, शाकाग्रन्थ, सुन्दरविलास आदि पुस्तके प्रसिद्ध है सुन्दरदासजीके शिष्य नारायनदास उनके, रामदास, उनके दयाराम, उनके संतोषदास. उनके लालदास, उनके लक्ष्मीराम, उनके क्षेमदास क्षेमदासके गंगाराम इत्यादि परंपरा चली आती है इस मतमे गादी पूजते है लाल वस्त्र पहिनते और सर्वदा अपना माथा दाढी मूछ सहित मुढवाते है और दादुजीके नामकी माला फेरते हैं जयपुरके पलटनमे इस मतके बहुत आदमी है इस मतकी पुस्तके भाषा

पद्यमें है परन्तु इस मतमे अब संस्कृत पढनेका प्रचार बढ़ रहा है और संस्कृतके अच्छे अच्छे पंडित है. इनकी प्रधान गादी, बांदीकुई जकशनसे ९७ मील और फुलेराके ऐशनसे ६ मील "निराना" का ष्टशन है वहीं निरानामे प्रधान गादी है और एक बडा तलाव है दादुजीको हुये ३७५ वर्ष भये होगें, इनका मत अद्वैत है कोई कोई इनमे गृहस्थभी होते है.

ब्राह्म समाज.

इस मतके नियत करनें वाले कलकत्ते के प्रसिद्ध रहीश राजा राममोहनराय है जिनके उद्योगसे भारत गवर्नमेन्ट सन् १८२९ ई० मे आइनद्वारा सती होने की रीती रोकदी, सन् १८३० ई० मे कलकत्ते शहरमे ब्रह्मसमाज की नेव पड़ी उसी सन् मे ब्राह्म संवत नियत हुआ राजा राममोहन रायके दस वर्ष हिन्दुस्तानमे नरहने से समाज कुछ निर्बल पड़ गया था, सन् १८४२ ई० मे देवेन्द्रनाथ टागोर इसमें आय मिले, और धीरे धीरे एक ईश्वर की पूजामे विश्वास दिलाने लगे उनका

मत हैकि पूर्वमे एक ब्रंह्मके शिवाय कुछ न था, उसीसे सपूर्ण पदार्थ उत्पन्न भये इस वास्ते उसी एक ब्रंह्म की उपासना करनेसे इस लोक और परलोकमे सुख होता है इत्यादि ब्रंह्म समाजका मुख्य उद्देश है और वे लोग जाति विभागको नहीं मानते उनके मतमे वर्णाश्रम नहीं है. सन् १८४५ मे चारो वेदोंसे कुछ बाते निकालकर एक पुंस्तक बनाई है उसीको शिक्षाके काम मेलाते है सन् १८५८ ई० मे. बाबू केशवचन्द्र सेन, इस समाजमे आय मिले उस समय समाज १० वर्षके बीच बड़ी उन्नति कर चुका था, और बंगालके अन्य प्रांतोमे भी उसकी साखा स्थापित हो चुकी थी, बाबू केसवचंद्र सेन और देवेद्रनाथ टैगोर मिलकर समाज को बड़ा लाम पहुचाया, बाबू केशवचंद्र सेन ब्रंह्म समाजमें नामी वक्ता था, उनका व्याख्यान बड़ा असर कारक था, सन् १८८४ ई० मे उनका देहान्त हो गया, कलकत्तेमे समाजसे एक पत्र निकलता है सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय भारतर्षमे २४०० मनुष्यथे जिनमे ७०८ केवल कलकत्तेमे थे,

---

सिंह मत.

निबार जिलेमे सिंहजी एक साधु थे वे कई वर्ष तक केवल दुग्धाहारमे रहकर बहुत काल तक मनुष्योंको उपदेश देते रहे अन्तमे वे एक जंगलमे चले गये वहां कठिन तप करके शरीरको सुखा डाला उनका यह मत था की शर्वदा हरि भजन करना चाहिये मूर्ती पूजासे कुछ लाभ नहीं है वेद पुराण मोक्षके नही। किन्तु समय वितानेके साधन है इस मतमे ग्रहस्थ और विरक्त दो प्रकारके साधु होते है जो बड़े नम्र और शान्त स्वभाव के होते हैं सिंहजीके नामपर हुसंगावाद आदि शहरोंमे मंदिर है जिनमे उनके चरण पादुका गादी आदि है मंदिरमे किसी जातिके मनुष्योंको जानेका निषेध नही है इस मजहबमे बहुत कम मनुष्य अभी सामिल है परन्तु उपदेश चालू रहनेसे क्रमसे मनुष्य बढ़ रहें है.

इस मतमे गाजा पीनेकी चाल है.

गांजेसे विज्ञान जाय गांजेसे अज्ञान आय यम नेम योग क्षेम नष्ट गांजा पानसे। रूप जाय रग जाय विदुषोका सग जाय शक्ती अग अंग जाय गांजा फुक वानसे। अहं ब्रंह्म जाप और हरीका मिलाप जाय कीरती प्रताप जाय गांजें दयावानसे, दगाखोरे लोगो और दुख दहक्यिां न पांओ गांजेंसे बचा सो बचाकाल वीर वानसे।

रविभाण मत.

यहमत गुजरात देशमे बड़ोदाराज्यके " शेरखी " गामसे चला इस मतके नियत करने वाले स्वामी रवीजी थे पछि भांण नामक उनके शिष्य हुये इस मतके मदिर खभालिया अमदावाद आदि शहरो मे हुये विशेष करके भाठिया और लुहाने इस मतमेहैं ई महतो के वाद रेवादासजी हुये जिनके राधिका दासजी हुए जो इसमतको अच्छी सकल मे लाये प्रथम मूर्तीकी जगहकेवल रवीस्वामी की समाधी मात्रथी श्री राधिकादासजी श्रीरामचंद्रजीकी प्रतिमा प्रतिष्ठित करवादी उस शमय उनके अनुयायी वहुत विरोध किया अतमे वे सव सान्त होगये राधिकादासजी पंडित है और योगाभ्यामी है उन्होने कई हजार रुपये लगाकर स्थानको सुधाराहै और रामेश्वर शिवका मंदिर बनवाया तथा रवीभाण सागर नामका सरोवर वनाया है और रविभाण चरित्र प्रकाश तथा धर्मोपदेशगीतादि कई पुस्तके वनाई इस मतको " रविभाण संप्रदाय कहतेहै और मदिरको दरवार कहतेहै महतका नामोच्चारण के अन्तमे साहब शब्द रहता है परतु अब इसमे परि

वर्तन हो गया है नामके पास "मुनी" अथवा प्रसाद शब्द हो गया है जैसे राधिकादास मुनी और केशव प्रसाद—राघवप्रसाद—रामप्रसादादि, इस मतमे संन्यासी-भी होते हैं वे सिखासूत्र दंड नहीं रखते इस मतके साधु क्षमाशील होते हैं चंदन केशरादिका तिलक करते हैं और कंठी वांधते हैं तथा कानमे तुलसीकी मणिका पहिरते हैं इस मतके साधु गृहस्थ भाठिया लुहाणाके घर उनके स्त्रियोंकी वनाई रोटी खाते है मै सं. १९५८ में वडोदाके आगे वांजवाके स्टेशनसे सेरखी गया था. वहांसे १० मील है सेरखी बहुत छोटा ग्राम जंगलमें है एक नालाके बीच होकर रस्ता गया है मेरे जानेके शमय महंत श्री राधिकादासजी मुनी थे मै छँ दिन रहाथा, स्थान ऊंची भूमीपर है समाधिके तथा रामचन्द्रजीके सिहासनो मे चांदीके पत्र जड़े. हैं पूर्णिमासी आदि पर्वो मे वहुत मनुष्य आसपासके ग्रामीण वहां आते और भजन करते है तथा समाधी को पूजा चढ़ातेहैं वहस्थान देखने योग्य है मंदिरके तरफसे सदावर्त है तथा आये गयेका सत्कार होताहैं यह पुस्तक लिखे पीछे श्रीराधिकादासजीका देहान्त होगयाहैं और उसजगह श्री राघोप्रसादजी दूसरे महत वैठे है.

———

प्रणामी अर्थात् मिहराज मत.

अमरकोटमे मतुमहता नामके एक कायस्थ रहतेथे उनके स्त्रीका नाम कुवरबाई था. उन्ही बाई साहवा के गर्भसे विक्रम स. १६३६ मे एक पुत्र भया जिसका नाम मेहताजी देवचद्र रक्खा देवचंद्रजी ब्राह्मणोके पास कुछ पढ़ लिखकर और अपनी बुद्धीसे एक नया मजहब खडा किया. प्रथम जामनगरके शेठ गागजी इस मतमे दाखिल हुए औरभी कुछ थोडें मनुष्य इस मतमे सामिल हुए जामनगरके दीवान केशवजी जो लुहाणा ज्ञातीके थे उनके सं. १६७५ मे पुत्र हुआ जिसका नाम दीवानजी 'प्राणनाथ'' रक्खा प्राणनाथजी योग्य वय होनेपर इस देवचंद्रजीके नये मतमे शामिल होकर इन्होने मजहबको विशेष फैलाया इनका उपदेश हृदय ग्राही था, पीछे प्राणनाथजी अनेक शहरों देशोमें उपदेश करते कराते काबुल अरबस्तान, तक गये क्योंकि ये कुरान और पुरान, हिंदु और मुसलमान दोनोको समान भावसे मानते और धर्ममे दाखिल करतेथे जब ये दिल्ली गये तब यवनराट उनका मान किया सं० १७७२ मे देवचद्रजीका जाम नगरमे देहान्त हो गया,

वहां उनका समाधी मंदिर बना है प्राणनाथजीका देहान्त सं. १७५१ मे पन्नामे हुवा वहां उनका समाधी मंदिर बना है इस मतके साधु सतोगुणी होते है तुलसीकी माला तथा कंठी बांधते हैं विरक्त गृहस्थदोनो इसमतमे दाखिल होते हैं मूर्तीकी जगह गादी पुस्तकादिरखते हैं और उसीकी पूजा आरती शृंगार स्तुती इत्यादि करते है. इस मतके लोग नाशिकाके ऊपरसे तिलक और बीचिमे बिंदी करते है आपुसमें मिलनेके शमय " प्रणाम " कहते है इसीसे प्रणामी मत कहते है इस मतकी गादीमें महंत विरक्त रहते है इनकी गादी सुरत (गुजरात) तथा जामनगर (काठियावाड़) तथा पन्ना (बुंदेलखंड) मे है पन्नामे जब महाराजा छत्रशालसिहजी थें तब प्राणनाथजी वहां गये थे वहीं उनका देहान्त हो गया, पन्नाका राजवंश इसी मतका अनुयायी था बीचमें महंतके कुछ अयोग्य व्यवहारसे या अन्य कारणसे असंतुष्ट होकर राजा तथा राजवंश इस मतको परित्याग कर दिया, अबभी पन्नाके राजा राज्यसनिके शमय तथा पर्वादिमे कई वार कुटुंब सहित दरशनको जाते है और मदिरकी परवरिश रखते है पन्ना एक देशी राज्य बुंदेलखंडके अंतरगत नौगांव एजसीमे है पन्ना

जानेवालेको जबलपुरसे इलाहाबाद आने जानेवाली रेलमे " सतना " स्टेशनपर उतरना चाहिये वहांसे २१ मील है बैलगाड़ी. घोड़ा. आदि भाडे. मिलते है.

चकला मत.

देवचंद अर्थात् प्रणामी मतके नियत करनेवालेके पुत्र विहारीदासजी थे जब किसी अनिवार्य कारनसे पिता पुत्रमे वैमनस्य उत्पन्न भया तब उन्होंने अपना नया पथ चलाया उनकी गादी चकला गाममे है इसीसे इस मतको चकला पंथ तथा चकला मंदिर कहते हैं इस मतके लोग कृष्ण भगवानके ११ वर्ष और ५१ दिनकी मूर्तीकी उपासना करते है परंतु मूर्तीकी जगह प्राणनाथ जीका बनाया " कुलीयमस्वरूप " तथा " कलश " आदि पुस्तक रखते है कबीरके मतको मिलता हुआ यह मत है पुजारीको धामी कहते है.

श्रीस्वामीनारायण मत.

श्रीयुत सहजानन्दप्रभु, जगद्दितजन्म महान
तिनकोपदवन्दनकरौं, धरौं सदा उरध्यान

अयोध्याजीके नगीच छपैया गाममे धर्मदेव नामके सरयूपारी एक ब्राह्मण थे उनके स्त्रीका नाम भक्तिदेवी था, वहीं भक्तिदेवीके गर्भसे सन १८८१ अप्रेलकी १० तारीख अर्थात् संवत १९३७ चैत्र सुद नौमीको एक पुत्र भया धर्मदेवजी पुत्रका नाम हरीकृष्ण रक्खा (कोई घनश्याम कहता है) हरिकृष्ण कुछ पढ़. लिख कर यात्राके लिये निकले और अनेक पुण्यक्षेत्रमे साधु तथा योगियोंका सत्संग और गंगादि पवित्र जलोमे स्नान कर दक्षिणादि देशोमे फिरनेसे और सत् पुरुषोंके सहवाससे हरिकृष्णजीको असाधारन ज्ञानके साथ कुछ योगकाभी अभ्यास किया, फिरभी देशाटनसे उनकी आत्मा तृप्त न हुई तब वे काठियावाड़. देशमे आये वहां पर रामानुज संप्रदायके रामानंदस्वामी योगाभ्यासी थे उन्हींके हरिकृष्णजी शिष्य हो गये, स्वामीजीने हरिकृष्णजीका नाम " सहजानंद ', रक्खा.

सहजानंदजीके उपदेशसे "गढ़रा" काठी दादा खाचर औरभी अनेक कई जिमीनदार, और ठाकुर सहजानंदके-चेले हो गये तब इन्होने अपना स्वामीनारायणके नाम-से नया पंथ चलाया. इस मतके बड़े बड़े शिखरदार मंदिर वडोदा, सुरत, भडोच, अमदावाद, वड़ताल, आदि शहरोमें बने है. इस मतके गुजरात काठियावाड कच्छादि देशोमें हजारो लाखो शिष्य है; इस मतके लोग अभक्ष भक्षण नहीं करते, मस्तकमे सफेद खड़ा तिलक और बीचमे पैसाके बरोबर लाल बिन्दु लगाते है. साधु और ब्रह्मचारी दो प्रकारके विरक्त होते है ब्रह्म-चारि श्वेत वस्त्र पहिर्ते और पूजा रसोई आदि कर्म करते है और साधु गेरु रंगा वस्त्र पहिर्ते और द्रव्यादि नहीं छूते इस मतमे साधु होवे वा ब्रह्मचारि परन्तु शहर या ग्राममे अकेले नहीं जाते और स्त्रियोको देखना या संभा पणादि नहीं करते इसीसे इनके मतके मंदिरोमे दर्शन करनेका मार्ग स्त्री पुरषोका भिन्न भिन्न रहता है और साधुडी स्त्रियोका निवास साधुओसे भिन्न तथा गृहस्थ स्त्रियोकी उपदेष्टाभी वही साधुडी स्त्रिया है साधु जल पात्र कमडलु रखते और सब पदार्थ इकठा मिलाकर भोजन करते है. साधुवोमेभी "पाळा" आदि कई भेद है आचार्य गृहस्थ और साधु ब्रह्मचारी सर्वदा विरक्त होते है शिखा यज्ञोपवित रखते है.

इस मतके मंदिरोमे, लक्ष्मीनारायण, राधाकृष्ण, नरनारायण, कृष्णबलदेव, और सहजानन्द, तथा स्वामी सहजानंदजीके बाप धर्मदेव और माता भक्तीदेवीके अतिरिक्त शिव, गणेश, सूर्य, हनुमानादिकी मूर्तिया लक्षों रुपयेके वस्त्राभूषणसे साज्जित रहती हैं इस मतमे कोई साधु वा ब्रह्मचारि बीमार होवे तो उसको मंदिरके एक कुवामे जिसे वे लोग इसी निमित्त बनाते थे फेंक देतेथे परन्तु यह चाल अब बहुत घट गई हैं ऐसी किंवदंती है हिन्दू शास्त्रोमे लिखा हैकि मनुष्यके मृत्युके समय यम अथवा धर्मके दूत जीवको पकड़नेके लिये आते और ले जाते हैं परन्तु इस मतके मनुष्योंको लेनेके लिये दूतोंकी जगह सहजानन्दजी स्वयं आते है ऐसा कहते है इस मतका नाम "उद्धवी संप्रदाय" है परन्तु लोग "स्वामीनारायण पंथ" कहते है कोई कोई कहते हैं कि नारायण नामका एक मोची और सहजानद स्वामी मिलकर यह पंथ चलाया कोई सहजानदजीको मोची बताता है परतु उपरोक्त बातोंका ठीक प्रमाण हमको नहीं मिला, अथवा सतनामी पंथमे जैसे चमार अधिक है इसी तरेह इस मतमे मोची बहुत है इसीसे लोग अनुमान करते हैकि वे स्वयं मोची थे, जनश्रुति हैकि स्वामीनारायण अर्थात् सहजानन्दजीको एक प्रेत प्रसन्न होकर मुकुट दिया था और कहाथाकि इसको मस्तकमे

पहिरनेसे आप चतुर्भुज होकर कृष्णके सद्रस हो जावेगे स्वामीनारायण कृष्ण बनकर हजारों मनुष्योंको चेला बना लिया कुछभी हो स्वामीनारायण प्रसिद्ध पुरुष हो गये सेकड़ो नहीं किन्तु हजारों मनुष्य उनको ईश्वर मानतेहैं उनके साधु क्षमाशील और हमेशां धर्मोपदेशमे लगे रहते है पढ़नेके लिये कई पाठशाला हैं इस मतकी पुस्तके शिक्षापत्री, वचनामृतादि औरभी भजनकी बहुत पुस्तके है. दुनियामें रीती नीतिमे कोईभी श्रेष्टमे श्रेष्ट मत होवे तो मात्र " स्वामीनारायण " का है इस मतके ब्रह्मचारि बड़ेहीं पवित्र होते है.

स्वामीनारायणका देहान्त संवत १८८६ जेष्ठ सु. १० गढ़रामे हुआ कुछभी होय परन्तु स्वामीनाराय-णके धर्मसे देसको भारी लाभ पहुचा है; लाखो आदमी मद्य मांस चोरी व्यभिचार छोड़कर सतसंगमे लगे है. इस मतके साधु बडे शांत होते है और निरर्थक बैठ-कर गपोड़ा कभी नहीं मारते और धर्म उपदेश करते है इस मतमे ब्रह्मचर्य दीक्षाभी लेते है.

हरि गुरु अगिनी पूजिके " साधे सदा त्रिकाल, ब्रह्मचर्यव्रत धारिके" गुरु गृहवसे सकाल **कवित्त**—पूजत रहत हरिगुरु अग्नि सूरजको साधिके त्रिकाल कर्म करे शुभकारीको ॥ मनवस करि पढ़ि वेदनको भेदजाने

गुरु कुल वसै तजै मादक अहारीको ॥ भणै कविराज रहै चतुर शुशील श्रद्धामान प्रयोजन मात्र कारि व्यवहारीको॥ तत्व उरधारी ब्रह्मचर्य व्रतकारी होत या ते सुख भारी सदा बाल ब्रह्मचारीको ॥ स्वामीनारायण, की अनेक चमत्कारिक बाते उनके, पुस्तकोंमे है आपुसमे एक दूसरेसे मिलते शमय जय श्रीस्वामी नारायण कहते है जो इस मतमे दाखिल होवे उसे सतसंगी कहते है. शिष्योंकी इतनी प्रबलता इस मतमे है कि यदि आचार्य अयोग्य होवे तो सब त्यागी और गृहस्थ मिलकर सीघ्रहीं पदभ्रष्ट कर सकते है संवत १९६५ मे अयोग्य व्यवहार करनेसे वडताल गादीके आचार्य " लक्ष्मीप्रसाद " जी उठा दिये गये, और उस जगह श्रीमान् श्रीपातिप्रसादजी बैठाए गये, जबसे इस मतकी नेय पडी तबसे आचार्यको चेले पदभ्रष्ट करें यह प्रथयही घटना है वड़ताल जानेवालेको बड़ोदाके पास " नावली " स्टेसन पर उतरना चाहिये वहांसे पासही है वहां स्थान मंदीर आदिके अतिरिक्त एक सुन्दर सरोवर है उसे वेलोग गोमती कहंते है.

श्रीनृसिंह मत.

श्रीयुत नरसिंहरामजी नागर ब्राह्मण थे जिन्हे गुर्जरातीभाषामे नरसीराम कहतेथे नागर ब्राह्मण गुजराती ब्राह्मणोंमें उत्तम गिने जाते है नरसिंहरामजी पांच भाई थे एक तो कवीश्वर थे दुसरेभी कुछ कथादिसे अपना जीवन व्यतीत करने लगे जैसे एक भ्राताको कविताका लक्ष था वैसेंही नरसीरामजीको " योग " का जैसे कविश्वरजी गुंजराती भाषाके उत्तम कवियोमे गिने जाते थे वैसेही नरसीरामजी योगियोंमे, नरसीरामजी गुजरात प्रदेशके वड़ोदा शहरमे रहतेथे वहीं उनकी गादी है योगके लिये वहुतसे वैरिष्टर, वकील आदि औरभी वहुतसे भद्र पुरुष उनके शिष्य हो गये इस मतमे मुर्ती पूजा श्राद्ध तर्पण वर्णाश्रम सब जैसा का तैसा है किसीमे कुछ परिवर्तन नहीं हुआ सुनते हैकि वड़ोदा नरेशभी उनका सन्मान करतेथे वे गृहस्थ थे श्रीनृसिंहाचार्यजीका जन्म कडोद (सूरत) मे हुआथा, इस मतके कई मासिक पत्र निकलते हैं रा. छोटालालजी अच्छी सकलमे लाये इनके मंदिरोमे प्रथः श्रीनृसिंहाचार्यजीका चित्र प्रतिमाकी जगह रहता है पुनर्जन्म मानते है मत अध्यात्मित वेदान्त, प्रतिपादित है.

विनके पुत्र पौत्रादि हैं उनकी गादीकी साखा सुरत भड़ोच आदिस्थानोमे है उन्होने पीछेसे "आचार्यपद" धारण करलिया था इसलिये उनको उनकेशिष्य श्रीनृसिहाचार्य्य तथा श्रीपरमात्मानृसिहाचार्य्य कहते है. उनके नामकी एक दो लायब्रेरी है और वार्षिक उत्सवके निमित्त फंड नियत्त है मेरे परमामित्र श्रीयुत ठाकुरलाल प्राणलाल मौला. बीए. एल. एल बी वकील हाई कोर्ट, भड़ोच निवासी इसी धर्मके अनुयायी थे. मै जब सं. १९५८ मे भड़ोच गया था तब उनसे मिलकर इस धर्म विषयमे बहुत कुछ अनुभव प्राप्त किया था. इस मतके लोग बहुतही सज्जन और शान्त होते है और कभी किसीकी निन्दा नही करते॥ मजहब-वालोको॥ श्रेय साधक अधिकारी ॥ वर्ग कहते है वर्तमान आचार्य श्री उपेद्र भगवान (श्रीनृसिंहतनय) है.

श्रीएकनाथ मत.

इस मतका मठ महाराष्ट्र प्रदेशके पेठन शहरमे है उसकी साखा देवगड़, प्रघाति कई स्थानोमेहै. एकनाथजीका जन्म पेठनमे हुवाथा और वहांके प्रसिद्ध पंडित जो

बड़े योगी और ब्रह्मनिष्ट थे और नाम उनका जनार्दन पंत था उन्हींसे एकनाथजी योग और विद्या प्राप्त किया था और उक्त पंडितजीके कृपासे देवगढ़मे एकनाथ-जीको श्रीदत्तात्रयजीके प्रत्यक्ष दर्शन भयेथे. दत्तात्रयजी एकनाथजीसे कहाथाकी बच्चा तू प्रसिद्ध योगी होगा और मस्तकपर हाथ रखाथा तथा आकाशवाणीभी हुई थी पीछे एकनाथजी काशी, अयोध्या,मथुरा,बद्रीनारायण जगदीश, कांची. रंगजी, वेंकटेशजी आदि अनेक यात्रा कीथी एकनाथजीका उपदेश थाकी सर्वदा हरि भजन करना उचित है इस मतके कोई कोई भगवा वस्त्र पहिर हाथमे त्रिशूल रखतेहै. शिव दत्तात्रय विष्णु आदिकी उपासना करते है तथा वर्णाश्रम तीर्थ श्राद्ध प्रतिमा पूजादि मानते है मलयचंदन मस्तकमे खड़ा कोई आड़ा लगाते है कोई करताल बजाकर हरिकीर्तन करते है हरिदासकी कथा खड़े खड़े करनेकी इस मतमे बहुत चाल है स्वभावके बड़े शान्त और नम्र होते है कथा. सेली. शृंगी. झोली आदिभी रखते है मै जब मालवा प्रदेशमे गया था तब राजपुर नरेशके प्रायवेट सेक्रेटरी श्रीयुत शंकररावजीके लघु भ्राता हमारे परम मित्र रा. सखारामपन्तजी जो इसी मतके अनुयायी थे इस मतका परिचय दियाथा प्रसिद्ध शूर वीर दक्षिणादित्य महाराज शिवाजीके गुरू स्वामी रामदासजी इसी एकनाथके

मतके थे एकनाथजीके दादाका नाम " चक्रपाणि " था वे बडे कुलीन ब्राह्मण थे, इस मतवाले हाथमे लाल झंडी लेकर पर्वोपर पंढरपुर बहुत जाते है.

महानुभाव मत.

महाराष्ट्र देशके पेठन शहरमे जब राजा चंद्रसेन राज्य करते थे उनके मंत्रीका नाम हेमाद्रीपंत था उसी राज्यके अंतरगत " शेवे " गामके जांगीरदार गोपाल-पंत थे उनके एक पुत्र भया जिस्का नाम पंतजीने " श्रीकृष्ण " रक्खा फिर श्रीकृष्ण ब्राह्मणोके पास कुछ ज्योतिष और संस्कृतादि पढनेसे लोग श्रीकृष्णभट्ट ज्योतिषी कहते थे भट्टजीको एक प्रेतकी उपाशनाथी एक दिन प्रेत भट्टजीके उपर प्रशन्न होकर कहाकि आपकी इच्छा होवे सो वरदान मागो तब भट्टजी कहाकि आप यह वरदान देवें कि मै नामके अनुरूप हो जाऊं अर्थात् श्रीकृष्णं भगवानके सद्रस चतुर्भुज हो जाऊं तब प्रेत प्रशन्न होकर भट्टजीको एक मुकुट दिया और कहा कि तुम मुकुट पाहिरने पर कृष्णके सद्रस और नहीं पाहिरनेपर मनुष्यके सद्रस देखाओगे.

परंतु अधर्मका आचरन नहीं करना जब भट्टजी कृष्णके सद्रस हो गये तब लगभग दस हजार मनुष्य उनके अनुयायी हो गये भट्टजी विषयक लालचमे पड़कर रास खेलने लगे राज्यमत्री यह वृत्तान्त सुनकर अपने इष्ट गणपतिको स्तवन किया. गणेशजी मत्रीस मुकुटादिका समाचार कहकर अद्रष्ट हो गये, तब अमात्य अपने एक कर्मचारीको भट्टजीको बुलाने भेजा और इधर नरपतिसे सब हकीकत कहा.

जब भट्टजी आये तब नरेश भट्टजीका स्वरुप चतुर्भुज देखकर बडा आश्चर्य माना अन्तमे नराधिप भट्टजीके स्नान भोजनादिका बहुत आग्रह किया परन्तु भट्टजी इस बातको साफ न कह दिया, क्योंकि स्नानके समय भट्टजीको मुकुट उतारना पड़े और मुकुट उतारनेसे भट्टजीकी पोल खुल जाय, अंतमे राजाके इगत करनेसे एक कर्मचारि मुकुट उतार लिया राजा श्रीकृष्णभट्टजीको अनुयायियों साहित माथा मुडवाकर काला वस्त्र पहिराकर अपने राज्यके हदसे बाहर निकलवा दिया. काला वस्त्र प्रथम अपमानित समझा जाता था परंतु अब तो लोग प्रशन्नतासे धारन करते है.

इस धर्मका प्रचार महाराष्ट्र खानदेश, आदिमे है इस मतको नियत करनेवाले की अर्थात् कृष्णभट्टजी

दत्तात्रयादिकी मुर्ती मठोमे रखते है और काला वस्त्र पहिरते हैं अथवा अन्य वस्त्रमे काला चिन्ह लगाकर पहिरते है और कहते हैकि हम बलदेवजीके उपासक हैं इस मतके महन्तको राज्यचिन्ह अर्थात् सिक्का, छडी, चमर, डंका, निशान, पालकी, छत्रादि रहतेहै इनके मठ रुद्धपुर, फलटन, पेठन, करंजे, दारियापुरमे, मुख्यमठ और नरमठ, नारायणमठ, ऋषीमठ, प्रवर मठादि उप मठोमे हैं इस मतमे गृहस्थ और विरक्त दो होते है विरक्त स्त्री पुरुष सर्वदा दाडी मूछ सहित शिखा मुड-वाते है परंतु विवाहका निषेद नहीं है विवाहकी विधी ऐसी हैकि मठमे जिस स्त्रिसे विवाह करना होवे पुरुष स्त्रीके कांधेपर अपना वस्त्र रखता है यदि स्त्री वस्त्र नीचे न गिरावे तो विवाह निश्चे हो जाता है पीछे कुछ विधि लौकिक करके मठमे महन्तके समक्ष स्त्री पुरुष अर्थात वही वर कन्या अलग अलग बिछाने बिछाकर लेट जाते है फिर वर कहता हैकि " श्रीकृ-ष्णका गड्बड् गुंडा आता है " वहु कहती है कि " खुसीसे आओ " फिर वर लोटते लोटते वहुके पास जाता है और विवाह विधि समाप्त होती है.

इस मतके लोग जीव हिंसा कभी नही करते आश्विन मासमे जब कोई देशी राज्य अथवा देवीके

मंदिरमे पशु बली होता है तब ये लोग ग्राम छोडकर बाहर खेतोंमे चले जाते है. ये लोग भोजन करनेके समय आवश्यक पदार्थ प्रथमही ले लेते है अर्थात भोजन करते करते कुछभी नहीं लेते इनकी पुस्तके कथा करनेकीये है लीलामृत, लीलामृतासिन्धु, बाललीला, गोपीविलास, कृष्णचारितामृत, इत्यादि पुस्तके एक जुदे प्रकार लिपी की है जो धर्म ग्रहण करनेके बाद पढाई जाती है इस मतको कोई कोई मानभाव मत कहते है इस मतके मनुष्य दुसरे मत वालेको अपने मतकी बात कभी नही करते बहुतसे लोग गृहस्थ रहते है.

दोहा—चारिवरण आश्रम सदा-है सबको शिर मौर गृहस्थ आश्रमके सद्रस कोई न जगमे और—
कवित्त—चारिहूवरन चारि आश्रमको मूलयही याहींते सकल अबादानी होती वस्ती है ॥ वंश बढवारि व्याह सादी भोग राग सुख रहत है यामे पुण्यदान जबर्दस्ती है ॥ मुकन्दगुपाल याते जगतके जीमे जीव सद मवहीकी भयो करै परवसी है ॥ तनुकी दुरुस्ती रहै धनकी न सुस्ती तौ पै पृथ्वीके बीच सरबो परि गृहस्ती है ॥

दत्तात्रयादिकी मुर्ती मठोमे रखते है और काला वस्त्र पहिरते है अथवा अन्य वस्त्रमे काला चिन्ह लगाकर पहिरते है और कहते हैकि हम बलदेवजीके उपासक हैं इस मतके महन्तको राज्यचिन्ह अर्थात् सिक्का, छडी, चमर, डंका, निशान, पालकी, छत्रादि रहतेहै इनके मठ रुद्धपुर, फलटन, पेठन, करंजे, दरियापुरमे, मुख्यमठ और नरमठ, नारायणमठ, ऋषीमठ, प्रवर मठादि उप मठोमे हैं इस मतमे गृहस्थ और विरक्त दो होते है विरक्त स्त्री पुरुष सर्वदा दाडी मूछ सहित शिखा मुडवाते है परंतु विवाहका निषेद नहीं है विवाहकी विधी ऐसी हैकि मठमे जिस स्त्रिसे विवाह करना होवे पुरुष स्त्रीके कांधेपर अपना वस्त्र रखता है यदि स्त्री वस्त्र नींचे न गिरावे तो विवाह निश्चे हो जाता है पीछे कुछ विधि लौकिक करके मठमे महन्तके समक्ष स्त्री पुरुष अर्थात वही वर कन्या अलग अलग बिछाने बिछाकर लेट जाते है फिर वर कहता हैकि " श्रीकृष्णका गड्बड् गुंड़ा आता है " वहु कहती है कि " खुसीसे आओ " फिर वर लोटते लोटते वहुके पास जाता है और विवाह विधि समाप्त होती है.

इस मतके लोग जीव हिंसा कभी नही करते आश्विन मासमे जब कोई देशी राज्य अथवा देवीके

मंदिरमे पशु बली होता है तब ये लोग ग्राम छोडकर बाहर खेतोंमे चले जाते है. ये लोग भोजन करनेके समय आवश्यक पदार्थ प्रथमही लै लेते है अर्थात भोजन करते करते कुछभी नहीं लेते इनकी पुस्तके कथा करनेकीये है लीलामृत, लीलामृतासिन्धु, बाललीला, गोपीविलास, कृष्णचारेतामृत, इत्यादि पुस्तके एक जुदे प्रकार लिपी की है जो धर्म ग्रहण करनेके बाद पढाई जाती है इस मतको कोई कोई मानभाव मत कहते है इस मतके मनुष्य दुसरे मत वालेको अपने मतकी वात कभी नहीं करते वहुतसे लोग गृहस्थ रहते है.

दोहा—चारिवरण आश्रम सदा-है सबको शिर मौर गृहस्थ आश्रनके राइस कोई न जगमे और—

कवित्त—चारिहूवरन चारि आश्रमको मूलयही याहींते सकल अवादानी होती वस्ती है ॥ वंश वढवारि व्याह सादी भोग राग सुख रहत है यामे पुण्यदान जबर्दस्ती है ॥ मुकाविगुपाल याते जगतके जीमे जीव सद मवहीकी मयो करै परवसी है ॥ तनुकी दुरस्ती रहे धनकी न सुस्ती तौ पै पृथ्वीके बीच सरवो परि गृहस्ती है ॥



गोपीनाथ मत.

श्रीयुत गोपीनाथजी बहुत वर्ष हो गये हैं वे वीस-नगरा नागर ब्राह्मण थे जो गुजरातके छ प्रकारके नागर अर्थात् वडनगरा, वीसनगरा, साठोद्रा, प्रश्नोरा, और चित्रोड़ा आदि ब्राह्मणोमे दूसरे श्रेणीमे माने जातेहै कहते हैकि श्रीरामचंद्रजी उन्हे प्रत्यक्ष दर्शन दियाथा इस मतमे मुख्य उपासना साकार रामचद्रजीकी है आचार्य गृहस्थ होते है और रामानुजियोंके माफिक सफेद तिलक लगाते है उक्त संप्रदायकी गादी वड़नगर (गुजरात) वीसनगर, सिद्धपुर आदिमे है और उनके मदिरोमे उनकी (गोपीनाथजीकी) मूर्तीभी रखने है धर्मकी रीती नीती उत्तम है परन्तु उपदेश नही होनेसे सम्प्रदायकी वृद्धी नही होती.

संवत १९०९ मे. रा. सखाराम भिकमशेठके छाप-खानेसे छपी पुस्तक "तुलसीदास कृत रामायण महात्म्य" प० रमणबिहारीदासजी कृत चौपाई दोहामे है उसमे लिखा हैकि कलियुगमे भजन और रामायण दोई सार है, मै एक कलिकल्मष नष्ट करनेवाला इतिहास कहताहू लक्ष्मणदत्त नागर ब्राह्मण गुजरात देशमे थे वे नित्य रामा-यण पाठ करते थे, एक दिन अपनी धर्म पत्नी जो

पति भक्ती परायण पतिव्रताथी, कहाकि अपने कुछ संतति नहीं है इस्से तीर्थाटनको दोनो जन चले अनेक तीर्थ सरोवर नदीयोंमे मज्जन करते करते अयोध्याजी आये और सरयुके पुन्य जलमे स्नान कर तप करने लगे तव दशरथ नन्दन रामचंद्र प्रगट भये और दंपती मिलकर स्तुती की और कहाकि वे पुरुष धन्य है जो आप जैसे पुत्र प्राप्त करते है ऐसा वेद वाक्य है तव श्रीरामचंद्रजी वोलेकि मै कुछ अंससे आपके गृह पुत्र होकर प्रगट हूंगा लक्ष्मणधरजी प्रशन्न होकर घर आये और थोड़ेही कालमे

दोहा.

रघुवर अल्पहि दिनन महा लखणधर ग्रह आय
जन्मे जग उद्धारहित। गोपीनाथ कहाय.

गोपीनाथजीका जन्म सवत १२१२ मे फाल्गुण वदी ११ उपरान्त १२ दुपहर १२ वजे भया. वायु पुराणमे लिखा हैकि " कलौच रामचंद्रेण जनम्योद्धार कारिणा। लक्ष्मी धरात्मज. श्रीमान गोपीनाथ प्रकाश्यते॥"

भविष्योतर पुराणमे लिखा हैकि " घोरे कलियुगे प्राप्ते सिद्धक्षेत्रे स्वयं वने अग्निरूपो दुजाचारो। गोपीनाथो भविष्यति. "

गोपीनाथजीके तीसरी पुस्तमे नरसिंहलालजी भये जो काशीके पास वराह क्षेत्रमे रहतेथे एही नरसिंह-लालजी श्री तुलसीदासजीके गुरू है और तुलसीदासजी इन्हीके पास दीक्षा लेकर अध्यात्मरामायण पढ़ा तुलसी-दासजी अपने रामायणमे नर—हरी—आदि शब्दोमे वन्द-नाभी किया है गोपीनाथजीका मत उत्तम है और रीती नीती अच्छी है उनके वंशवाले " महाराजा " कहे जाते है.

कुबेर मत.

इस मतकी प्रधान गादी " शारसा " ग्रामेमे है वडोदाके पास " नावली " स्टेशनसे ५ मील है बहुत बड़ा शिखरदार मंदिर सुशोभित है इस मतवाले कंठी बांधते है और तिलक लगाते हैं कुबेरदास नामके एक साधुथे उन्हींसे इस मतकी नेव पड़ी गांववालोने मंदिर बनानेमे पूरी सहायताकी क्योंकी प्रथम यह निश्चै था की श्रीरणछोडजीकी मूर्ती बैठाई जावे पीछे कुछ मत भेद पड़नेसे कुबेरके अनुयायी सीघ्रतासे नारायणदास अर्थात कुबेरके गुरुकी पाषाणकी मूर्ती (करुणा सागर) लायकर मंदिरमे बैठादी, पीछे कई वखत ग्रामीनोके

संग खटपट हुई परन्तु प्रतिमा नहींउठीकोली महंत और वही साधु होकर रहते है पढनेकी चाल नही हैं दूसरे साधुवोके साथ उनका व्यवहार कम रहता है भगवा वस्त्र पहिनते है. और पैरपर, तुलसी चढवाते है.

शंतराम मत.

इस मतकी प्रधाने गादी अहमदावादके पास नडियाद कस्बेमे है वहां स्टेशनभी है इस मतके साधु संतरामजीके नामकी माला फेरते है और दीपकके योतिकी पूजा करते तथा गादीभी पूजते है दीपके चारो तरफ मयुरके पंख वहुत रखते है साधुभी वहुत रहते है आये गये विदेशीको आश्रय तथा अन्न देते है इस मतमे पठन पाठनका निषेध है गलेमे कंठी वाधते है उस मंदिरमे वहुत मनुप्योंकी पूज्य वुद्धी है दूर दूरके मनुष्य अनेक मानता चढ़ानेके लिये मंदिरमे जाते है.

कवित्त—अलख अनीह जो अमल अविनाशी अज अनुभव गम्य हृदयेशको सुमिरिये ॥ अगुण अद्वैत

जो अनामय अखंड निरवाधि सुखरासी पल एकना विसरिये ॥ सुकविगुपाल वारि बीचिमे न भेद सदा सोते तांइ तोइमे न भेद डर करिये ॥ मनगो अतीत जो अनूपम अरूप ऐसे परब्रंह्मको सदांई ध्यान धरिये ॥

सतनामी मत.

सन १८३५ ई० मे घासीदास नामका एक विना पढ़ा मनुष्य अपने अनुयायी मित्र परिचित वर्गसे कहा कि मै जाता हूं तुम लोग आजके ८ मास वीतने पर इस पर्वतके नीचे अगहन सुद ५ को प्रातःकाल इकत्रित होना, ऐसा कहकर जंगलमे चला गया ८ मास वीतने पर उस नियत दिनको बहुतसे चर्मकार (चमार) एकत्रित हुये, प्रात.काल अंधेरे समय घासीदास पहाडसे उतरा और सब मनुष्योंसे और चेलोंसे अपना स्वर्ग जानेका वृन्तान्त कहा और घोषणा (आज्ञा) दियाकि सब मनुष्य एक समान है, मूर्ती पूजासे कुछ लाम नहीं है अमारे आज्ञानुसार चलनेसे मनुष्यका उद्धार होगा हमारे घरानेमे उपदेशक सर्वदा हुआ करेंगे घासी-

दासजीकी मृत्युके पीछे उसका बडा पुत्र बालकदास उत्तराधिकारी उपदेशक हुआ, किन्तु सन १८६० ई. मे किसी शत्रूद्वारा वध किया गया मध्य देशके बहुत चर्मकारों (चमारों) नें इस मतको ग्रहण किया है वे लोंग आसुतोष अपने गुरु मानते है प्रतिमाकी उपाशना चारो वेद पुराण वर्ण कुछ नहीं मानते आपुसमे मिळ-नेके समय सतनाम सतनाम कहते हैं इसीसे सतनामी कहेजाते है तथा प्रातिदिन सूर्यास्त और उदयके समय सतनाम कहकर दंडवत करते है मद्यमांस नहीं ग्रहण करते और बड़े धार्मिक हो रहे है उनका मुख्य मठ अर्थात् गादी रायपुरसे १३ मैल भंडार गाममे है जानेके लिये रायपुर स्टेशनपर बैलगाड़ी मिलती है रायपुर शहर मध्य देशमे, बगाल नागपुर रेलवे पर है सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय, मध्य देशमे, ३९८४०९ सतनामी थे मध्य देश जितने चमारोकी संख्या और उनकी अच्छी स्थिती धार्मीकपणा कोई प्रदेशोके चमारोमे नहीं हैं.

कुंभी मत.

उड़ीसा देशमे अगोल जिलाके अंतरगत धंकेल राज्यमे कुंभजी एक साधु रहते थे उनके पास दूर दूरके लोग भभूति प्रसादके लिये आते थे, और उनके पास कोई यक्षकीभि सिद्धी थी, उन्होने अपनी चातुर्यता और गुणोसे अनेक मनुष्योंको अपना अनुयायी बनाया अन्तमे वे सबको उपदेश दिया कि जितने ३३ किरोड़ देवता है वह सब एक परमेश्वरकी माया है ब्रह्मा, इंद्र, रुद्रादि अवश्य देवता है परन्तु एक ईश्वर (अलख) के आज्ञा कारी है इस लिये अलख (जो देखनेमे ना आवे) की उपाशना करते है वे लोग कुंभजीको इश्वर मानते है परन्तु उनकी गादी पूजी जाती है वे लोंग कहते हैकि इस मतको नियत करने वाला स्वर्गमे रहता है परन्तु वह निराकार (विना शरीरका) है ए लोंग संभलपुर (मध्यदेश) जिलेमे विसेस हैं मत चलाने वाले साधुके कई चेले थे उनमे गोविन्दास प्रधान था जो थोड़े दिनमे मरगया तब नरसिहदास उत्तराधिकारी हुआ जो गोविन्दासके स्मरणार्थ " बांकी " के नजीक एक मंदीर बनवाया बांकी गाममे पहिलेभी एक मदीर इनके मतका था.

लिंगायत मत,



तिलंगदेशमे महादेवभट्ट नामके एक धार्मिक ब्राह्मण रहतेथे. उनके स्त्रीका नाम मदलंविका जब स्त्रीको गर्भ धारण भया तव महादेव भट्टजीको बहुत आनन्द भयाः क्योंकि भट्टजीके वृद्धावस्थाका समय था और घरके सुखी थे परतु ईश्वरकी लीला वड़ी विचित्र है तीन वर्ष पूरे होनेपरभी प्रशव न भया और गर्भमे महा पीड़ा होने लगी तव दंपति शिवजीका स्तवन करने लगे, रात्रीको स्वप्नमे नंदी (शिवजीका वाहन) आयकर स्त्रीसे कहाकि तेरे गर्भमे मै हुं और अवतार धारन करके " वीरशैवधर्म " की स्थापना करूंगा जब पुत्र जन्म भया तव भट्टजी स्वप्नके अनुसर " वृषभ " नाम रक्का कोई कोई वसव कहते है जन्महीसे एक लिंग वृपवके गलेमे लटकता था, जब भट्टजी पुत्रके आठमें दर्प यज्ञोपवीत संस्कार करनेकी तजवीज करने लगे तब एक सभाके वीच " वृषभ " स्पष्ट कहादिया कि मेरेकु ब्राह्मणोंके संस्कार और वर्णाश्रमकी कोई अवश्यकता नहीं है मै वीरशैवधर्मकी स्थापना करूंगा.

पीछे वसव ब्राह्मणोके पास पढकर और अपनी बुद्धीकी प्रबलतासे राजाबीजल का मंत्री और उपदेशक कुछ दिन रहा लोग कहते हैकि बारह हजार मनुष्य लिंगायत अर्थात वृषवके मतमे आ गये इस मतके लोग कपड़ेमे या ठोरामे बांधकर शिवका एक लिंग गलेमे लटकाते है कोई कोई सोना चांदीमे मढ़ाकर कमरमे या गलेमे रखते हैं सर्वदा पुरुष तथा विधवा स्त्रिया माथा मुंड़ाती है ये लोग शिव और नदीको भजते है और लिंगको स्पर्श कराये बिना कभी जलभी नहीं पीते दिनमे कईवार स्नान करते और भस्म धारण करते हैं इस मतके लोग जातिभेद नहीं मानते और नरजस्वला दोष मानते, मृत्यु होनेपर रोना पाप समझते है इसीसे मृत्यु होनेपर कभी कोई नहीं रोता जहांतक होसके मृतकको कोईभी प्रकारके सुगधित पदार्थ लगाकर और वस्त्रालंकार फूल मालासे सुसोभित कर कई दिन रखते है और बाजाबजाकर नृत्य गीतादि करते हैं इनमे " रुद्रटप्या " नामका प्रसिद्ध पुरुष हुआ जिसने इस मतको बहुत फैलाया उनकी समाधी मैसुर राज्यमे है समाधीमे लिंगायत बहुत पुजारी रहते हैं समाधीके खर्चके लिये मैसूरसे बहुत द्रव्य मिलता है मरनेपर उसमतका धर्म गुरु मृतकके गलेमे एक चिट्ठी लिखकर बांधता है उसमे लिखा रहता हैकि

" हे शिव अपने इसभक्तको स्थान देना " इत्यादि उस समय मृतकके कुटुंबियोको योग्यताके अनुसार धर्म गुरुको द्रव्य देते है तब वह चिठ्ठीपर हस्ताक्षर करताहै.

अंतमे मल प्रभा और कृष्णा नदीके संगमपर सगमेश्वर शिवके लिगमे वृसव प्रवेश कर गये शिवके लिंग मे अभीतक विवर देख पडता है वहा बहुतसे लिगायत यात्रा जाते है लिगायत माध्वमत वालोकों और माध्ववालें लिंगायतोके स्पर्स होनेपर स्नान करते है इस मतके लोग निजाम मैसूर आदि राज्योमे और अगरेजी राजके कुर्ग राज्यमहेंद्री मद्रास आदि प्रान्तोमे तिजारत करते है इस मतको लिंगायत अथवा जंगम संप्रदाय कहते हैं इस मतमे स्त्रियोंका वड़ा सन्मान रखते है और पूजनीय मानते है इस मतका विस्त्रत वर्णन वगवासिनी श्रीमती विधुवदनी देवी अपने " लवंगलता नामक बंगला पुस्तकमे वहुत उत्तम किया है.

श्रीमती मद्रासमे कई वर्ष रहकर इस मतका अनुभव किया था उस पुस्तकमे स्त्रियोंके संवन्धमे हिन्दीमे (गु. क.) की एक कविता इस प्रकार है—कवित्त—

घरको रखावे सुख संपति वढावे काम तपनि मिटावे चित चिंताको नसावे जो ॥ भोजन जिमावे नित सुखमे गमावे दिन हित्त उपजावे हिय कुशल मनावे

जो ॥ उद्यम लगावे जग यश करवावे सब दुखन नसावे भलिटहल बनावे जो ॥ मुकवि गुपाल घर ऐसी नारि आवे जो पै जीवतही जगमे सुकृत नर पावे जो ॥

दोहा:—जा घर माहि गुपाल कवि पतिव्रता त्रिय होय ॥ आपतरे तारे पतिहि कुटुम्ब कृतारथ जोय. परमारथ समझै नहीं स्वारथमे लवलीन ॥ ऐसी या संसारमे रहाति नारि मतिहीन.

कवित—वृथाठान ठाने दया धरम न आने दुख हीनको न भानै साधु संग न पिछानै है ॥ भरि अभिमाने समुझे न लाभ हाने पाप पुण्यको न छाने हिय अधिक अज्ञाने है ॥ गहकिकै सुकविगुपाल गुण गाने नाहि डोले नित धनकी उमंगताने ताने है ॥ हरिको न आने मोह मायाहिमे आने तिय स्वारथही जाने परमारथ न जाने है ॥

नाथ मत.

कई सौ वर्ष पाहिले ' नाथ ' नामके एक महात्मा योगीराज परमहंश थे उन्हींसे यह मजहब कायम हुआ

इस मतसे, आदिनाथ, शंबरनाथ. आनन्दनाथ. चैारंगी-नाथ. मीननाथ मत्सेन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, जलधरनाथ, इत्यादि बहुतसे योगी इस मतमे हो गये हैं.

सुनते हैकि प्रथम जयपुर जोधपुरादिके नृपाति गण इसी धर्मके अनुयायी थे लोग कहते है कि कांचीपुरीके श्रीरामानुज संप्रदायके प्रतिवादि भयंकर गद्दीके आचार्य श्री अनत महाराज देशाटन करते कराते मारवाड देशमे गये वहाके नृपातिगण एक " जलंधर पुराण " नामकी पुस्तक बनाई उसमे इनको हस्ताक्षर करनेके लिये बाध्य किया परन्तु इनके न कहने पर राजाओने इनका लक्षो रुपयाका सामान लुटवा लिया सुनते है कि इन्होंने कहा था कि जलधर नाम रोगका है पुरानका नही उक्त आचार्यके मंदिर पुष्कर हैदराबाद आदिमे हैं वहा उनकी प्रतिमाभी स्थापित है कुछ होय परन्तु भर्तृहरि गोपीचन्द्र प्रभृति राजा इसी नाथ मतके उपदेशसे वैराग्य गृहण किया. इस मतमे योगाभ्यासी और योगी होते है भैरव हनुमान आदिकी उपासना करते है भगवा वस्त्र और कानोंमें काचके मुद्रा पहिरते हैं और वैराग्यशील होते है इनमे मत्सेन्द्रनाथ. गोरक्षनाथ. बडे प्रतापी हुए कथा ऐसी हैकि एक समय समुद्र तटमे शिवजी शिवाको ज्ञानोपदेश करते थे. वहा एक मत्सीभा जो गर्भवतीथी

ज्ञान सुनी उसीके गर्भसे महायोगी " मत्सेन्द्रनाथ " जीकी उत्पत्ती भई एक वखत मत्सेन्द्रनाथ योगी भिक्षाके लिये एक ब्राह्मणके घर गये, योगीको भिक्षा देकर ब्राह्मणी प्रार्थनाकी कि सब सुख होनेपर मेरे पुत्र नहीं हैं. योगी थोड़ी राख झोलीमेसे निकाल कर ब्राह्मणी कोदे कर कहा किखाजाना पुत्र होगा, योगीके जानेपर अन्य स्त्री आकर ब्राह्मणीसे कहाकि कोई साधु सतकी राख खायगी तो उसीके साथ चली जायगी तूं सुन्दर है इसवास्ते साधु राख दिया है तुंभी साधुके संग साधूडी बनना चाहे तो खाले अनेक बात कहकर योगीकी भभूती गौके सूखे कन्डोकी राख पड़ीथी वहीं फिकवादी.

१२ वर्ष बीत जानेपर फिरभी योगीराज भिक्षाके लिये उसी घरमे आये भिक्षा लेकर ब्राह्मणीसे पुछाकी " तेरा लडका अच्छा है " ब्राह्मणीके कुछ उत्तर न देनेपर फिर पूछा तब ब्राह्मणी सब हकीकत कहदी तब योगीराज पुकारा कि " अलक्ष " राखके ढेरमेसे आवाज निकलाकि " आदेस " अर्थात आज्ञा गुरुजी शब्दके साथ ही १२ वर्षका लडका निकलकर योगीके संग चल दिया, वही गोरक्षनाथ नामसे प्रसिद्ध

होकर, गोरखपुर गोरखमढ़ी आदि नगर वसाया वहाँ उनका समाधी मंदिर वना है. इस मतकी पुस्तके गोरक्षगीता, गोरक्ष सहस्रनाम, गोरक्ष कल्प, गोरक्ष शतक, विवेक मार्तंड, नाथ लीलामृतादि अनेक ग्रन्थ हैं गोरखनाथजी वड़े कवि योगी पंडित थे. आजकल सन्ध्या समय लाल वस्त्र पहिरकर काली डोरीसे शरीरबाध कर कम्बल आदि ओढकर. कमरमेघंटी बांधकर आटा मागते हैं " अलख " कहकर वे सव इसी मतके है अलख कह कर खड़े नहीं होते और बोलानेपर पछि पगसे चलते है और संवेरमे चिकारा बजाकर गोपीचंद्रादि के पद गायकर मागतें हैं और योंगी कहें जातें है वेसव इसी मतकें अतरगत हैं.

भोजन कर न करे कभी उज्वल जैसे हंश
हरिके अंश प्रसंश जग, परम हंश अवतंश

चार्वाक मत.

चवल नदीके तटपर सखोद्धार क्षेत्रमे इन्दुकान्त नामकें व्यक्ती रहते थे उनके स्त्रीका नाम सृविणी था

उसी स्रावेणीके गर्भसे युद्धिष्टिर प्रभवनाम सं. ६६१ वैसाख सुद्ध पूर्णिमा रवीवारको सन्ध्या समय, "चार्वाक" का जन्म भया, चार्वाक ब्राह्मणोंके पास कुछ पढ़ लिख कर और अपनी बुद्धीको मिलाकर एक मजहब खड़ा किया पीछेसे कुछ कुछ भिन्नतासे चार साखा हो गई यानी १ शरीरको आत्मा माननेवाले २ जीवको आत्मा माननेवाले ३ इंद्रियोंको आत्मा माननेवाले ४ शरीर और वायुको आत्मा माननेवाले.

जैन पुस्तकोंमे लिखा हैकि चार्वाककी मृत्यु युधिष्टिर संवत् ७२७ श्रीमुख भाद्रपद सुद १२ को हुई चार्वाक इस वातका उपदेश करताथा कि वर्णाश्रम कोई चीज नहीं है, श्रष्टी अनादि प्रवाह है, इसका बनानेवाला कोई नहीं है, फिरसे जन्म होना इत्यादि मिथ्या है, फिरसे ससारमे आता नहीं है, इस लिये कर्ज करकेभी सुखसे रहना "जावत् जीवे त्सुखं जीवेत् ऋगं कृत्वाघृत पिवेत्" इत्यादि जीव शरीरके संग उत्पन्न होता है और शरीरहीके संग नष्ट होता है. मृतक श्राद्धादि सब झूठा हैं, यज्ञमे पशु वध करनेसे पशु स्वर्गमे जाता है, तो यजमान अपने बापको मारकर स्वर्गमे क्यों नहीं भेजता " त्रयोवेदस्यकर्तानाधूर्तभाडनिशाचर. " अर्थात् वेद बनानेवाले धूर्त भाड़ राक्षस हैं, इत्यादि इस मतका प्रचार भारत

चर्यसे अब बहुत घट गया है प्रथम इस मतका पाया डालने वाला ' बृहस्पति " हुआ परतु चार्वाकसे बहुत बढा इसीसे इस मतका नाम चार्वाक है. श्रमण मत इसीके भीतर है.

जंगम मत.



इस मतको नियत करने वाला खासकर कोई पुरुष नहीं परतु शंकराचार्यजीका मतका यह एक भेद है इस मत वालेको गोसांईभी कहते है, वे लोग आपुसमे सब विवाह करते है, और मूछ रखते हैं. मस्तकमे गेरुका रगा वस्त्र बांधते व पाहिनते है, शिव और शक्तीकी उपासना करते है, और उनका नैवेद्य खाते है, परन्तु इनके नामके पीछे गिरि, पुरी, भारती, आदि उपाधी रहती हैं विसेश करके इनकी मुख्य यात्रा " हिंगलाज " देवीकी है जो " कराची " बन्दरसे ऊटमे बैठकर जाना होता है, वहां पहाडके गुफामे देवीजीका स्थान है, इस मतवाले रुद्राक्ष भस्म सिंदूर तथा घुघुचीके सद्रस एक प्रकारका फल होता है उसकी माला पाहिरते है, यात्रा जाते हैं तब कहते हैंकि " माई परसने गये थे " वहां योनी

यंत्रसे उस पार निकलते हैं, और यात्रा सुफल मानते है. मरनेके समय इनलोगोंमे जलाते नही किन्तु समाधी देते है दत्तात्रय गुरुकी मुख्य उपासना है इस मतमे अविद्या बहुत फैल गई है सुधरनेकी जरूर है इस मतके हजारो मठ भारत वर्षमे है और बहुतसे बड़े धनी है.

गूदड़ मत.

इस मतकी प्रधान गादी अवध प्रदेशके " बारा-बंकी " जिलान्तर गत " कोटवा " नामक ग्राममे है कोई एक क्षात्रिय कुल भूषण ठाकूर साहबथे जो संसार त्यागी होकर इस मतको नियत किया था, अब सुनते हैकि गृहस्थभी गादी पती हो शकते है और इस मज हबमे कोई कोई भगवा वस्त्रभी पहनते हैं शिवादि देवता तथा रामचंद्रादि अवतारोकी उपासना करते है इस मतमे गानेके दोहा तथा भजनादि बहुत हैं, मस्तकपर चंदनभी लगाते है इनमे शिष्य करते शमय कंठि बांधने की चाल नहीं है किन्तु कंठीकी जगह हाथके नाड़ीपर

काला डोरा बांधते है, बहुत लोगोकी उस गादीपर पूज्य बुद्धी है वहां जानेसे भूत प्रेतकी बाधा दूर होती है महन्तके नामके पीछे कवीर पंथियोके माफिक "साहेब" शब्द रहता है इस मतकी पूर्ण हकीकत लिखनेके लिये " कोटवा " ग्रामको कई पत्र लिखा परन्तु खेद हैकि हमारे पत्रपर वहां किसीने ध्यान नही दिया. इस मतके स्थापकका नाम जगजीवन साहेब था, इस मतके बहुतसे लोग अफीम खाते है.

झुके रहै पलनींद आवातिन पल कहुं परतिनकल घने दाम चाहिये हाथमे ॥ चाहत खुराक मुख निकरे न बाक पेट रहत कबज झुमै आवत औ जातमे ॥ सुकवि सुपाल फेरि छूटि न सकति नेक देर न लगे विन मिले मरि जातमे ॥ सूखें रहै गात मुख कडू और हाथ एतें दुख सर सात है अफीमके सुखातमे ॥

कोटवा मेइसक्रमसे महंत भये प्रथम गादीके स्थापक श्रीयुत जगजीवन साहेब सवत १७०० मे भये पीछे श्रीगिर वर साहेब, जलाली साहेब, साधनदास साहेब, सनमानदास साहेब, और सत्यनामदास साहेब हाल गादीपर विराजमान है (सन १९०९) मुख्य गादी कोटवा (बारावंकी) और साखा सवद-

लगंज, टिकैत नगर, धर्मे, इत्यादिमे गादी है और ५२ नेजा (उपसाखा) है इष्ट हनुमानजीकी है.

बाबादेव मत.

इस मतको नियत करनेवाला " फिदिया " नामका एक जंगली मनुष्य था जो प्राय. अरण्यमे रहता था और शिकारसे अपना गुजरान करता था उनके अड़िया, और हिरिया, दो प्रसिद्ध चेले थे उन्हीके प्रयाससे संपूर्ण जगली कोल, भिल नायका, चौधरा प्रभृति इस मतके अनुयायी हो गये कुछ नामके परिवर्तनसे सब जंगली मनुष्य उसी एक " बाबादेव " नामक देवताकी उपाशना करते है पहिले ए लोग सूर्य और इन्द्रकी उपाशना करते थे जब सन् ३२५ मे "फिदिया" नया धर्मका प्रचार किया तबसे ए लोग एक "बाबादेव" नामक देवताके उपासक हुये अब नतो कोई इनका उपदेशक है और न कोई इनके देवताके मंदिरादि है वे लोग किसी वृक्ष व पर्वत पर निश्चित स्थान पर होली दिवालीमे मादक चीज तथा नारियलसे पूजते है जो

भील पशुपालक हैं वे अपनी पसु अरोग्य रहनेके निमित्त मट्टीके हांथी घोडा बनाकर देवताको अर्पण करते हैं कभी किसी कारन घरमे या पशुयोंमे दुर्घटना हो जांवे तो उसके शान्ती निमित्त मट्टीका रथवना कर देवता को अर्पण करते है.

ए लोग केश, शरीरादि संस्कारोंसे रहित तीरकमठा धारन कर अरण्यमे रहते हैं बाण चलानेके समय इनका निशाना निष्फल नहीं जाता एकहीं वखतमे चार बाण छोडते है मतलब कि कलियुगके " सव्यसांची " हैं व्यभिचार बहुत कम है एक चौटी कोपीन (लंगोटी) पहिनते है जो आगे पीछे दोदो फुट लटका करती है. ऊपरसे एक चादर ओढते है कोई कोई माथेमे छोटा रुमाल बाधते हैं इनका जाती बंधन बड़ा प्रबल है इन लोंगोमे कोई कोई धनीभी है परन्तु वे, धोती नहीं पहिनशक्ते यदि पहिनना होवे तो पंचायतसे आज्ञा लेनी पड़ती है अपुसमे मिलनेके समय " रामराम कहते हैं और कमरतक झुक जाते है. स्त्रियोंकी आपुसमे मिलनेकी चाल विचित्र प्रकारकी है जो जास्ती वयकी होवे वह खड़ी रहती है और कम उमर वाली बड़ीके पाव छु छु कर कमसे कम दसवार अपने हाथको माथे

भील पसुपालक हैं वे अपनी पसु अरोग्य रहनेके निमित्त मट्टीके हांथी घोडा बनाकर देवताको अर्पण करते हैं कभी किसी कारन घरमे या पशुयोंमे दुर्घटना हो जांवे तो उसके शान्ती निमित्त मट्टीका रथवना कर देवता को अर्पण करते है.

ए लोग केश, शरीरादि सस्कारोसे रहित तीरकमठा धारन कर अरण्यमे रहते हैं वाण चलानेके समय इनका निशाना निष्फल नहीं जाता एकहीं वखतमे चार बाण छोड़ते है मतलब कि कलियुगके " सव्यसांची " हैं व्यभिचार बहुत कम है एक चौड़ी कोपीन (लंगोटी) पहिनते है जो आगे पीछे दोदो फुट लटका करती है. ऊपरसे एक चादर ओडते है कोई कोई माथेमे छोटा रुमाल बाधते हैं इनका जाती बंधन बडा प्रबल है इन लोंगोमे कोई कोई धनीभी है परन्तु वे, धोती नहीं पहिनशक्ते यदि पहिनना होवे तो पंचायंतसे आज्ञा लेनी पडती है अपुसमे मिलनेके समय " रामराम कहते हैं और कमरतक झुक जाते है. स्त्रियोंकी आपुसमे मिलनेकी चाल विचित्र प्रकारकी है जो जास्ती वयकी होवे वह खड़ी रहती है और कम उमर वाली वडीके पाव छु छु कर कमसे कम दसवार अपने हाथको माथे

लगोज, टिकैत नगर, धम, इत्यादिमे गादी है और ५२ नेजा (उपसाखा) है इष्ट हनुमानजीकी है.

बावादेव मत.

इस मतको नियत करनेवाला " फिदिया " नामका एक जंगली मनुष्य था जो प्राय अरण्यमे रहता था और शिकारसे अपना गुजरान करता था उनके अड़िया, और हिरिया, दो प्रसिद्ध चेले थे उन्हीके प्रयाससे सपूर्ण जंगली कोल, भिल नायका, चौधरा प्रभृति इस मतके अनुयायी हो गये कुछ नामके परिवर्तनसे सब जंगली मनुष्य उसी एक " बावादेव " नामक देवताकी उपाशना करते है पहिले ए लोग सूर्य और इन्द्रकी उपाशना करते थे जब सन् ३२५ मे "फिदिया" नया धर्मका प्रचार किया तबसे ए लोग एक "बावादेव" नामक देवताके उपाशक हुये अब नतो कोई इनका उपदेशक है और न कोई इनके देवताके मंदिरादि है वे लोग किसी वृक्ष व पर्वत पर निश्चित स्थान पर होली दिवालीमे मादक चीज तथा नारियलसे पूजते है जो

लगंज, टिकैत नगर, धर्मे, इत्यादिमे गादी है और ५२ नेजा (उपसाखा) है इष्ट हनुमानजीकी है.

बावादेव मत.

इस मतको नियत करनेवाला " फिदिया " नामका एक जंगली मनुष्य था जो प्राय. अरण्यमे रहता था और शिकारसे अपना गुजरान करता था उनके अड़िया, और हिरिया, दो प्रसिद्ध चेले थे उन्हीके प्रयाससे सपूर्ण जंगली कोल, भिल नायका, चौधरा प्रभृति इस मतके अनुयायी हो गये कुछ नामके परिवर्तनसे सब जंगली मनुष्य उसी एक " बावादेव " नामक देवताकी उपाशना करते है पहिले ए लोग सूर्य और इन्द्रकी उपाशना करते थे जब सन् ३२५ मे "फिदिया" नया धर्मका प्रचार किया तबसे ए लोग एक "बावादेव" नामक देवताके उपाशक हुये अब नतो कोई इनका उपदेशक है और न कोई इनके देवताके मदिरादि है वे लोग किसी वृक्ष व पर्वत पर निश्चित स्थान पर होली दिवालीमे मादक चीज तथा नारियलसे पूजते है बो

भील पसुपालक हैं वे अपनी पसु अरोग्य रहनेके निमित्त मट्टीके हांथी घोडा बनाकर देवताको अर्पण करते हैं कभी किसी कारन घरमे या पशुयोंमे दुर्घटना हो जांवे तो उसके शान्ती निमित्त मट्टीका रथवना कर देवता को अर्पण करते है.

ए लोग केश, शरीरादि संस्कारोसे रहित तीरकमठा धारन कर अरण्यमे रहते हैं वाण चलानेके समय इनका निशाना निष्फल नहीं जाता एकहीं वखतमे चार वाण छोडते है मतलब कि कलियुगके " सव्यसांची " हैं व्यभिचार वहुत कम है एक चौड़ी कोपीन (लंगोटी) पहिनते है जो आगे पीछे दोदो फुट लटका करती है. ऊपरसे एक चादर ओढते है कोई कोई माथेमे छोटा रुमाल वाधते हैं इनका जाती बंधन बडा प्रबल है इन लोंगोमे कोई कोई धनीभी है परन्तु वे, धोती नहीं पहिनशक्ते यदि पहिनना होवे तो पंचायतसे आज्ञा लेनी पडती है अपुसमे मिलनेके समय " रामराम कहते हैं और कमरतक झुक जाते है. स्त्रियोंकी आपुसमे मिलनेकी चाल विचित्र प्रकारकी है जो जास्ती वयकी होवे वह खड़ी रहती है और कम उमर वाली बडीके पाव छु छु कर कमसे कम दसवार अपने हाथको माथे

मे लगाती है उस समय वह जमीनपर बैठ जाती व कमर तक झुकी रहती है जबतक छोटी इस तरे करती तबतक बड़ी खड़े खड़े छोटीके कमर व मस्तकमे हाथ लगा लगा अपने मस्तकमे लगाती है. बाद पुरानी रीत्यानुसार भेटती है.

प्रसिद्ध तातिया, विजानिया, छितिया, भील इसी मतके थे मै मध्य भारतके अलीराजपुरको कार्यवस गया था वहां अनुसंधान करने पर इस मतकी हकीकत जानी गई इस विषयमे हमारे एक सज्जन मित्र स्वामीजी श्रीहरिप्रपन्न महोदय तथा उनके शिष्य श्रीयुत राम-कृष्णस्वामीसे बहुत कुछ जाना गया इस लिये दोनो महाशय धन्यवादके पात्र हैं क्योंकी भीलोकी भाषाभी एक अन्य प्रकारकी होनेसे इस धर्मकी पूर्ण माहिती न मिलती, वे दोनो महाशय बहुत कालसे वहां रहते है इसे वे उस भाषाका अनुभव कर लिया है. इस मतवाले शमीके वृक्षको पूजते और उसे " समड़ादेव " कहते है जाति बंधन यहां तक हैकि जिनके वंशमे शौचके शमय, गुदा प्रक्षालनकी चाल नहीं है यदि वे प्रच्छा-लन करें तो जाति बाहर कर दिये जावे.

उन्मत्त भैरव मत.

कर्नाटक देशमे जिस समय " उज्जानिपली " नगरमे "महाराज सुधन्वा" राज्य करतेथे. उस समय "कृकच" नामका एक शूद्र हुआ उसीने इस मतको नियत किया राजाके मददसे श्री शंकराचार्यजी इस मतको विनास किया परन्तु मूल नष्ट नही हुआ, इस मतमे मद्य मांस खाना पीना यथेष्ट स्त्रीसे भोग करना मनुष्यका मस्तक काटकर रक्त युक्त भैरवजीको अर्पन करना वर्णाश्रमादि सब झुठा है इस मतके लोग अबभी कर्नाटक देशमे कहीं कहीं पाये जाते हैं और मन्त्र तन्त्र मे बड़े कुशल होते है और इसी मतकी एक शाखा " औघड़ " है जो कुत्तोंके साथ खाते है इसीमेसे तीसरी साखा " अघोरी " है जो मनुष्य मास तथा सड़ी वा तुरतकी मरी बिलाड़ी खाते है और मनुष्यकी खोपड़ी खाते हैं तथा मूत्रादि खाते पीते है इनका रूपभी कुछ भयंकर होते है इनमे भुतादिकी उपासना बड़ी प्रबल है शंवत १९५६ मे जबमै अजमेरके पास पुष्करमे था तब एक चेतनदास नामका अघोरी " पजाब " देशसे आयाथा मेरकू मिलाथा और बहुत

बात चीत भईथी एक दीन वह अघोरी महाराज मेरे सामने एक कपोत (कबूतर) जीता हुआ पकड़कर खा लिया खानेके समय उसके सब पखने उखाड़कर फेंक दिया था जब मै और मेरे कई मिलापी इस बातसे खेदित हुये तब उसने मुखमे कपडा ढाककर मुखसे कबूतरको जीता निकाल कर उड़ादिया वह उड़गया; मैं पुस्करमे श्रीरंगजीके मंदिरमे १ मास रहा था,

कवित - मांस खाना त्याग खाओ पालक चौराई साग मूली और गाजरसे भूखको मिटायलो, खाओ कचनार साक मेथीका बनाओ खूब आडु अमरूद खाके पेटको भरायलो, फालसे खजूर खाओ जामुन अंगूर खाय खीरा तरबूज खाके प्राणको बचायलो, केला फली खायलो चबायलो अनार दाना मद्यमास छोड़ो जन्म सफल करायलो.

शाक्त मत.

इस मतकी प्रधानता मैथिल, उत्कल, वंगादि देशोमे है इस मतवाले देवी तथा भूत प्रेतादिकी उपाशना करते, और मंत्र तंत्र मारण मोहन उच्चाटनादिमे बड़े प्रवीण

होते है बहुतसे शाक्त शक्तीको बकरा आदि बलिदान और मद्य भोग लगाते और उसी मद्य मांसको प्रसाद समझकर खाते हैं और कोई कोई फल मूलसे पूजन करते है मद्यमांस स्पर्सभी नहीं करते.

मै एक वखत मध्यदेश गयाथा वहां आश्वीन मासमे देवीके विशेष उत्सवपर कई भक्तोको देखाकि कोई लोहेका छोटा गोला अग्निमे लालकर दांतसे उठाते हैं कोई लोहेकी जजीर लालकर हाथसे खीचते हैं कोई लोहेका भाला लेकर एक कपोलमे छेदकर दूसरे कपोल कोभी पार कर दोफिट निकला हैं कोई जीभ छेद रखा हैं, कोई जीभ काटकर अपनी वली देते है फिर जुड़ जाती हैं.

पहिले कई स्थानोमे देवीको नरबलि दिये जातेथे परतु इंग्रेजी राज्य होनेपर यह रीती उठा दी गई मध्य प्रदेशके वस्तर स्टेटमे काली दतेश्वरी जो राज्यकी रक्षक समझी जाती है नरवलि दिया जाताथा जिसे अंगरेज महाराज सन् १८४२ मे वद करादिया.

वगालमे वैष्णव मतकी कमी नही है तथापि शक्तीकी उपासना आश्वीन मासमे सभी करते हैं मट्टी और घासकी माताजीकी मूर्ती बनाकर उत्सव करते है सभी गरीब अमीर नवीन वस्त्र पहिरते हैं और मित्रोमे एक

दूसरेके घर भेट वस्त्रादि भेजते है पिछे दसरहाके दिन प्रतिमा विसर्जन करते हैं. बंगालकी कारीगरी और यह उत्सव देखनेके लायक होता हैं इस शक्तिपूजाकी आलोचना श्रीयुत रमानाथ डाक्टर अपने " बंग वर्णन " नामकी उर्दू कवितामे बहुतहीं उत्तम किया है.

दोहा–रूप विशेष विशेष घन, भूमि सुहावन देश ।
जाय करे याते अवै, पूरवको परदेश ॥

कवित्त—ताफ् ता अ रु वाफ्ता मुसज्जर श्रीसाफ् मल मल अरु केशी पट नाना मुखदाइये–सरस कृपान तरकस रु कमान वान जरकसी चीर हरि जहां जाय लाइये सुकविगुपाल फुलवारी धाम धाम अंव श्रीफल कदंव पौड़ा पाननको खाइये–बड़े होत केश मिलै तदुल अशेष याते पूरवके देशमे विशेष सुख पाईये (गु. क.)

चोली मत.

इस मतवाले कोई नियत स्थान रखते हैं वहां रात्रीमे नियत समयपर सब इकट्ठे होकर एक

पुरुषको नंगाकर सब स्त्रियां, और एक स्त्रीको नंगी कर सब पुरुष पूजन करते है जहांतक रजस्वला, धोबिन, नाउन भंगिन, मिले तबतक दूसरे वर्णकी स्त्रीका पूजन नहीं करते पीछे अभक्ष भक्षण कर उनमत्त होकर सब स्त्रियोके ऊपरके वस्त्र अर्थात् चोली निकालकर एक मट्टीके पात्रमे डाल देते फिर प्रत्येक पुरुष एक एक वस्त्र उस्से निकाल लेते हैं जिस स्त्रीका वस्त्र जिस पुरुषके हांथमे आया वह पुत्रवधु. कन्या, मा, बहिन, क्यों न होवे उश समयके लिये वह उस्की स्त्री हो जाति है इस मतकी कोई प्रधान गादी, व मठ नही है केवल भिन्न भिन्न मतके मनुष्य येकत्रित होकर इस मतको चलाते है.

बीज मार्गी मत.

इसमे दो भेद है आदि बीज मार्गि, और बीचके इनकाभी कोई मठ व मंदिर नहीं हैं ऊपरके चोली मार्गकी बहुत बाते इनमे पाई जाति हैं अतर इतनाही हैकि मैथुनके अंतमे बीज मार्गी वीर्यको पानीमे डालकर पीते हैं और चोलीमत वाले नहीं पीते, और पीछेके जो

बीज पंथी है वे कहते हैकि " मातृयोनि परित्यज्य, विहरेत्सर्वयोनिषु " अर्थात् माताकी योनी छोड़ देना, येही नवीन और पुरानेमे अंतर है सुनते हैंकि काठि-यावाड़ प्रदेशमे इस मतके लोग है.

वाम मार्गी मत.

इस मतवाले कहते हैकि वेदादि शास्त्र सब दहिने जाते है अपने उनसे " वाम " चलो बीज मार्गी आदि इसीकी साखा है यह " शैव " के अंतर गत है इसकी मुख्य क्रिया तंत्र ग्रन्थोमे है " मांस श्रोणित माक्षिणी " चंडिका आदिकी पूजा करते है मैथुनादि सब प्रबल है इस मतवाले कहते हैकि " पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति मेदिनी, ॥ पुनरुत्थाय तपीत्वा पुनर्जन्म नविद्यते ॥ १ ॥ अर्थात जमीनमे नही गिरे बे होस होकर तबतक मदिरा पीना, फिर उठकर पीना, ऐसा करनेसे ससारमे फिर जन्म नहीं होता इस मतकी विशेष हकीकत जानना होवे तो सस्कृत श्लोक युक्त गुजराती भाषाका " सत्या सत्य विचार " नामकी पुस्तक देखो.

मार्गी साधु मत.

इस मतका प्रचार काठियावाड़ देशमे है इस मत-वाले अनेक निर्गुण पद तंबूरा लेकर बजाते गाते पैसा मागते फिरते है और उनकी स्त्रिया मजीरा उछालकर बजाती हैं और अनेक चेष्टा करती है तथा रात दिन साधुवोंके सेवामे रहती हैं सेवा करने और चेष्टा करने को उनके पुरुष बिलकुल नहीं रोकते साधु गलेमे काष्टका माला रखते और पीला चंदन लगाते हे तंबूरा व एकताराके ऊपर बहुतसे मयूरपंख बांध रखते है आये गये विदेशियोंकी सेवा करते है मूर्ती पूजाके लिये इनमेभी मतभेद है.

निरंजनी मत.

इस मतके साधु मेवाड़ देशमे है उनमे कोई कोई विरक्त होते है और मूर्ती पूजा मानते तिलकादि लगाते और गळेमे कंठी बाधते है परंतु अन्य मतके साधुवोंसे

कुछ द्वेष रखते हैं दूसरेकी वनाई रोटीभी खाते हैं एक निपट निरंजन नामके साधु थे उन्हीसें इस मतकी नेव पड़ी परन्तु मतमे पढ़नेकी चाल नही होनेसे वृद्धी नही होती है.

इस मतमे नशाकर गांजा भाग तमाखु पीकर रात दिन वृथा कालका क्षय करते है और न कोईका उप-देश मानते हैं भारतमे कोईभी मतमे जो खराव पृथा होवे तो नशा है हरेक धर्म्माचार्य्योंको गांजा तमाखू भांग सीघ्रहीं वन्द करना चाहिये हाय धर्म्मोंकी यह दुर्दशा.

प्रार्थना समाज.

कलकत्तेमे जो ब्रह्म समाज है उसीके अंतरगत कुछ नियमोंके फेरसे प्रार्थना समाज वनी हैं इस मतवाले नियत दिनको ईस प्रार्थना करते है इसीका प्रार्थना समाज नाम है गुजरात प्रदेशके अमदावाद शहरमे उक्त समाज है जो अच्छी अवस्थितीमे है. समाजके नियम उत्तम है

सनातन धर्म्म सभा.

वह सभा बहुतसे शहर कस्बे और ग्रामोमे है इससे उच्च श्रेणीके हिन्दुमात्र दाखिल हो शक्ते है परन्तु अवतारादि मानना पडता है जो उपरोक्त बातोंको नहीं मानते वेहर्गिज दाखिल नही हो शक्ते सभाका अभिप्राय सनातन धर्मरक्षा और दयानन्दादि अधुनिक मतोका खंडन हैं.

— —

भारत धर्म महामंडळ.

इसके प्रधान आचार्य्य वाग्विदाम्बर, व्याख्यान बृहस्पति. पंडित दीनदयालु शर्म्मा, हैं प्रथम उन्होंने इसका जन्म दिल्लीमे दिया था जन्म होतेहीं वह पंडितजीके पुरुषार्थसे शुक्लपक्षके विधुके सद्रस बढ़ने लगा धीरे धीरे बहुतसे सेठ शाहुकार राजा महाराजा जिमीनदार जागीरदार, उसके सहायक. हो गये केवल येही नहीं किन्तु केतने " रावसाहेब " रावबहादुर, समशेर बहा-

दुर कलम बहादुर, वाकाबहादुरोंके अतिरिक्त कितने ऐसे भद्रपुरुष इस मडलके सहायक हैकि,

जिनके नामके आगे पीछे पूरे छव्वीस नही तौभीं इंग्रेजी वर्णमालाके पांचदस अक्षर अवश्य आगेपीछे जुडे है.

जैसे पूना जानेवाली रेलगाडीके आगे पीछे दो इंजन जोडे जाते हैं अनेक काठिनता शहन कर जैसे गाडी मुसाफिरो कोनियत स्थानपर पहुंचा देती है इसी तरह आसा हैकि अविश्रांत परिश्रमसे अनेक पहाड रूपी कपोल कल्पित मतोको भेदनकर नियतस्थान (सनातन धर्म रूपी ऐशन) पर पहुचा देगा, महाराज मिथिलेश इसके सभापती हैं बडे बडे राजा महाराजा पोपक है अच्छे अच्छे धुरंधर विद्वान इसके संचालक है मंडलकी एक पूत्री प्रतिमास जन्म लेती है उसका नाम हैं " निगमा गम चंद्रिका " वह अपने प्रकाशसे पाखंड रूपी खद्योतोका निरमूल करती जाती है, इस महामंल संम्राटकी ३६० रानी (सनातन धर्म सभा) है जो अज्ञानुवर्ती है महामंडल दिल्लीसे मथुरा होते हुये अब काशीवास कर रहा है.

थियोसोफिष्ट मत.

इसकी साखा बहुतसे शहरोमे है, मुख्य अध्यात्म-विद्याका शिक्षण देते है इसमतमे आपुसमे भाई भाई तरीके वर्तनकी चाल है मतलबकी एक्यता रखना यही सार नीती है विशेष करके अगरेजी पढ़े हुये इसमे नाम लिखवाते है और हिन्दु मुसलमान पारसी सब दाखिल होते है इसी मतका एक हिन्दू कोलेंज, बनारसमे है और मेघर्जीन नामका अंगरेजीमे पत्र निकलता है इस मतवाले तेवीस करोड़ देवतोको मानते है परन्तु "प्रधान देवता" अमेरिका देश निवासी "करनल हैनरी एस. आंलकाट" हैं जो वृद्ध है और सफेद लम्बी दाढ़ी होनेसे ऋषी जैसे मालुम होते हैं और प्रधान "देवी" इगलेंड वासिनी श्रीमती, "एनीविशेन्ट" है जो तुलसीकी माला पहिर शिवपूजन करती और व्याख्यान देते फिरती हैं इन दोनो देवी देवतावोंके दर्शन हमें हुये है. अलकाट साहेब अब संसारमे नहीं है.

मटिया मत.

इस मतकी प्रधान गादी अहमदावादसे १४ मील "पिराना" गाममे है इस मतमे हिन्दू मुसलमान दोनो दाखिल होशक्ते हैं कच्छदेशके मोमन इस मतमे वहुत है पिरानामे सुन्दर सिखर दार दरगाह वनी है ऊपर सोनाका कलस सुसोभित है वहां चार कवर हैं तीन भीतर और एक वहार है कवरोमे इमाम साहवकी माता फातमाकी, और एक तीसरी यह तीन भीतर है और वाहर "हाजर वेग" की कवर है सवमे कीमती दुसाला ओढा ये रहते है वाहर वहुत ऊंचा सफेद निशानहे दरवाजों मे चांदीके पत्र मढ़े हैं सध्या समय धूप दिखाते और नगाड़ा वजाते और प्रार्थना करते है, हाथ जोडकर, विशेष कर गुरुवार के रातको इस मतकी कथा वाचते है उस समय अन्य मत वा-लेको दाखिल नहीं करते जो इसमतमे महंत होता है वह विशेष कर हिन्दू होता है और भगवा फेटा तथा सफेद वस्त्र पहिनते और डंका निशान शहित राजसी ठाटसे फिरते हैं. मेरे जानेके समय संवत् १९६५ मे महंत श्री लक्ष्मणदासजी, करमसीभाई थे.

मस्वा मत.

इस मतमे कोई विशेष बात नहीं है यह जंगलियो की एक उपाशना हैं नीलगिरीके आसपास जंगलमे येलोग वहुतहै और सड़कोके पासके गड़े हुये मीलके पत्थर पूजते है.

इंद्र मत.

इस मतकेभी मानने वाले सब जंगली हैं पहिले इन्द्रादि देवतों की तथा वरुण की पूजा करते थे परन्तु अवयेलोग मलेवार के पहाड़ी जिलोंमे रहते हैं और रेलगाडी के इजनकी पूजा करते हैं.

स्वामी श्रीदयानन्द सरस्वती मत.

अब वन्दौ दयानन्दको, मनमेबहुत उमेद,
न्यायवन्त निरनय करै, खलमाने मनखेद.

काठियावाड़ देशमे मोरवी नगरमे उदीच्य ब्राह्मणके घर सन् १८२४ मे स्वामी दयानन्दका जन्म हुआ

उनके पिता अम्बाशंकर एक प्रतिष्ठित जिमींदार थे पिताने उनका नाम मूलशकर रक्खा और बाल्यहीसे उनको रुद्री और शुक्ल यजुर्वेद प्रारभ करा दिया जब मूलशंकरकी अवस्था २० वर्षकी भई तब उनके काका जो उनको बहुत प्यार करते थे, देहान्त होगया उस समयसे उनके चित्तमे मनुष्य संबन्धी अनेक प्रस्न उठने लगे और संसारसे वैराग उत्पन्न भया जब उनके पिता उनके विवाहका उद्योग करने लगे तब उन्होने प्रतिज्ञा की कि मै कभी विवाह न करुंगा जब विवाहका समय एक मास रहगया तब मूलशंकर चुपकेसे निकलकर इधर उधर भ्रमण करने लगे.

भ्रमण करनेके समय साधु रूपधारी कई एक ठग मिले जिनमेसे उनकी एकने अंगूठिया ठगली, दूसरेने जो एक रानीको निकाल लायाथा, उनसे मसखरी करना आरंभ किया इस लिये मूलशंकर कहीं न ठहर सिद्ध-पुरके बड़े मेलेमे चले गये उनके पिताने यह समाचार पाकर सिद्धपुरके मंदिरमे उनको पकड़ा. उन्होंने मूल-शंकरकी कोपीन फाड डाली और तुम्बा फोड़ डाला चौथे रात्रीमे मूलशकर वहांसे भाग निकले.

उसके पश्चात वे कई एक महातमोसे मिल योगाभ्यास किया उसके पीछे वे भ्रमण करते करते अलकनन्दा

नदीके निकास स्थानमे पहुंचे और उन्होंने विचार किया कि हिमालयमे प्राण त्याग करदूं परन्तु फिर सोचा कि विना ज्ञान प्राप्त भये मरना पाप है इस लिये विद्या प्राप्त करनी चाहिये ऐसा विचार कर वे मथुरा-पुरीमे आये, उस समय मथुराजीमे 'विरजानन्द' नामक एक पंडित वृद्ध ५१ वर्षके जो दोनो आंखोंसे चौपट थे और उनको प्राचीन आर्य्य ग्रन्थोंके सिवाय अन्य पुस्तकोमे श्रद्धा नथी, स्वामी दयानन्दजी उन्होंसे विद्या पढ़ना आरंभ किया: अमरलाल एक धार्मिक पुरुषने नित्य भोजन व्ययका बंदोबस्त करदिया, श्रीदयानन्दजी २॥ वर्ष मथुरामे रहकर स्वामी विरजानन्द, जीसे महाभाष्य—वेदान्तसूत्र—अष्टाध्याई इत्यादि ग्रन्थ समाप्त किये जब भेंटके लिये कुछ लौंगके दाने लेकर गुरुसे आज्ञा मागने गये तब गुरु महाराज कहा कि जो वेद विद्या ससारसे उठ गई है उसका तुम प्रचार करो और मत मतांतरोंको दूर कर देशका सुधार करो मनुष्य कृत ग्रन्थोमे विश्वास मत करो और परमेश्वर और ऋषियोंकी निन्दा होवे उन पुस्तकोपर विश्वास मत करो।

स्वामी दयानन्दजी यहांसे चल उसी दिनसे उसका उद्योग करने लगे क्योंकी गुरुकी प्रबल आज्ञाथी स्वामी दयानन्द सरस्वतीको स्वामी विरजानन्दजीके मिलनेसे

वेद, उपनिषद, आदि प्राचीन ग्रन्थों पर श्रद्धा हुई उन ग्रन्थोके पढ़नेसे उन्हे असाधारण ज्ञान प्राप्त हुवा पीछे वे भारत वर्षके विविधिनगरोंमे फिर शास्त्रार्थ तथा व्याख्यान देने लगे. वह अपने कथनका प्रमाण वेद और उपनिषदोंसे देतेथे उन्होने " सत्यार्थ प्रकाश " आदि कई पुस्तकें वनाई. और कई विद्यालय स्थापन किये ईश्वरको निराकार मानकर मूर्ती पूजाका निषेद करतेथे ईश्वर, जीव और प्रकृतिको, अनादि मानतेथे तथा नित्य मानतेथे स्त्री, शूद्र तथा मनुष्य मात्रको वेद पढ़नेका अधिकारी कहतेथे विधवा विवाह मानतेथे अर्थात् पूरे पक्ष पातीथे, स्वामीजीके अनुयायियोंनो " आर्य समाज " नामक सभा स्थापन किया जो विसेष कर पजाव देशमे फैला है सुनते है अव इसकी दो साखा हो गई है अर्थात् घास पार्टी और मास पार्टी इस मतके लोग मृतक श्राद्ध तीर्थ-पुराण वर्णसे जाति मूर्ती पूजा नही मानते, परन्तु वार्षिक उत्सवपर स्वामीजीके फोटूको पुष्प-हार अर्पण करते है परस्पर मिलनेके समय "नमस्ते" कहते है स्वामीजीने सन् १८८३ ई० ता. ३० अक्टोंवरको जव उनकी अवस्था ५९ वर्षकी थी राजपूतानेके अजमेर शहरमे शरीर छोड़ा. इस मतके लोग कोई कोई टोपी वा साफामे पीतलका ॐ बनाकर लगाते है.

इस मतका एक कॉलेज लाहौरमे है हरिद्वारमे गुरुकुल नामका एक विद्यालय और अन्य कई पाठशाला हैं, और कई पत्र निकलते है बंबईका "आर्य प्रकाश," भी एक प्रभावशाली पत्र है.

"दयानन्द छलकपटदर्पण" मे और अबोध मार्तंडमे स्वामीजीकी जाती, भोजक, त्रगाळा (नाचने वाले) लिखा है स्वामीजीको दफन नही किया गया, परन्तु उनके "वसीयतनामे" के अनुसार दो मण चंदन, दस मण आम्रकाष्ट, चार मण घी, पाच सेर कपूर, अढ़ाई सेर चालढह्, आधा सेर केशर, दो तोला कस्तूरी, आदिसे अग्निसंस्कार किया गया. कार्तिक, कृष्णा, ३० संवत १९४० सूर्यास्त शमय,—नभ, विधि, सुख, निधि, इन्दु सर, दिपीमाल दिनश्याम, दयानन्द, अजमेरमें, त्यागो तन अभिराम.

पारशियोंका धर्म और वृत्तान्त

छठी सद्दीके पीछे जब मुसलमान लोग जाकर बलसे लोगोंको अपने धर्ममे लाने

तसे " पारसी " अपना देश पारसको छोड़कर खुरासानमे जाय वसे, और बहुतेरे अपने प्राण जानेके भयसे मुसलमान हो गये पारसके वर्तमान मुसलमान उन्हींके वंश धर है, भागे हुए पाराशियोंने कुछ समयके पश्चात् मुसलमानोके अत्याचारसे खुरासानसे, भाग कर पारसके समुद्रके अर्मजद्वीपमे, आश्रय लिया उसके कुछ दिन पीछे करीव ७०० पारसी मुसलमानोके अत्याचारसे पीड़ित हो वहासे पूर्व दिशाको चले और समुद्रके रास्तेसे हिन्दुस्तानके निकट आकर काम्बे (खंभात) समुद्रके डिउ, नामक टापूमे रहने लगे किन्तु वहद्वीप रहने योग्य नही था, इस लिये वे वहा कुछ दिन रहकर सन् ७१७ ई० मे दमणसे २० मील दक्षिण संजाना,मे आये वहाके महाराज जयदेव राणा, कुछ सरतकर उनको रहनेकि आज्ञादी, सुनते हैकि सरत यह थीकि जीव हिसा करे, विवाहके समय कुछ हिन्दुओका अनुकरण करे, माथेमे स्त्रिया लाल बिन्दु करे, और कानमे हिन्दुओकी तरह छिद्र करे, और हाथमे चुड़ी पहिरें पीछे मुसलमानोके हिन्दुस्तानमे आनेपर पारसियोंको मुसल्मान वनानेके लिये जयदेव राणासे युद्ध किया, राणाके पराजय होनेपर पारसी संजानसे भागकर "वाहरत" नामक पहाड पर चले गये और १२ वर्षतक छिये रहे उसके पश्चात् क्रमस

वंश विस्तार होनेपर पारसी लोग वांसदा और बासदासे नौसारी मेजाकर रहनेलगे कुछादिनोके पछिवेलोक नौसारीसे वारियामे चले गये, वहा कुछ समयके पश्चात् सवल होकर उन्होने वहांके राजाको कर देनेसे इन्कार किया राजा क्रुद्ध होकर, एक विवाह, के समय वहुतेरे पारसियोको कतल किया, जोपारसी वहासे, प्राणलेकर भागे उन्हीकी सतान क्रमश. वढ़ कर नौसारी, भडोच सुरत, मुवई, इत्यादि मै फैली है, वर्तमान् पारसी उन्हीके वस धर है, सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय भारत वर्षमे ८९,९०४ पारसी थे जिनमेसे केवल मुंबई मेही ४७४५८ थे इस समयभी पारस (ईरान) मे थोडे पारसी देखनेमे आते है, पाहिले पारसी भी हिन्दुओं के समान अनेक देवी देवता की उपासना करतेथे.

परन्तु " जौराष्ट्रा स्पिटामां " के नये धर्म प्रचारके पछिसे वे " आहुर मज्दा " नामक एक ईश्वर के उपा-शक हुअे पारसी कहते है कि " जौराष्ट्रास्पिटामां " ने एक पवित्र अग्निको स्वर्गमे पृथ्वी परलाया इसमे वेलोग अग्नी पूजक कहे जाते है और अग्निको अति पवित्र समझकर पूजते है.

मुवईमे प्राय प्रति पारसी अवासके निकट अग्नि पूजाके लिये एक अग्नि मंदिर प्रतिष्ठित है. उनमे

नवसारी (बडोदा) के अग्नि मंदिर सबसे अधिक प्रसिद्ध है, सब मंदिरोंमे जौराष्ट्रास्पिटामा की लाई हुई पवित्र अग्नि दिनरात प्रज्वालित रहती है.

किसी घटनासे किसी मंदिर की अग्नि बुझ जावे तो पारसी लोग अमंगल सूचक समझते है, और कुछ धर्म क्रिया के साथ दूसरे मंदिरसे लाकर अग्नि स्थापित करते हैं, वर्त्तमान पारसी जल और सूर्य्य की उपासना भी करते है, वे लोग अपने अग्नि मंदिर जिसे पारसी आगियारी कहते है, एक एक श्वेत वृषभ रखते हैं, अथवा पालते हैं, गोमूत्रसे निराग नामक एक पदार्थ बनाकर अग्नि मंदिरमे रखते है.

पारसीयोंकी रीती व्यवहार हिन्दुवोंकी रीतसे कुछ मिले हुए कुछ भिन्न है कोई कोई पारसी हिन्दूसे अपना जल नहीं छुलाता और कोई कोई मुसलमानका बनाया पाक खा लेता है उनमे कन्याका विवाह चचेरेभाईके साथ होता है, पारसी मद्य पान करते है, परन्तु धूम्रपान की चाल बहुत कम है, कृस्तान, हिन्दू मुसलमान जैन, सिख इत्यादि जातिके लोगोंमें बहुत भिक्षुक देख पडते है किन्तु पारसी जातिमे भिक्षुक वा वेश्या एकभी नहीं है, पारशियोंमे दूसरी जातिसे अधिक विद्याकी रिवाज

है, उनमे सैकडे पीछे ७८ पुरुष और ५१ स्त्रियां पढी भई है, उनमे वहुतेरोंने अंगरेजी पढ़कर सरकारके वा देशी राज्योंके उच्च कर्मचारी है, वकील है वैरिष्टर है, डाक्टर है. अध्यापक है. लगभग ९० हजार पाराशियोंमे दस पंद्रह करोड पाति, सैकडौ लक्षाधिपती, हजारो सहस्रपाति है, वहुतेरे पारसी अपनी कीर्तीके लिये लाखों रुपया दान करते हैं.

पाराशियोंमे वहुत लोग गुजराती पोसाक और वहुत लोग कोट पाटलून पाहिरतें है. उनकी टोपी दोतरहकी होती है. वड़ी टोपी सन्मानित लोग पाहिनंत है पाराशियोंकी त्रिया रेशमी साड़ी पहनती है, पगमे वुट व जूता पहनती है. माथेमें सफेद रुमाल वाधती है उनमे हीरा मोतीके भूषण पहिननेकी वहुत चाल अधिक है सिरपर रुमाल सर्वदा वांधती हैं.

किसी पारसीके मृत्युके समय पारसी लोग उस मृतकके मुखपर गव्य द्रव्य लगाकर उसे एक कुत्तेसे चटवाते हैं जिस मृतक वा रोगीके मुखको कुत्ता नही चाटता उसके शरीरमे पाप समझा जाता है उस समय रोगीके स्वजन किसी न किसी उपायसे रोगीका मुख कुत्तेसे चटवाकर उसे नि:स्पाप करते हैं. इस कामके लिये पारसीयोमे प्रायः

एक वा अधिक कुत्ते पालनेकी चाल है, ऐसा लोग कहते है, पारशियोंके धर्म पुस्तकमे लिखा हैकि मृत आत्मा मरनेके तीन दिन पीछे " मिथ " नामक देवताके पास जाता है " वाजेवेसो " नामक अपदेवता वहांसे उसे भारत वर्षमे लाता है जहांसे सदआत्मा और असदात्मा दोनो एक रस्तेसे " आत्म संग्राहक " सेतुके निकट पहुचते है वहांसे कुत्ता सदात्माको स्वर्गमे पहुचाता है और असदात्मा अंधकार पूर्ण नरकमे गिरता है. जान पड़ता हैकि पारसी इसीसे कुत्तेको मान्य करतेहै. पारशियोंका मुरदा घर अर्थात् दखमा—भडोच सूरत नौसारी इत्यादिमे इनके दखमा है, तथापि मुंबईका दखमा देखने लायक है मुंबईमे ग्रांडरोडके रेलवे स्टेशनसे पश्चिम दक्षिण और चरनीरोडसे सीधा पश्चिम मालाबार पहाड़ीके ऊचे शिखरपर समुद्रसे करीब १०० फिट उपर पारशियोंका दखमा अर्थात् मुरदा रखनेका मकान है पारसी जातिके आतिरिक्त अन्य जातिको दखमा देखनेके लिये पारसी पंचायतके सेक्रेटरीसे पास अथवा आज्ञा लेनी पड़ती है. एक सडक दखमाके टावरोंके उत्तर तरफ गई हैं जिसको सर जमसेदजी जीजीभाईने बनवाया उसने टावरोंके पूर्व और उत्तर १००००० गज भूमी लीदीहै वह दखमा देखने योग्य है दखमाके

वाहरके हातेमे ८० सीडियां है सीडियोको लाघ कर दहिने फिरने पर एक पथरकी इमारत मिलती है. जिसमे पारसी मृतक्रियाके समय येवादत करते हैं उस स्थानसे मुंबईका उत्तम द्रस्य दीख पडता हैं वहां पाच गोलाकार मीनार है उनमे एक १७६ फीट ऊचा है उसके बनानेमे ३००००० रु. खर्च पडे और चार मीनारोसे प्रत्येकमे २००००० रुपया खर्च पड़े है प्रत्येक मीनारके मध्यमे भीतरसे पटा हुवा कूप है उसमे वापीके समान नीचेसे रस्ता है कूपके चारो तरफ मृत स्त्री पुरुषोके लड़कोंके लड़िकियोंके रखनेके लिये पत्थरके ताख बने हैं एक ताखमे एक मृतक रखदिया जाता है पारसी न मुसलमानोकी तरह दफन करते न हिन्दुओकी तरह जलाते हैं मूर्दालयमे रख देते है मांस भक्षी पक्षियोंके लिये उपरसे रस्ता है, दखमाके समीपके वृक्षोपर गृद्ध, काक, शकुनी इत्यादि पक्षी बैठे रहते है वे झुन्डकेझुन्ड उड़कर मुरदेको खा जाते है पीछे हड्डी बीचवाले खाडमे जलमे बहादी जाती है फिर नीचेके मार्गसे गाड़ साफ करदिया जाता है.

मुबईमे पाराशियोके लिये धर्मशाला एक वागमे स्वच्छ इमारत है जिसमे कभी कभी गरीब पारसी लड़के स्त्री इत्यादि २०० तक हो जाते है.

———

यहूदी मत पैगम्बर मूसा

मिशर देशनिवासी प्रथम अपनेको सूर्यवंशी कहकर अनेक देवी देवताकी उपाशना करतेथे, और विशेष कर " तेग्रिस " नदीके मैदानमे रहतेथे, जब " हिब्रु ज्यु इस्रायल" लोगकी संख्या बढ़ने लगी तब मिशरका बादशाह इनको बहुत बांधा देने लगा तथापि संख्या कम न हुई तब बादशाह एक आज्ञापत्र प्रकाशित कियाकि अबसे यहूदियोंके जितने बालक होवे वे सब कत्तल किये जावे " राजाज्ञानुसार जब शिशु श्रोणितसे वसुन्धरा लाल होने लगी तब जगदीश्वरसे न रहा गया.

लीवी जातीके एक स्त्रीके गर्भसे जिसका नाम " जोचीवेद " था सन् ई० के १५७१ वर्ष पाहिले एक सुन्दर बालकका जन्म भया, शिशु रक्षाके निमित्त अनेक उपाय करने परभी जब बादशाहके भयसे बचानेका उपाय न देखकर नाईल नदीके झाडीमे रखदिया, वहा बादशाहकी पुत्री स्नान करने आईथी उस सुन्दर बालकको देखकर उठालेगई पीछे उसके माताका पत्ता लगायकर उसे पोषणके लिये सौंपदिया, जब बालक बड़ा

हुआ तब उसका नाम " मूसा मुसेस " पड़ा (मुसेस) शब्दका अर्थ हिब्रु भाषामे " पानीसे निकाला " होता है बालकको पीछा लेकर राजपुत्री उस देशके रीत्यानुसार शिक्षित किया, और जन्मकी हकीकत कही.

एक समय मूसा किसी कारणसे एक मिशरीका खून किया और बादशाहसे डरकर अरबस्तानके पहाड़ी प्रदेशोंके अंतरगत " मिडियान " प्रान्तमे चला गया वहां ४० वर्ष रहा फिर वहासे धर्मगुरु " जेथरो " की पुत्रीसे विवाह किया, जिससे " गेरसोहोम " नामका पुत्र भया. मूसा ८० वर्षकी अवस्थामे एक जगह बकरा चराताथा वहां उसे अग्नि लगी एक पासके झाड़ीमे मालुम पड़ी जब वह ज्वालाके पास जाने लगा तब उसमेंसे शब्द हुआ कि " तू खड़ा है वह पवित्र स्थान है जूता निकाल डाल पगसे और मिसर नरेशसे आज्ञा माग यहूदियोंको अन्यत्र लेजा इस कामके लिये मै तेरेको चूनाहू " पीछे मूसा बादशाहको आनेकानेक चमत्कार खोदाके कृपासे देखाकर अपने भाई " आआरोने " सहित मिशरी प्रजाको साथ लेकर लाल समुद्र पार होकर अरबस्तान होकर तीन महिनेमे सिनाई पर्वतपर आया, वहा पर सबको ठहराकर और उनके रक्षामे अपने भाई " आआरोने " छोड़ आप खोदाके पास पवित्र कायदा (नियम) लेने गया.

यहां यहूदियोने बलवा मचाकर मूसाके भाईसे पूछा कि हमय यहांपरक्यों लाया है जब " आआरोने " से कुछ उत्तर देते न बना तब वे मिशर देशसे लाये द्रव्यको गलाकर सोनेका बछड़ा बनाकर पूजने लगे पूजामे केवल आधे मनुष्य सामिल हुये जब पूजाकर वत्सके चारो तरफ पूज्य देवताकी परिक्रमा भजन स्तुती करते थे इतनेहीमें ४० दिनमे मूसा दो पथ्थरोमे खोदाकी आज्ञा मुद्रित करा कर आया परतु यहा पूजा करते देख दोनो पथ्थर क्रोधकर फेंक दिया, लीवी जातिके मनुष्य जो पूजामे सामिल नहीं थे दोनोका युद्ध भया बहुत मनुष्य मारे गये, मूसा बछडेको चूर चूर करडाला पीछे फिर खुदाके पास गया वहासे ४० दिनमे नियम पत्र पथ्थरमे लेकर आया और यहुदी अपने राज्यको ईश्वरी राज्य मानने लगे, फिर सिनाईसे पालेस्टाईन तरफ गये कई जगे राज्य स्थापन करने लगे परन्तु बहुतसे सरदारोंने मूसाकी हुकूमत अगीकार नहीं किया इसीसे कई जगे वड उठा पछि मूसाके भाई का देहान्त हो गया जिसकी कबर होर पर्वतपर है एक वखत किसी दुर्घटनासे यहूदियोंके लगभग २४००० आदमी मर गये.

जब मूसाके मृत्युको समय नजदीक आया तब अपने अनुयायियोको उत्तम शिक्षण देकर नीवो पहाडके शिखरसे दूर सन् ई० के १४५१ वर्ष पहिले इस असार शंसारका त्याग कर दिया, यहुदी धर्मंमे तोतेरेत, एन-जिल, जव्वुर, यही तीन पुस्तके प्रधान समझी जाती है परन्तु मूसा पेगम्बर केवल एनजील, बनाया ऐसा "बहुतसे यहुदी कहते हैं भारतमे अब बहुत यहूदी है."

क्रिश्चियन मत पेगम्बर ईसा

यहूदी धर्म गुरु " झाक आरी आस " की स्त्री ' इलिझावेथ " से " ज्योन " नामक लड़का हुआ पीछे " जेरुसलेम " नगरसे ६ मील " वेथलेहेम " ग्राममे ता. २५ दिशम्बरको " ईशुक्रिस्ट " का जन्म मेरीमरियम के गर्भसे हुआ मरियम धर्मात्माथी उसका विवाह जोसेफ काष्टकार (वढई) से हुआ था मेरी जोसेफ के सहवास पहिलेहीं गर्भ धारण कियाथा जब जोसेफ इसको व्यभिचारिणी समझकर निकाल देना चाहा तब परमेश्वरके दूतोंने आनकर जोसेफसे कहाकि इसे मत

निकाल जो गर्भ हैं वह परमेश्वरका पुत्र है तब वह अपनी स्त्रीसे विशेष प्यार करने लगा, जब जन्म भया तब उसका नाम जिजि क्रायष्ट अथवा ईशा कहने लगे, जब लोग इस बालकको पेगम्बर कहकर अधिक सन्मान करने लगे तब ज्युडियानाका बादशाह हेरोड येक आज्ञा पत्र प्रकाशित किया जिसमे मुद्रित था कि दो वर्षके भीतर के जितने बालक होवे वे सब कतल किये जावे याह आज्ञापत्रका समाचार पातेही जोसेफ, ईशुक्रिष्ट और उसकी माताको साथ लेकर मिशर देशमे चला गया, जब हेरोड मर गया तब फिर ये लोग अपने देशमे लौट आये.

पिताके साथ ईशुभी वढ़ईका काम करने लगा मा बाप गरीब थे इस लिये ईशुको उत्तम शिक्षण नहीं मिला परन्तु उसकी वृत्ती धर्ममे लगी रहतीथी फिर अनेक मुसीबत और दुर्घटनावोंको पारकर ईशु अपना धर्म प्रचार चालू रक्खा ज्योर्डन नदीके पानीसे स्नान कराकर धर्ममे दाखिल करता था बहुतसे अन्धे लूले लगड़े मनुष्योंको अच्छा किया अनेक पुस्तकोमे अनेक चमत्कारकी बाते लिखी है अन्तमे ईशुक्रिष्ट शत्रुवोंके हाथसे मारा गया कहते हैकि मरते समय पीनेको पानी मागा था परन्तु शत्रुके सिपाहियोने खट्टा रस उसके मुखमे डाल दिया.

ईशुक्रिष्टके प्राण वडी काठिनतासे शरीरसे विसर्जन हुये. क्रिष्टी लोग कहते हैकि वह तीन दिनपीछे जीकर स्वर्गको चला गया. परन्तु यहूदी कहते हैकि तीन दिन पीछे कबर खोदकर क्रिश्चीयन लोग यह बात द्रढ करनेके लिये निकाल ले गये कि वह स्वर्गको चला गया, जीकरके इस मतकी प्रधान गादी इटाली देशके 'रोम' शहरमे है वहाके मुख्य धर्मगुरुको पोप (धर्मका बाप) कहते हैं इसके मुख्य तीन भेद हैं (१) प्रोष्टेष्टट पोपको नहीं मानने वाले, (२) रोमन कैथिल पोपको मानने वाले, (३) ग्रीक, परन्तु ईशुक्रिष्टको तीनो मानते हैं.

इस मतवाले कहते हैकि मूर्तीपूजा वर्णाश्रम तीर्थादि नर्कका साधन है जो ईसुको भजे वही मोक्षका अधिकारी होगा, रोमन कैथिल मतके ईशु तथा उसके माता की मूर्ती बनाकर देवलोमे रखते और पूजते है दूसरे केवळ प्रार्थना करते हैं देवल मेजाकर प्रधान किताब का नाम " बायवल " है उसे कोई ईश्वर कृत कोई इसु कृत मानते है पीछेसे इसमे २५० फाटे होगये है " विश्वासी " भगवाकपडे पहिनकर वेदान्तका अभ्यास करनेवाले 'मुक्तीफौज" एक ईश्वरको माननेवाले सब ईसीमे हैं आपुसमे कुछ मत भेद है ॥

हजरत महंमद मुसल्मानी मत.



अरब देशमे अरबोंकी बहुत जाती बसती है उनमे कुरेश जातिका एक मनुष्य जिस्का नाम " अब्दुल मोतालिब " था मक्केमे रहता था वहां उसने एक कूप खुदवाया, पहिले अरब लोग मंदिर बनवाकर ३६० देवतों की मूर्ती रख कर रोज एक एक मूर्ती की पूजा करतेथे इसी माफिक मंदिर मक्केमे भीथा, और एलोग देवताके प्रशन्नता के लिये नरबलि देतेथे,

" अब्दुल मोतालिब " धनीथा परन्तु उसके कोई संतति नथी इससे उन्होने मंदिर मे प्रार्थना की कि मेरे दस पुत्र होवे तो सबसे छोटे पुत्रको देवताके अर्पण करूं.

ईश्वरी इच्छासे जब उसके १० पुत्र भये तब प्रतिज्ञानुसार दशवे पुत्रको देवतोके प्रशन्नताके लिये मंदिरमे बलिदान करनेके लिये हांथमे तलवार उटायाकि अतरिक्षसे कोई देवता उसका हाथ पकड लिया " अब्दुलमोतालिब " नजूमियो (ज्योतिषियों) से इसका कारन पूंछा तब दैवज्ञोने व्यवस्था दीकि, इसके बदलेमे १०० ऊंट चढ़ादो तब उन्होने वैसाही किया.

एक वखत " थेविसिनिया " का वादशाह मक्का जीतनेकी चढाई की मक्का अरबोका प्रधान तीर्थ था इस लिये मक्कावासीभी युद्ध करनेकी तैयारी की परन्तु किसी रोगसे वादशाहकी २४००० सैन्य मर गई इससे वह पीछा लौट गया अब्दुल मोतालिबके छोटे पुत्रका नाम " अब्दुल्ला " था वह कहीं व्यापारके लिये गया था मार्गमे लौटते समय " मदीना " मे उसका देहान्त हो गया उस समय उसका वय केवल २५ वर्षकाथा.

उसकी स्त्री गर्भवती थी उसीसे महंमद साहेबका सन् ५७० मे जन्म भया. महमदसाहेब गरीब थे मरते समय उनके पिता केवल ४ ऊंट कुछ बकरे और "बरकार" नामका एक दास छोड गये थे. सात वर्षके होनेपर महंमदसाहेबको लेकर उनकी माता मदीनेको गई परन्तु लौटते समय मार्गमे " अबोया " शहरमे माताका देहान्त होगया, महंमद साहेब कुछ पढे लिखे नहीं थे परन्तु उनकी स्मरण शक्ती और बुद्धी असाधारनथी वे बहुत दिन व्यापार कर " खतीजा " नामकी एक धनवान विधवा स्त्रीके संग विवाह किया महंमद साहेबके दो पुत्र हुये " कासिम " और " इब्राहिम " चार लड़कियां हुई जेनब, रुवइया, ओम कोलथाम, और फातमा, उस समय अरबदेशमे यहूदी और क्रिश्चियनोकी मारामारी चल रहीथी.

इतने मेमहंमद साहेब एक घोषणा दिया कि मूर्ती पूजासे कुछ लाभ नहीं है एक खोदा और मेरी उपासना करो मैं खुदाका प्रमाणपत्र लेकर आया हूं प्रथम अपनी स्त्री तथा काकाको शिष्य बनाकर कई आदमियोंको इस नये मजहब (धर्म) मे दाखिल किया महंमद साहेब किसी विशेष दुर्घटनासे डरकर ता. १६ जुलई सन् ६२२ को गुरुवारकी रातको मदीनाकी यात्रा की तभीसे हिजरी सन् जारी हुआ, महंमद साहेब कईराजोंको धर्म ग्रहण करने और सैन्याके मददके लिये लिखा परन्तु एक दोके शिवाय न कोई मदद दिया न धर्म ग्रहण किया, ईरानका नरेश उसका आज्ञापत्र फाड़कर फेक दिया इसमें महंमद साहेब ईरानियोपर बेहद चिढ़ा. और घोर युद्ध हुआ महंमद साहेबका बहुत समय लड़ाईमे बीता और देहान्तभी युद्धमेहीं भया. अन्तमे इस मतमे दो फांटा पड़ गये " शिया " और " सुन्नी " महंमद जो धर्मोपदेश करते थे उन्ही वाक्योंको संग्रह कर, एक किताब बनी जिस्का नाम " कुरान " पड़ा कोई कोई क्रिश्चियनोके बायबलकी तरह कुरान ईश्वर कृत कहते है.

मक्केमे एक मन्दिर है जिस्मे प्रथम ३६० मूर्तीथी पछिसे महमद साहेब तोड़ डाला उसी तरफ मुख करके

निमाज पढ़ते है मंदिरका नाम " कावतुल्ला " है वहां एक कूप है और एक काला पथ्थर है जो मुसलमान मक्काकी हज (यात्रा) करने जाते है वे उस कूपके जलसे स्नान कर मंदिरकी सात प्रदक्षिणा कर काले पथ्थरको चूमते है उस कूपका जल ले आते और लोगोंको प्रसाद तरीके देते व देशावर अपने मित्र व संबन्धियोंको भेजते है कोई कोई हिन्दु कहते हैकि वहा " मक्केश्वर महादेव " हैं परन्तु मै अपने एक मुसलमान मित्रसे पूछा जो हज्ज करके आयाथा वेह महादेवकी बात निर्मूल कहाथा, इसमे " खोजा वहोरा " (महंमदको नहीं माननेवाले) कहते हैकि पूनर्जन्म होता और ईश्वर अवतार लेता हैं वहोरा लोग अपने धर्म गुरुका असाधारण सन्मान करते है और " मुल्ला साहेब " कहते हैं इनकी मसाजिद मुसलमानोसे भिन्न है और इनकी प्रधान तीर्थ यात्रा " कर्बला " है.

मुसलमान लोग मंत्र यंत्रको मानते है और कबर व दरगाहमे फूल धूपादिसे पूजा कर नारियल फोड़ते हैं और रोजादि इत्यादि वृतभी करते है इनमे जो साधु (फकीर) होते वे भिक्षा वृत्तीसे निरवाह करते है इस मतमे व्याज खानेकी मना है ये लोग दाढी रखते परन्तु मूछ छोटी रखते उसको कटवा डालते हैं मद्य-

पान धूम पानकी मनाई है, यदि किसीको मुसल्मान बनाना होवे तो कलमा इस तरह पढाते है " अशदहो अन् लाहि लाहा इल्लला मोह मदुन रशूलुल्ला, "(अर्थ) हम मानते हैकि परमेश्वरके शिवाय दूसरा देवता कोई नहीं हैं, महंमद साहेब उनके प्रतिनिधि है, इस मतमे ईश्वरके अल्ला, हकताला, मौला, खुदा, करीम, और वाहेद, नाम हैं सुभ कार्यके समय, " बिशमिल्ला, रहिमान्, रहीम" कहते है (अर्थ) परमदयालु परमेश्वरको सब अर्पण होवे,

इसमे शेख, शैयद, मुगल, पठान, सैतानादि कई जाति हैं, परंतु सैयद उत्तम समझे जाते है. कोई कोई सैयद ब्राह्मणके हांथका जल तथा पानतक नहीं खाते और पांच वखत निवाज पढ़ते है ईद, बकरीद, सुब-रात, मोहरम, रमजान, पवित्र दिन समझे जाते है.

पंचमकारि मत.

मद्रास प्रान्तके कुर्ग जिलेमे सन ८८१ मे एक " पार्वती अम्मा " नामकी स्त्रीद्वारा इस मतकी नेव

पटी इस मतवाले भैरवी चक्र पूजते है और " पचमकार प्रधान मानते है जैसेकि मद्यपीना, मांसखाना, मथुन करना, मछलीखाना, मुद्रा अर्थात भगलिंगके सदृस आकार पूरी वड़ा बनाकर खाना येही पच मकार मुख्य मानते हैं इनका मत गुप्त हैं जब " भैरवीचक्र " सेअलग होतेहै तब शिवादि की पूजा और वर्णाश्रम मानते है.

फासी मत

इस मतके नियत करनेवालेका ठीक नाम स्थानादि हमे नहीं विदित भया परन्तु इसमतमे हिन्दू मुसलमान दोनो शामिल थे इसमे कुछ सदेह नहीं है इसमतमे सबसे प्रसिद्ध अमीर अली हुये उनके समयमे इस मतका बहुत प्रचार था इसमतके 'मुखी' सैकड़ो मनुष्योंके साथ तम्बू कनात डका छडी पालकी शिका इत्यादि राजसी ठाटमे फिरतेथे और दिल्लीसे निजाम राज्यतक दौरा करतेथे और रस्ता चलनेवालेको लूट लेतेथे और अमीर अली एक वस्त्रका टुकड़ा मंत्रितकरके

पान धूम पानकी मनाई है, यदि किसीको मुसल्मान बनाना होवे तो कलमा इस तरह पढ़ाते है " अश्हदहो अन् लाहि लाहा इल्लला मोह मदुन रशूलुल्ला, "(अर्थ) हम मानते हैंकि परमेश्वरके शिवाय दूसरा देवता कोई नहीं हैं, महंमद साहेब उनके प्रतिनिधि है, इस मतमे ईश्वरके अल्ला, हक्कताला, मौला, खुदा, करीम, और वाहेद, नाम हैं शुभ कार्यके समय, " बिश्मिल्ला, रहिमान्, रहीम" कहते है (अर्थ) परमदयालु परमेश्वरको सब अर्पण होवे,

इसमे शेख, शैयद. मुगल, पठान, सैतानादि कई जाति हैं, परंतु सैयद उतम समझे जाते है. कोई कोई सैयद ब्राह्मणके हांथका जल तथा पानतक नहीं खाते और पांच वखत निवाज पढ़ते है ईद, बकरीद, सुब-रात, मोहरम, रमजान, पवित्र दिन समझे जाते है.

पंचमकारि मत.

मद्रास प्रान्तके कुर्ग जिलेमे सन १८८१ मे एक " पार्वती अम्मा " नामकी स्त्रीद्वारा इस मतकी नव

पटी इस मतवाले भैरवी चक्र पूजते है और " पचमकार प्रधान मानते है जैसेकि मद्यपीना, मांसखाना, मथुन करना, मछलीखाना, मुद्रा अर्थात भगलिंगके सद्रस आकार पूडी वडा बनाकर खाना येही पंच मकार मुख्य मानते हैं इनका मत गुप्त है जब " भैरवीचक्र " सेअलग होतेहै तब शिवादि की पूजा और वर्णाश्रम मानते है.

फासी मत

इस मतके नियत करनेवालेका ठीक नाम स्थानादि हमे नहीं विदित भया परन्तु इसमतमे हिन्दू मुसलमान दोनो शामिल थे इसमे कुछ सदेह नहीं है इसमतमे सबसे प्रसिद्ध अमीर अली हुये उनके समयमे इस मतका बहुत प्रचार था इसमतके 'मुखी' सैकडो मनुष्योंके साथ तम्बू कनात डका छडी पालकी शिका इत्यादि राजसी ठाटसे फिरतेथे और दिल्लीसे निजाम राज्यतक दौरा करतेथे और रस्ता चलनेवालेको लूट लेतेथे और अमीर अली एक वस्त्रका टुकड़ा मंत्रितकरके

देताथा और कहताथा कि इसको गलेमे फासी लगाकर मरजानेसे महाकाली प्रसन्न होकर मोक्ष देती है मरनेके पहिले अपना पैसा होवे उसमेसे आधा अमीर अली लेताथा औरभी उसका मंत्रित वस्त्र लेकर कई मनुष्य फिरतेथे और प्राप्त द्रव्यसे चतुर्थांश अमीर साहेबको देतेथे आदमियोंको मार कर खाडा मे १०—१२ मृतकों को संगही डालकर ऊपरसे मिट्टी पथ्थर डाल देतेथे कुदारी फावड़ा सहित खोदनेवाले नौकर रहतेथे.

जब अगरेज महाराज अमीर अली को पकड़ा तब उन्होने कहाथा कि आजतकमे ७५० मनुष्योका वध किया है परन्तु थोड़े दिन अभी नही पकडाता तो १००० पूरा करता इस विषयमे अमीर अलीकी एक पुस्तक इग्रेजी गुजराती मे छपी है उसमे विस्तार सहित वर्णन है.

भाभाराम मत.

यह मत मतिया संप्रदाय अन्तरगत है गुजरात प्रदेशके कुछ भागोंमे है ए लोग साकार उपासना करते हैं और भजन प्रधान मानते है परन्तु इस मतका

प्रचार वहुत कम है सुनते हैकि वसो (गुजरात) मे इस मतका एक अच्छा मदांर है. इनका एक मंदीर वसोके पास. रूणमे है वहाके वर्तमान महंत रणछोड़का है इस मतमे पाटीदार वहुत सामिल है.

गहरगंभीर मत.

इस मनके संस्थापक एक पंजावी महात्मा थे पंजाव आदिके रोड गाममे इस मतका कुछ प्रचार है इसके नियम कवीर और नानकसे वहुत कुछ मिलते हैं.

आपा मत.

वहिरेला (वागवंकी अवध) मे सौ वर्षपर लगभग सन् १८१० मे अचलदास नामके एक साधु हुए. उन्होंने इस मतको स्थापन किया वे मूर्ती पूजा नहीं मानते कंठी वाधते है और तिलक लगाते है इस धर्मवाले मंदीर व मठ नही वनाते सर्वदा देशान्तरमे फिरकर सत्संगका उपदेश करते है.

फ्रिमेशन मत.

इस मतका प्रचार इंगालिस्तान आदि देशोंमे है और वहुतसे नरपति, देशपति, करोड़पति इसमे सामिल हैं इस मतवाले कुछ प्रगट धर्मचिन्ह नहीं करते परन्तु सुनते हैकि एक दूसरेसे मिलते शमय हाथ मिलानेपर कुछ ऐसा संकेत करते हैकि जिससे एक दूसरेको पहिचान लेता हैकि यह फ्रिमेशन है इस मजहवके लोग धर्मकी बात कीसीसे नहीं कहते परन्तु भ्रातभाव इस धर्मके माफिक दुनियाके किसी धर्ममे नहीं है. ऐसा लोग कहते है.

चरणदासी मत.

श्री चरणदासजी नामके एक साधु सर्वशास्त्रविसारद हो गये है वे व्यास पुत्र शुकदेवजीके अवतार माने जाते है इस मतवालोंके मंदीर हरिद्वार, दिल्ली आदिमे है साधु कोई रंगा कोई सफेद वस्त्र पहिरते है और कंठी बांधते और प्रतिमा पूजते है इस मतके साधु सात पंडित और परोपकारी होते हैं.

बाबासिंहां साहेब मत.

इस मतका एक बड़ा दरबार (मंदीर) पंजाब प्रान्तके पटियाला शहरमे है जिसतरे गुलाबदासी. गरीबदासी. आदि नानक साहेबके मतसे सबन्ध रखते हैं उसी माफिक यहभी है पटियालाके अध्यक्ष अखाडेमे उस प्रान्तके मनुष्योंकी बड़ी पूज्यबुद्धी है वर्तमान महंतश्री चेतनदासजी बड़ेही विद्वान और सज्जन पुरुष है. अध्यक्ष अखाड़ा श्रीमहंत मगनीरामजी माहाराजके नामसे प्रसिद्ध है.

निरात मत.

निरात नामके एक पाटीदारद्वारा इस मतकी स्थापना भई है इस मतके लोग गादी पूजते है भजन गाते है और कठी बाधते है इस मतके प्रभावसे बहुतसे कोली आदिक सुधर गये है निरात भक्तका दर पुनम तुलसी लेके डाकोर श्रीरणछोडजी माहाराजके दर्शनके

वास्ते जानेका नियम था. एक वख्त कीसी मुसलमानने कहाकि " ईश्वर तो तेरे पासमे है तूं हांथमे तुलसी लेके कीसको ढूढता है " तब उसे ज्ञान हुआ और उस मुसलमानकु गुरू मानके प्रणाण किया. तबसे निरात कामन वेदान्तपर लगा. और यह मत चलाया. निरात ई. स १८४३मे गुजर गये. बाुसाहेब गायकवाड़ मुख्य शिष्य थे उन्होने इस मतकी बहुत उन्नतीकी है.

कूड़ा पन्थी मत.

इस मतकी गादी सीन्ध सिकारपुरमे है इस मतके लोग कठी बांधते है रामानन्दी तिलक करते है मूर्ती पूजा मानते है परंतु देवीकी उपाशना जास्ती करते हैं और एकही कूड़ेमे सब पदार्थ एकठेकर भोजन करनेसे इसे कूडा पन्थी कहते हैं परंतु मतका प्रचार कम है.

बाउल मत.

इस मतके लोग कंठी बांधते है भगवानके भजन गाते है ईश्वरका भजन करना इनका मुख्य सिद्धान्त है

मूर्ती पूजाकी जगह केवल गादी पूजते है इस मतका प्रचार बंगालमे बहुत है और बहुतसे भद्र पुरुष इनमे सामिल है परन्तु धर्मोपदेशक नहीं होनेसे धर्मकी उन्नति नहीं है इस मतके भजन निर्गुण होते है इस मतके तिलक गौड़ संप्रदायसे मिलते है बहुत लोगोका अनुमान हैकि गौड़ संप्रदायके जो ६४ भेद है उन्हींमेसे एक यहभी है.

गरुड़ मत.

इस मतमे अत्यज लोग सामिल है मंदिर बनाकर रामचद्रजीकी मूर्ती विराजमान करते है परन्तु भजन निर्गुण गाते है कोई कोई तुलसीका वृक्ष लगाते है इस मतमे मुरदे डाटते है परन्तु कोई धनी होवे तो जलाते है कोई कोई कपालमे चंदन लगाते है.

देवसमाज.

इस समाजमे सभी लोग दाखिल होते है इश्वरका भजन करना इनका मुख्य सिद्धान्त है पजाबमे बहुतसे

भद्र पुरुष सामिल हैं समाजका वार्षिक उत्सव बहुतहीं उत्तम करते है मतके नियम उत्तम हैं.

पुराणिक मत.

इस मतका प्रचार पूर्व हिन्दुस्थानमे है पुराणिक लोग भागवतादिकी कथा वाचते हैं वहीं लोग मंत्रका उपदेश करके गुरु बनते है परन्तु उनकी खास कोई गादी या मत नहीं होता परन्तु उपाशना मत्र विष्णुका बताते हैं और उनका चेला फिरसे कहीं चेला बनजावें तो वे गुरू कुछ हर्ष सोक नहीं मानते तोभी गुरुके घर वर्षमे कुछ देना पड़ता हैं.

नायाकाका मत.

इनकी गादी सिनोरके पास, " कूकस " मे है. भादो सुद २ को मेला होता है कबरकी पूजा करते हैं

स्थानको दरबार कहते है इसका अधिकारी " वेमार " मे रहता है यह पिरानाकी साखा है.

मतप्रकरणं समाप्तम् ॥

ॐसहनाववतु सहनौ भुनक्त सह वीर्य्यं करवा घहै तेजास्विना वधीत मस्तुमाविद्धिषा वहै॥१॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिःॐ तत्सत् ॥

वेद और पुराण तथा शास्त्रोंकी संज्ञा.

वेद ४ है–ऋगवेद शाखा (८२२) यजुर्वेद शाखा (८६) शामवेद शाखा (१०००) अथर्ववेद शाखा (९)

उपवेद ४ है–ऋगवेदका (वैद्यक)यजुर्वेदका (शस्त्र विद्या) शामवेदका (गानाविद्या) अथर्वणवेदका (शिल्पविद्या)

वेदके अंग ६ है—शिक्षा,—कल्प,—व्याकरण,—निरुक्त
छंद,—योतिष, शिक्षामे वेदका उच्चार,
कल्पमे कर्म करनेकी रीत, व्याकरणमे
शब्दसिद्धि और सुद्धताका वर्णन,
निरुक्तमे वेदके कठिन शब्दोंके अर्थ,
छदमे अक्षर और मात्राका वर्णन,
और योतिषमे गणित.

शास्त्र छ है—सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा,
न्याय, और वैषिक.

पुराण १८ है—ब्रह्मपुराण, १००००, पाद्मपुराण,
५५०००, विष्णुपुराण २३०००,
शिवपुराण २४०००, भागवतपुराण
१८०००, नारदपुराण २५०००,
मारकंडपुराण ९०००, अग्निपुराण
१५४००, भविष्यपुराण १४५००
ब्रह्मवैवर्तपुराण १८०००, लिगपुराण
१७०००, वराहपुराण २४०००,
स्कन्दपुराण ८१०००, वामनपुराण
१००००, कूर्मपुराण १७०००,
मत्स्यपुराण १४०००, गरुड़पुराण

१९०००, ब्रह्मांडपुराण १२४००, इसके सिवाय वायुपुराण, ब्रहन्नार्दीय-पुराण, नृसिहपुराण, कल्कीपुराण, सौर-पुराण, साम्बपुराण, जैमिनीपुराणादि उपपुराण है.

स्मृति २० है—मनुस्मृति, अत्रिस्मृति, विष्णुस्मृति. हारीतस्मृति, औसनसस्मृति, अंगिरा-स्मृति, यमस्मृति, आपस्तंबस्मृति, संवर्तस्मृति, कात्यायनस्मृति, बृहस्पति-स्मृति, परासरस्मृति, व्यासस्मृति, शंख-स्मृति, लिखितस्मृति, दक्षस्मृति, गौतम स्मृति, शातातपस्मृति, वशिष्ठस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, तथा महाभारत, रामायण, सबही, माननीय ग्रन्थ हैं.

विष्णु भगवानके २४ अवतार श्रीमद्भागवत, प्रथम-स्कन्ध तिसरा अध्यायमे है.

सनत्कुमार—वराह—यज्ञ—हयग्रीव—नरनारायण—कपि-लदेव—दत्तात्रय—ऋषभ—पृथु- मत्स्य कच्छ—धन्वतरि मोहिनी—नृसिंह—वामन—परशुराम—व्यास—रामचन्द्र—कृष्ण—नारद—हरि—हंस—बुद्ध—कल्की.

वेदके अंग ६ हैं—शिक्षा,—कल्प,——व्याकरण,——निरुक्त
छंद,—ज्योतिष, शिक्षामे वेदका उच्चार,
कल्पमे कर्म करनेकी रीत, व्याकरणमे
शब्दसिद्धि और सुद्धताका वर्णन,
निरुक्तमे वेदके कठिन शब्दोंके अर्थ,
छंदमे अक्षर और मात्राका वर्णन,
और ज्योतिषमे गणित.

शास्त्र छ हैं—सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा,
न्याय, और वैषिक.

पुराण १८ हैं—ब्रह्मपुराण, १००००, पाद्मपुराण,
५५०००, विष्णुपुराण २३०००,
शिवपुराण २४०००, भागवतपुराण
१८०००, नारदपुराण २५०००,
मारकंडपुराण ९०००, अग्निपुराण
१५४००, भविष्यपुराण १४५००
ब्रह्मवैवर्तपुराण १८०००, लिगपुराण
१७०००, वराहपुराण २४०००,
स्कन्दपुराण ८१०००, वामनपुराण
१००००, कूर्मपुराण १७०००,
मत्स्यपुराण १४०००, गरुड़पुराण

१९०००, ब्रह्मांडपुराण १२४००, इसके सिवाय वायुपुराण, ब्रहन्नार्दीय-पुराण, नृसिंहपुराण, कल्कीपुराण, सौर-पुराण, सांबपुराण, जैमिनीपुराणादि उपपुराण है.

स्मृति २० है—मनुस्मृति, अत्रिस्मृति, विष्णुस्मृति, हारीतस्मृति, औसनशस्मृति, अंगिरा-स्मृति, यमस्मृति, आपस्तवस्मृति, सवर्तस्मृति, कात्यायनस्मृति, बृहस्पति-स्मृति, परासरस्मृति, व्यासस्मृति, शंख-स्मृति, लिखितस्मृति, दक्षस्मृति, गौतम स्मृति, शातातपस्मृति, वशिष्ठस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, तथा महाभारत, रामायण, सबही, माननीय ग्रन्थ है.

विष्णु भगवानके २४ अवतार श्रीमद्भागवत, प्रथम-स्कन्ध तिसरा अध्यायमे है.

सनत्कुमार—वराह—यज्ञ—हयग्रीव—नरनारायण—कपि-लदेव—दत्तात्रय—ऋषभ—पृथु—मत्स्य कच्छ—धन्वंतरि मोहिनी—नृसिंह—वामन—परशुराम—व्यास—रामचन्द्र—कृष्ण—नारद—हरि—हंस—बुद्ध—कल्की.

शिवके १२ योतिर्लिंग हैं शिवपुरानज्ञानसंहिता ३८ अध्याय.

सौराष्ट्र देशमे सोमनाथ, श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन उज्जैणमे महाकाल, ओंकारमे अमरेश्वर, हिमालयमे केदार, डाकिनीमे भीमशंकर, काशीमे विश्वेश, गोदावरीके तटमे त्र्यंबक, चिताभूमिमे वैजनाथ, दारुका वनमे नागेश, सेतुबन्धमे रामेश्वर, और शिवालयमे घुस्मेश. पुरी सात है अयोध्या, मथुरा, माया, (हरद्वार) कांशी, कांची, उज्जैन द्वारिका, चार धाम ये है बद्रीनाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ (कोई कोई रामेश्वर कहते है) और द्वारिका, चार संप्रदाये है, निम्बार्क, माध्व, विष्णुस्वामी, रामानुज,

स्वयंविष्णु ये है–पुस्कर, रंगजी, वेंकटेशजी, बद्रीनाथ, वाराह, मुक्तीनारायण शालिग्राम,

---

वैदिक सिद्धान्त.

---

१ ईश्वरके अनन्त नाम है. वह निर्विकार सर्व शक्तीमान, निराकार, नानाविध अवतार धारन कर

भक्तोका कष्ट दूर करने वाला, जिसकी महिमा वेदादि शास्त्रोसे जानी जाती है इसका भेद मनुष्य नही जान शक्के,

२ वेद मन्त्र और ब्राह्मण दोनो भागोंका नाम वेद है दोनो अंग अंगी होनेसे. निर्भ्रान्त, प्रमाण है क्योंकी इन ग्रन्थोसे एक अलग करें तो भाग कहे जाते है जैसे मन्त्र भाग ब्राह्मण भाग इस कारन दोनोका नाम वेद दोनोही स्वतः प्रमाण, है

३ धर्म जिस्की वेदादि शास्त्रोंमे विधि हैं, वह धर्म और जिस्का निषेध है वह अधर्म है जो मनुष्योंने अपनी वोरसे कल्पना किया है वह धर्म नहीं.

४ इस सृष्टीका मूल कारन ईश्वर है वह अपनी अनन्त सामर्थसे इसे रचा है.

५ मुक्ती सपूर्ण कर्म और वासनावोंके क्षय होनेसे होती है जिस्को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता,

६ मुक्तिके साधन, वेदान्त विचार. उपासना, ध्यान योगाभ्यासादि.

७ अर्थ जो धर्मानुष्ठानसे उपार्जन किया जाय. वह अर्थ इसके विपरीत अनर्थ है.

८ वर्ण जन्मसे होता है कर्मसे नहीं.

९ ईश्वरकी उपासना प्रतिमामे करनी यह प्रबल वैदिक सिद्धान्त है.

१० पुराण वह ग्रन्थ है जिन्हे भगवान व्यासजी संग्रह कर भागवतादि नामसे प्रचलित किया है.

११ मृतकोके लिये दान श्राद्धादि करना, प्रबल वैदिक सिद्धान्त है.

१२ आप्त उसे कहते है जिस्के वाक्यमें सन्देह न होवे और न कभी अपने वाक्य बदलना पड़े.

१३ ईश्वर स्वतंत्र और जीव परतंत्र है.

१४ परमेश्वरका गुण कीर्तन करना स्तुती है.

१५ ईश्वरसे कल्यानकी इच्छा करना, प्रार्थना है.

१६ मूर्तीमे अर्चन वंदन करना यही उपासना है.

१७ श्राद्ध जो मृतकोके लिये किया जाता है.

१८ तप जो वनमे कुटी बनाकर जितेंद्रिय होकर ईश्वरके प्रसन्नताके लिये किया जाय.

कलियुकके भविष्य राजा, भविष्य पुराण १४ अध्याय.

कुरुवंशी, इक्ष्वाकुवंश राजा, और मागधवंशके राजा कलियुगमे एक हजार वर्ष राज्य करेगें.	१०००
प्रद्योत वंशी ५ राजा.	१३८
शिशुनागादि १० राजा,	३६०
शूद्रके गर्भसे उत्पन्न, नन्दराजा, और उसके ८ पुत्र.	१००
चन्द्र गुप्तादि मौर्य वंशी १० राजा,	१३७
शुग जातिके १० राजा.	११०
कण्ववंशी राजा,	३४५
इनके सेवक शूद्र आन्ध्रवंशी ३० राजा,	४५.६
आभीर ७ राजा	१००
गर्दभी नामक १० राजा	९८
कक नामक १६ राजा.	२००
उज्जयनका विक्रमादित्य.	१३५
शालि वाहन,	१००

८ यवन १६ तुरुष्क.	३५०
गुरंड नामक १० राजा,	११६
मौन नामक ११ राजा,	३००
भूतनन्दादि १० राजा	१०५
वहु खंड राज्य	४१२
गौर मुख नामक राजा,	१८०
हजारों राजा	३१०
विजयके वंसमे	५५०
नागार्जुन वशमे	१०००
बलिराजाके घरानेमे	११००

इसके वाद शूद्र म्लेंछ राजा होगें सत्र जंगत म्लेछ मय हो जायगा.

भारतीय नरपतियोंकी नामावली

अनुक्रमांक.	राजाका नाम.	वार्षिक उतपन्न	तोपांका मान.
१	निजाम हैदराबाद.	४०००००००	२१
२	बड़ोदा नरेश.	१९३०००००	२१
३	महीसूर नरेश.	१०२०००००	२१
४	इदोर नरेश.	७६०००००	२१
५	काश्मीर नरेश.	८०७६००००	२१
६	ग्वालियर नरेश.	१३७७९२३२	२१
७	ट्रावनकोर नरेश.	७८४८०००	२१
८	बड़ा उदयपुर नरेश.	३७५००००	२१
९	कोलापुर नरेश.	३३०६०९०	१९
१०	सवाई जयपुर नरेश.	६१०००००	१९
११	भूपाल अधीश्वरी.	२८०००००	१९
१२	कच्छनरेश	१८०४०००	१७
१३	किरोली नरेश.	५०००००	१७
१४	कोचीन नरेश.	१३०८५१४	१७
१५	कोटा नरेश.	२५०००००	१७
१६	टोंक नव्वाब.	१४०००००	१७
१७	पटियाला नरेश.	५६४०[illegible]५२	१७
१८	बूंदी नरेश.	८०००००	१७

१९	भावलपुर नव्वाब.	१६७०८००	१७
२०	जोधपुर नरेश.	४३०००-०	१७
२१	रेवा नरेश.	२८०००००	१७
२२	बीकानेर नरेश.	१७०००००	१७
२३	अलवर नरेश.	२३२४३१०	१५
२४	ईडर नरेश.	६०००००	१५
२५	ओर्छा नरेश.	९०००००	१५
२६	किशनगढ नरेश.	३०००००	१५
२७	खैरपूर अधीश.	७२९०००	१५
२८	जैसलमेर नरेश.	१५८००००	१५
२९	झालावाड नरेश.	१५०००००	१५
३०	डूंगरपुर नरेश.	१४५६६९	१५
३१	दतिया नरेश.	१००००००	१५
३२	देवास नरेश.	६७५०००	१५
३३	धार नरेश.	८०००००	१५
३४	धौलपुर नरेश.	९५९,०००	१५
३५	प्रतापगढ नरेश.	२६२०००	१५
३६	भरतपुर नरेश.	२७०००००	१५
३७	रामपुर नव्वाब.	३००००००	१५
३८	बांसवाडा नरेश.	२०४११०	१५
३९	शिरोही नरेश	२२३०००	१५
४०	शिक्किम नरेश	४२८६१	१५
४१	कूच बिहार नरेश.	१३३७४७२	१३
४२	जावरा नव्वाब	९६००००	१३

४३	जीन्द नरेश	७०००००	१३
४४	टिपारा नरेश.	९१२४६५	१३
४५	नाभानरेश	७००००००	१३
४६	बनारस(रामनगर)नरेश	९५१७११	१३
४७	अजयगढ नरेश.	२२५०००	११
४८	कपूरथला नरेश.	२१२५०००	११
४९	बिलासपुर(कहलूर)नरेश	१०००००	११
५०	खम्भात नव्वाब.	६०४५०४	११
५१	गढवाल (टिहरी) नरेश	१७५५०९	११
५२	चरखारी नरेश.	६०००००	११
५३	चाम्बा नरेश.	३५००००	११
५४	छतरपुर नरेश.	३०००००	११
५५	जूनागढ नव्वाब.	२४०००००	११
५६	झाबुआ नरेश.	१२८०००	११
५७	धांगधरा नरेश.	७८००००	११
५८	नरसिंहगढ नरेश.	४०००००	११
५९	जामनगर नरेश.	२४०००००	११
६०	पन्ना नरेश.	५०००००	११
६१	पालनपुर दिवान	६५००००	११
६२	[illegible] कोटा नरेश.	७०००००	११
६३	पोर बन्दर नरेश.	५५००००	११
६४	फरीदकोट नरेश.	३०००००	११
६५	बावनी नरेश.	१०००००	११
६६	बिजावर नरेश.	२२५०००	११

६७	भावनगर नरेश.	३५०००००	११
६८	मणीपुर नरेश.	९००००	११
६९	मंडी नरेश.	४०६०७५	११
७०	मलेर कोटला नव्वाब.	२८४०००	११
७१	मोरवी नरेश	१००००००	११
७२	रतलाम नरेश.	१३०००००	११
७३	राधनपुर नव्वाब.	७०००००	११
७४	राजगढ नरेश	३५००००	११
७५	राजपीपला (नादोद) नरेश	७६००००	११
७६	समथर नरेश.	४०००००	११
७७	सिरमौर नरेश.	२१००००	११
७८	सीतामऊ नरेश.	१२६०००	११
७९	सावन्त वाडी नरेश.	४२००००	११
८०	शैलाना नरेश.	१५००००	११
८१	अलीराजपुर नरेश.	८५०००	९
८२	कारन्द नरेश	१२२४८४	९
८३	खिलर्चीपुर नरेश.	२५००००	९
८४	गोंडल नरेश.	१२८००००	९
८५	छोटा उदयपुर नरेश.	२०५५००	९
८६	जर्जीरा नव्वाब.	४७०५०७	९
८७	धरमपुर नरेश.	३७००००	९
८८	ध्रोल नरेश.	२०००००	९
८९	नागोद नरेश.	१५००००	९

९०	पालीटाना नरेश.	५०८०००	९
९१	वरौधा नरेश.	४९००००	९
९२	वारिया नरेश.	२६९४८०	९
९३	मैहर नरेश.	७४०००	९
९४	राजकोट नरेश	४०८०००	९
९५	लिमडी नरेश	२५००८०	९
९६	लूनावाडा नरेश.	२२१२००	९
९७	वढवान नरेश.	४२५०८०	९
९८	वढवानी नरेश	२१८०००	९
९९	वालासिनोर नवाव.	१९०८००	९
१००	वाकानेर नरेश.	२३१०००	९
१०१	वासदा नरेश.	३३६९५९	९
१०२	सचीन नवाव.	२०२९८८	९
१०३	सुकेत नरेश.	१०००८०	९
१०४	सूथ नरेश.	११७७००	९

संधिः सर्व महीभुजां विजयिना यस्तु प्रमोदः सदा ।
सन्तः सन्तु निरापदः सुकृतिनां कीर्तिश्चिरं वर्धताम् ॥
नीतिर्वार विलासिनीव सततं वक्षः स्थले संस्थिता ।
चक्रं कुरुवतु मन्त्रिणा महरहर्भूयान्महानुत्सवः ॥

विरक्त साधुओंका हक्क.

---

१. वेस्ट, और वुलर, का हिन्दु लो डायजेस्ट तीसरी आवृती प्रथम, वाल्युम, पृष्ट ५९४ महत, अपने शिष्योमेसे जिसको प्रशन्नकरे, वहीवारिस होता है और गुरुके मृतक क्रिया करनेका अधिकारी होता है, और दुसरे महत, उसको कबूल करते हे परन्तु महत जो मृयु पहिले कोईको प्रशन्न ना किया होय तो मृत्यु होनेपर आस, पास, के महत इकट्ठे होकर मृतक महतके चेलोनेसे एकको प्रशन्न करते है, और वही गुरुके मृतक क्रियाका अधिकारी और मिलकतका वारिस होता हे.

२. परन्तु महंतके जो कोई चेला नहोय, तो गुरु भाई अथवा साधकचेलाको प्रशन्न करते है गेदुपुरी, विरुद्ध चतरपुरी, इ. लो रि. ९ इलाहाबाद १ इसका फैसला ऐसा हैकि, चेला ही गादीमे बैठ सकता हे. भगवानरामानुजदास, रामप्रपन्नरामानुजदास, इ. लो. रि. २२ कलकत्ता पृष्ट ५४३ इसका फैसला इस तरे हे